ओ३म्

एक प्रति मूल्य 12/-

हिन्दी मासिक

जनज्ञान

दिसम्बर २००६ — वर्षः४५ अंकः८ — मार्गशीर्ष–पौष २०६६

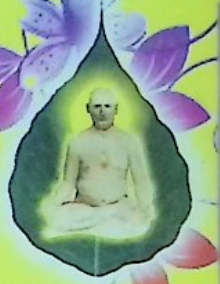

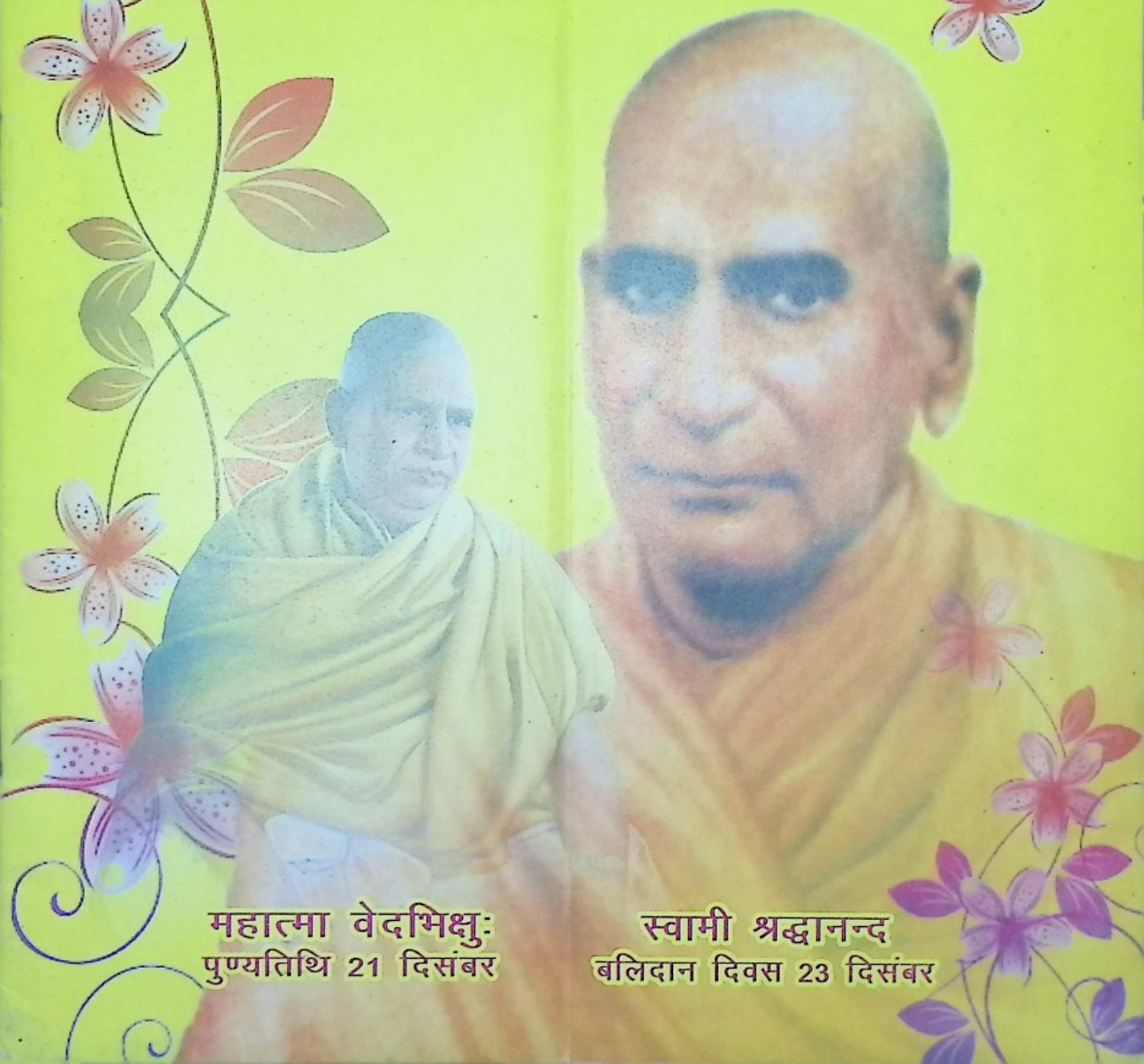

महात्मा वेदभिक्षुः
पुण्यतिथि 21 दिसंबर

स्वामी श्रद्धानन्द
बलिदान दिवस 23 दिसंबर

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान!

कम से कम एक और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान मासिक' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमे से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज्ञान की विशेषता है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठपोषण का।
- यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का।
- यह अभियान है अपने बिछुड़े बंधुओं को पुनः साथ लाने का।
- यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- यह अभियान है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोष को गुंजाने का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- अपने मित्रों, परिजनों मे कम से कम एक और जनज्ञान का सदस्य बनाइए।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुंचे जनज्ञान।
- सामग्री प्रकाशन मे आपके सुझाव का होगा स्वागत। क्योंकि आप हमारे परिजन है, नहीं है अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क ११०/- रुपये है।

–सम्पादक

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

1. जनज्ञान के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें (सदस्य संख्या : जनज्ञान के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।)
2. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भी भेज दिया जाता है।
4. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य बारह रुपये, वार्षिक शुल्क 110 रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना जवाबी पोस्टकार्ड द्वारा दी जाती है। कृपया पोस्टकार्ड पर उत्तर अवश्य दें।
6. आगामी वर्ष के लिए शुल्क मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा दिल्ली के किसी भी बैंक के चैक द्वारा भेज सकते हैं। शुल्क प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी.पी. द्वारा भेजा जाता है।
7. **वी.पी. में पच्चीस रुपये डाक व्यय अतिरिक्त लगता है जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्था को होता है।** अतः कृपया सूचना मिलते ही धन तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

–सम्पादक

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद
ऋक् यजु साम अथर्व

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

जनज्ञान प्रकाशन
नई दिल्ली - 5

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

सम्पर्क-कार्यालय
२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ४१००४७४१, ९९६८५२३५२०

मुख्यालय
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
निकट केशवनगर बसस्टैन्ड
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-११००३६
मोबाइल : ९८१०२५७२५४

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य

वार्षिक शुल्क -११० रु०
एक प्रति - १२ रुपये
विदेश में वार्षिक शुल्क-600 रु.
(हवाई जहाज से) वार्षिक शुल्क-1100रु.
दिसम्बर 2009 वर्ष 45 अंक 8

सम्पादकीय

पुण्यात्माओं का प्रेरक स्मरण करें उनके पथ का अनुगमन

दिसम्बर मास-बताता है हमको इतिहास, अनेक ऐतिहासिक विभूतियों का कराता है स्मरण-जिनके प्रेरक जीवन करते हैं राष्ट्र में नवचैतन्य का स्फुरण। अद्‌भुत सा है यह संयोग कि ये सभी वन्दनीय विभूतियां युगसृष्टा, युगदृष्टा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरित थे। इस माह जिनकी बलिदान तिथि है वह हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द देवदयानन्द के उपदेशामृत का पानकर राष्ट्र जागरण महायज्ञ के ऐसे साधक बने, जिन्होंने अपनी जीवन समिधा समर्पित कर उसे गतिमान किया था। देवतास्वरूप भाई परमानन्द का पुण्य स्मरण भी यह दिसम्बर मास कराता है। उन्होंने भी दयानन्द के वैदिकदर्शन को स्वजीवन का पाथेय बनाया था। विदेशी दासता कीशृंखलाओं से स्वराष्ट्र को स्वतन्त्र कराने के महामंत्र को महर्षि ने अपनी अमर कृति सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से अनुगुंजित किया था, भाई जी ने उसे मात्र पढ़ा सुना ही नहीं अपितु अपनी जीवन वीणा की सुमधुर तान बनाया था। कालापानी के क्रूर कारागार में भी उन्होंने स्वातन्त्र्य की रण हुंकार व गर्जना कर शमा आजादी के परवानों के अरमानों को परवान चढ़ाया था। दिसम्बर मास में महान कर्मयोगी पंडित मदनमोहन मालवीय का पावन स्मरण स्वदेश, स्व संस्कृति, स्वधर्म के प्रति निष्ठावान् हर राष्ट्रभक्त को स्वतः ही हो आता है। महर्षि द्वारा प्रवाहित की गयी वैदिक ज्ञानगंगा की अंजुलि पान करने के पुण्य से महामना मालवीय भी वंचित नहीं रहे थे।

पराधीनता पाश को काट अपने भारत महान में स्वतन्त्रता की प्रेरक बयार के प्रवाहित होने के उपरान्त देवदयानन्द के

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी २२८६ आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५ से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

वेदप्रचार अभियान को जिन कर्मयोगी ने अपने जीवन का मिशन मानकर मनसा, वाचा कर्मणा अपनी समग्र ऊर्जा की पूर्ति हेतु समर्पित की थी, उन महान विभुतियों में अग्रगण्य थे "दयानन्द संस्थान" और 'जनज्ञान' के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षुः एवम् भारत की संसद में वेद विशुद्ध राष्ट्रवाद का नाद अपनी ओजस्वी वाणी से निनादित करते रहे पं॰प्रकाशवीर शास्त्री। उनका पुण्य स्मरण भी दिसम्बर मास हर महर्षि भक्त को कराता है।

यह भी एक अद्‌भुत संयोग ही है कि इन सभी पुण्यात्माओं ने दयानन्द द्वारा वैदिक चिन्तन के आधार पर सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में जिस व्यवहार विधा का निरूपण किया था, उसका मनसा, वाचा, कर्मणा अनुगमन किया मातृभूमि की स्वतन्त्रता हेतु चलो अविराम संग्राम में अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, देवतास्वरूप भाई परमानद और पंडित मदनमोहन मालवीय ने उस सारतत्व को अपनी ऊर्जा बनाया था, जो माता भूमि पुत्रोऽहम् के वैदिक आह्वान् में निहित है। इसे भी एक प्रेरक संयोग ही कहना होगा कि देवदयानन्द ने स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वराज्य और स्वजीवन मूल्यों के प्रति अनुरक्ति, आसक्ति को राष्ट्रोत्थान का पुनीत पथ उद्‌घोषित किया था, ये सभी ध्येयनिष्ठ विभूतियां, निर्भीकता सहित उसी पथ पर चली थीं। उन सभी ने इस पथ को प्रेरक और वरेण्य मानकर चुनौतियों को झेलते हुए अपनाया था। उन सभी ने इस महामंत्र को पूर्ण निष्ठा सहित अपने सृदृढ़ संकल्प का आधार बनाया था कि उज्जवल भविष्य के सृजन हेतु राष्ट्र को अपने प्रेरक अतीत का स्मरण कर वर्तमान का विश्लेषण करना होगा। अतीत के इतिहास पर विस्मरण की धूल को साफ कर उसके सत्य-स्वरूप को उन्होंने राष्ट्र के जन-गण के समक्ष उभारा था। राष्ट्रजन को अपने प्रेरक इतिहास से अवगत कराकर उन्होंने जन-गण में आत्मविश्वास का सृजन किया था। वे सभी देवदयानन्द द्वारा प्रदत्त वैचारिक प्रकाश में राष्ट्र के समक्ष विद्यमान समस्याओं का निदान खोजकर स्वराष्ट्र के भविष्य के सम्वर्धन हेतु कार्यक्षेत्र में अवतरित हुए थे। स्वातन्त्र संघर्ष के महान पुरोधा के रूप में जन स्वामी श्रद्धानन्द ने राजनीतिक मंच पर गरिमापूर्ण स्थान पाया था तो उन्होंने अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में अपने भाषण का माध्यम आर्य भाषा (हिन्दी) को बनाकर इतिहास को एक नयी दिशा प्रदान की थी। चांदनी चौक में ब्रिटिश सत्ता के क्रीतदास सैनिकों के समक्ष अपना वक्षस्थल तानकर इस महान संन्यासी ने एक सर्वस्व त्यागी स्वातन्त्र्य योद्धा होने की अपनी प्रेरक छवि प्रस्तुत की थी।

परमपिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद के मंत्रों का उद्‌घोष उन्होंने जामा मस्जिद परिसर में कर राष्ट्र को मत, मजहब, पंथ, सम्प्रदाय के भेद विभेद से उभारकर संगच्छध्वम् के महामंत्र को अपने व्यवहार में लाने की राह दिखाई थी राजनीति के क्षेत्र में जब उन्होंने उसके तत्कालीन सूत्रधारों को तथाकथित अल्पसंख्यक समुदाय के तुष्टिकरण में रत होकर एकता के नाम पर भेद-विभेद वे सृजन की टीस अनुभूत की तो सत्य को ग्रहण करने और असत्य को परित्याग करने को तत्पर रहने के देवदयानन्द द्वारा प्रदत्त वैदिक संकल्प को उन्होंने व्यवहार में उतारा। लोकेषणा की तृप्ति की तृष्णा से विरक्त होकर राष्ट्रीय एकता के भाव को बल प्रदान करने के अभियान में उन्होंने स्वयं को व्यस्त कर दिया। देवतास्वरूप भाई परमानन्द, महामना मालवीय के समान विचारवान जन के साथ उन्होंने विद्यमान परिस्थितियों का समग्रता सहित विवेचन किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वैदिक ज्ञान-गंगा के प्रेरक जल की अजुंलि भरकर स्वयं को धन्य मानने वाले हिन्दू समाज को छुआछूत और जन्मना जातिवाद तथा अभाव के त्रिशूल से मुक्ति दिलानी होगी। इस लक्ष्य की सिद्धि हेतु उन्होंने "यों तो हैं पंथ अनेक हिन्दू-हिन्दू सब हैं एक" इसी भाव को अपनी वाणी से पूर्ण विश्वास सहित उच्चारा। उन्होंने दम तोड़ते से हिन्दू समाज की रक्षार्थ हिन्दू संगठन के अमृतघट को प्रस्तुत किया। इसी को उन्होंने इस राष्ट्र को विश्व मंच पर दृढ़ता सहित अपना पांव जमाने का सबल आधार माना। आज तो इतिहास के अनेक विश्लेषक भी मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं कि यदि स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा

इस अंक में पढ़े

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णत: सहमत हो)

सम्पादकीय- पुण्यआत्माओं का प्रेरक स्मरण	१
सामायिक विचार-भाजपा को सुधरने का एक	४
महात्मा वेदभिक्षु: जी की अमरवाणी (संस्थान में मेरे....)	५
आपके-पत्र	७
यज्ञमय जीवन-(महात्मा प्रभु आश्रित)	८
ईशवाणी वेदज्ञान-(डा॰ अशोक आर्य)	११
एक गीत छ: मन्त्र-(देवनारायण भारद्वाज)	१२
संकल्प के धनी महात्मा वेदभिक्षु:-(सच्चिदानन्द शास्त्री)	१३
पंडित घासीराम-	१४
श्रीमती सुशीला देवी विद्यालंकृता	१४
पण्डित रामप्रसाद विस्मिल-(डा॰ अशोक आर्य)	१५
महात्मा वेदभिक्षु महान आत्मा थे- (डा॰ ज्ञानचन्द्र)	१६
स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धासुमन	१७
प्रखर राष्ट्रभक्त लालालाजपतराय-(डा॰भाई महावीर)	१९
भाई परमानन्द जी.....-(मुन्ना कुमार शर्मा)	२३
हिन्दू जाति की चिकित्सा आवश्यक-(भाई परमानन्द जी)	२५
यजुर्वेद के १८वें अध्याय...-(डा॰ पूर्वी आर्य)	२७
झन्झर संग्रहालय-(हृदय कौशल)	३०
समाज वैज्ञानिक ऋषिवर दयानन्द-(डा॰ चन्द्रकान्त गर्ग	३२
हिन्दू विनाश परम्परा-(डा॰धर्मवीर)	३५
ज्वलन्त समस्या-(जोगिन्दर सिंह)	३८
घरेलू औषधियाँ-(मुन्ना कुमार शर्मा)	४०
लूट मची खुशहाली छायी-	४२

आरम्भ किए गए शुद्धि महायज्ञ को गतिमान रखा जाता और राष्ट्र भाई परमानन्द के हिन्दू जागृत मंत्र को अपनाता और महामना मालवीय द्वारा उद्घोषित "सब मिल बोलो मंत्र महान हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्थान", को अपने कार्य कौशल में उतारता तो यह महिमामयी मातृभूमि विभाजन त्रासदी नहीं झेलती। स्वतन्त्रता के साथ ही देश विभाजन की भी परिस्थितियां बनीं। परिणामत: अविभाज्य अखंड हिन्दुस्थान की खंडित प्रतिभा भी बनी। सिर कटाकर सिरदर्द की दवा खोजने वाले महान राजनीतिक पंडितों और उदारमना महात्माओं ने मजहब के आधार पर देश का विभाजन तो माना किन्तु शेष स्वतन्त्र भारत में भी देवदयानन्द द्वारा प्रदर्शित पथ का अनुगमन नहीं किया। अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द तथा महामना मालवीय द्वारा प्रतिपादित बलशाली हिन्दू समाज के गठन की कामना को साम्प्रदायिकता और अलगाववादी घोर साम्प्रदायिक तत्वों के तुष्टिकरण को भी राष्ट्रीयता के रूप में प्रतिपादित करने की हठवादिता का परित्याग नहीं किया। उनकी इस हठवादिता का ही यह परिणाम है कि स्वतन्त्र भारत में भी कश्मीर की केसर क्यारियों से नागभूमि तक समस्याओं के नागफन उभार पा रहे हैं। अलगाववादी तत्व वहां विषधरों की फुकार सरीखे क्रियाकलाप से राष्ट्र की सम्प्रभुता को चुनौती देने से संलग्न है। माओं के महामंत्र को जपने वाले एकता भंजक देश के एक अंचल में शान्ति सौरव्य को अंगार लगाने से संलग्न हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति श्रद्धानत, देवतास्वरूप भाई परमानन्द के प्रेरक जीवन से प्रेरणा लेने वाले महात्मा वेदभिक्षु: और पं॰ प्रकाशवीर शास्त्री सरीखे दयानन्द के दीवानों, पथनुयायियों ने राष्ट्र को विद्यमान और भावी संकटों के प्रति सतर्क और सचेत करने हेतु कर्त्तव्य क्षेत्र में उतरकर अपनी समग्र क्षमता, उर्जा और अनुभवों की संचित पूंजी को राष्ट्र जागरण यज्ञ में समर्पित किया। कर्मकौशल के धनी इन कर्मयोगियों ने अपनी

अन्तिम श्वास तक राष्ट्र जागृति का शंखनाद किया था। उनका यह भी था अडिग विश्वास कि

-शेष पृष्ठ ६, पर

भाजपा को सुधरने का एक और अवसर

पूर्व मुख्यमंत्री कल्याणसिंह के एक बार फिर राजनीतिक करवट बदलने से उत्तरप्रदेश की राजनीति में भले कोई तात्कालिक असर न पड़ें पर इसके दूरगामी परिणाम अवश्य होंगे। सपा अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री मुलायमसिंह ने कल्याणसिंह से दोस्ती का हाथ झटक न दिया होता तो शायद यह स्थिति नहीं बनती। लोकसभा चुनाव के पहले बनी यह दोस्ती तो एक न एक दिन टूटनी ही थी। एक म्यान में दो तलवारें आखिर कैसे रह सकती हैं? शायद इसलिए मुलायम सिंह ने कल्याण सिंह को अपनी पार्टी में लेना मुनासिब नहीं समझा। हालांकि कल्याणसिंह के अनुसार मुलायमसिंह और अमर सिंह ने उनके घर जाकर उनसे सपा की सदस्यता ग्रहण करने की प्रार्थना की थी। कल्याणसिंह ने साथ देना मंजूर किया, सदस्यता नहीं। कल्याणसिंह शायद जानते थे कि मुलायमसिंह के साथ दोस्ती ज्यादा दिनों तक नहीं चलेगी, एक जंगल में दो शेर आखिर रह भी कैसे सकते थे। यह शेर जो भाजपाई राजनीति के वन में तैयार हुआ, इसे बूढ़ा, और थका हुआ राजनेता मान लिया गया था, इसलिए भाजपा ने इसे अनुशासन के पिंजरे में बंद करना चाहा। भला शेर को यह मंजूर कैसे हो सकता था। उसने नयी पार्टी बना ली। इसके कारण भाजपा को बड़ा नुकसान हुआ। इसका प्रत्यक्षीकरण करने में भाजपा नेताओं को काफी वक्त लग गया, तब-तक राजनीतिक समीकरण बदल चुका था, गंगा-यमुना में बहुत पानी बह चुका था, कारवां इस कदर गुजर गया था कि चाहकर भी भाजपा उसमें शामिल नहीं हो सकती थी। उत्तर प्रदेश में कल्याणसिंह के इर्द-गिर्द भाजपा ने जो खेल किया उसके कारण उसे राजनीति के हाशिये पर चला जाना पड़ा। इसका नुकसान जितना भाजपा को हुआ, उतना कल्याणसिंह को भी हुआ। आज स्थिति यह है कि दोनों को एक दूसरे की जरूरत आन पड़ी है। पिछले लोकसभा चुनाव में सपा की ओर से प्रचार करके कल्याणसिंह ने भाजपा की नौ सीटें छीनकर मुलायमसिंह को दे दीं, यह कल्याण सिंह का दावा है। हालांकि इसका अफसोस भी उन्हें है कि आखिरकार उन्होंने मुलायमसिंह के लिए क्यों प्रचार किया। वह मानते हैं कि भाजपा के सिवा कोई दल रामजन्मभूमि पर मंदिर नहीं बना सकता। कभी यही कल्याणसिंह भाजपा की आलोचना करते थकते नहीं थे। हालांकि भाजपा आलोचना लायक थी भी। पार्टी में रहते कल्याणसिंह ने लोकसभा चुनाव में चौधरी अजीतसिंह से दोस्ती करने का विरोध किया था। कल्याणसिंह का तर्क था कि अजीतसिंह भरोसे लायक नेता नहीं हैं। वह चुनाव के बाद कभी भी हाथ झटक कर अलग हो सकते हैं। समय ने साबित किया कि कल्याणसिंह सही थे। भाजपा नेताओं को स्मरण होगा कि एकमात्र इसी वजह से कल्याणसिंह ने पार्टी छोड़ मुलायमसिंह यादव से हाथ मिला लिया था। अजीत सिंह जैसे अविश्वसनीय नेता से दोस्ती भाजपा को मंजूर हुई, कल्याणसिंह की सलाह की नहीं। आज सर्वत्र केन्द्रीय नेतृत्व के कमजोर होने, अक्षम होने के जो आरोप लग रहे हैं, उसमें कहीं न कहीं सच्चाई है। पार्टी माने या न माने, एक बार केन्द्रीय सत्ता मिलने के बाद इसके नेता बौरा गये, अविश्सनीय ढंग से मिली इस सत्ता को नेता पचा नहीं पाये, कल्याणसिंह को खोने का सिलसिला वहीं से प्रारम्भ हुआ था। पार्टी नेता सोचते थे कि उनके एक इशारे पर सत्ता बनती-बिगड़ती है, वे जिसे चाहें निकाल बाहर कर दें, पार्टी पर कोई असर पड़ने वाला नहीं है। इसी घमन्ड में उन्होंने कल्याण सिंह को बाहर जाने का रास्ता दिखा दिया। आज दोनों एक-दूसरे से जुदा-जुदा अपनी हैसियत का अहसास कर रहे हैं। समय पार्टी नेतृत्व में बदलाव चाहता है, ऐसा बदलाव जिसमें पूरे कुनबे को साथ लेकर चलने की क्षमता हो, पूर्वाग्रह से ग्रस्त न हो और कार्यकर्ताओं की संसद का सम्मान करने वाला हो। शायद ऐसे ही नेतृत्व की प्रत्याशा में कल्याण सिंह भाजपा में अपनी वापसी की गुंजाइश देख रहे हैं।

(रांची एक्सप्रेस से साभार)

खेती से भागते किसान

एक खतरनाक सच अपने गम्भीर रूप में सामने आ रहा है। खबर है कि देश के लगभग आधे किसान पुश्तैनी खेती के पेशे को छोड़कर किन्हीं और कामों से जुड़ना चाहते हैं। खाद्य सुरक्षा सहयोग को लेकर होने वाले अंतरराष्ट्रीय

-शेष पृष्ठ ६ पर

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

संस्थान में मेरे साढ़े चार वर्ष

सम्वत् २०२८ की दीपमाला पर दयानन्द संस्थान की स्थापना हुई थी। तब संस्थान के पास साधन न होने के बराबर थे। जन-ज्ञान (मासिक) के सदस्यों का सहयोग और प्रभु का आशीर्वाद ही हमारी पूँजी था। वेद के प्रचार की भावना थी, हमने कार्य आरम्भ किया और कार्य होता गया, बढ़ता गया। कभी-कभी तो यह अनुभव हुआ, कि स्वयं प्रभु हमारे सारे कार्य करते जा रहे हैं। ग्रंथ छपते गए, पैसे का प्रबन्ध होता रहा, वेद छपते रहे. ....१५,५०० की संख्या में वेदभाष्य का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। छोटी-बड़ी १८४ पुस्तकें छपीं, १८-२० संस्करण सत्यार्थप्रकाश के निकाले, ऋषि जीवन के निकाले, पोस्टर छापे और संसार के हर कोने में दयानन्द का सन्देश पहुँचा।

जन्म के साथ ही संस्थान को भारी विरोध अकारण सहने पड़े, किन्तु इसके कार्य में कहीं रूकावट नहीं आयी....

किन्तु १९७५ की शताब्दी पर हम एक भूल कर-बैठे और वह भूल थी सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि जीवन व अन्य प्रचार साहित्य को अत्यन्त सस्ते मूल्य पर देना। वेदभाष्य को शीघ्र पूरा करने की धुन में बाजार से कागज भी उधार ले लिया और साथ ही जन-ज्ञान को साप्ताहिक कर दिया।

सस्ते साहित्य के प्रकाशन का महत्व आर्य जनता ने नहीं समझा, और परिणाम स्वरूप हम आर्थिक संकट मे फंस गए। बनारस और रोहतक शताब्दी महोत्सवों के लिए हमने कुछ ग्रन्थ विशेष रूप से तैयार कराए जिन पर व्यय तो हो गया, पर इन महोत्सवों में उतनी सफलता नहीं मिली। जितनी मिलनी चाहिए, अतः संकट बढ़ता गया!

आरम्भ से ही संस्थान का सारा कार्य पंडिता राकेशरानी जी ही संभालती रहीं। साहित्य में भारी घाटा उठाने की हमारी नीतियों से उनका तीव्र मतभेद सदा रहा। हमें विश्वास था, कि आर्य जनता हमारे प्रचार के महत्व को समझेगी और सहयोग देगी किन्तु समय ने इस विश्वास को बल नहीं दिया। परिणामस्वरूप दयानन्द संस्थान आर्थिक संकट में फंस गया! हमने गम्भीरता पूर्वक यह अनुभव किया कि हमारी नीति कई अंशों में असफल रही है। अतः ७ जून १९७६ को इसका पद छोड़ना ही उचित समझा।

दयानन्द संस्थान का यह सौभाग्य है कि ५ वर्ष से सारे कार्यों को भली-भाँति समझने वाली-कर्मठ और केवल कार्य के लिए ही समर्पित पंडिता राकेशरानी को उसका अध्यक्ष बनाया गया है। मुझे यह स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं कि उनकी दूरदर्शिता, स्पष्टवादिता और प्रत्येक विषय में सही पकड़ सदा सफल रही है। जहाँ हम कोरे आदर्शवादी रहे वहां वे प्रत्येक विषय में सदा व्यावहारिक रही हैं। मुझे विश्वास है उनके नेतृत्व में संस्थान न केवल संकटों से पार होगा, अपितु दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करते हुए आगे बढ़ेगा।

हम से जो भी बन पड़ेगा, कार्य पूर्ववत ही करते रहेंगे, केवल नीति-रीति के संचालन में अब हमारा कोई दायित्व न रहेगा।

नए स्थानों में आर्यसमाज

कौन खोलेगा? पुराने आर्यसमाजों को नवजीवन कौन देगा? ग्राम-ग्राम में दयानन्द सन्देश कौन फैलाएगा और अज्ञान अंधकार के विरुद्ध युद्ध घोषणाएं कौन करेगा? इन सब प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रांतीय संगठन बने थे। पर १०० वर्ष से भी अल्पकाल में वे सम्पत्ति प्रबंध-पद-मोह में ऐसे उलझे हैं कि उन्हें अपना लक्ष्य तो स्मरण ही नहीं रहा? क्या किसी भी प्रांतीय सभा का ऐसा कोई अधिवेशन होता है, जिसमें इन प्रश्नों पर विचार किया जाए? क्या किसी के भी पास इन प्रश्नों को सुलझाने का अवकाश है?

भटके हुए नेता, लटकी हुयी जनता और अटका हुआ लक्ष्य, आज दिव्य स्वप्नों की राह खोज रहा है। मूक भाव से मौन, सभी हैं चिन्तित, पर राह नहीं मिलती। क्या सब-कुछ ऐसे ही चलेगा, या कुछ व्यक्ति प्राण देकर देवदयानन्द की ध्वजा को उठाने का साहस करेंगे? -भारतेन्द्रनाथ

-(जनज्ञान मासिक जुलाई १९७६ से...)

पृष्ठ ३ का शेष-

सबल सजग और कर्माण्यधिकारस्ते के योगश्वर के आह्वान से प्रेरित हिन्दू समाज, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की शासन-प्रशासन व्यवस्था के प्रति निष्ठावान् हिन्दूसमाज की ओर ही अन्य तत्वों का भी सहयोग का हाथ बढ़ेगा। इस सामीप्य के बाद ही वे इस तथ्य और सत्य को समझ पाएंगे कि वैदिक-दर्शन ही सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, भाषावाद, मजहब उन्माद की प्रवृत्ति से उबारकर राष्ट्र के जन-गण में वास्तविक एकत्व बोध के जागरण में समर्थ हैं। भेद-विभेद की दीवारों को ध्वस्त कर यह दर्शन ही मानवता को त्रिवेणी की सुमधुर धार को प्रवाहित करने में समर्थ हो सकेगा। आओ हम उन पुण्यात्माओं का स्मरण कर उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करें। वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण और आतंकवाद की चुनौतियों से परिपूरित इस युग में अध्यात्मिक भारत राष्ट्र ही विश्व के दलित, शोषित, पीड़ित जनमें आशा का संचरण कर सकेगा। और विश्व भर से समवेत स्वर निनादित होगा। ○○

पृष्ठ ४ का शेष-

सम्मेलन के पहले पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु ने यह गम्भीर सच उगलते हुए स्वीकार किया है कि देश के जीडीपी में कृषि का योगदान बस १७.५ प्रतिशत रह गया है। स्थिति की गम्भीरता इस बात से और बढ़ जाती है कि अपने देश की ६० फीसदी आबादी आज भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर ही आश्रित है। बावजूद इसके, धरातली हकीकत यह है कि किसान लगातार आत्महत्या को मजबूर हो रहे हैं। सरकारी बैंकों और ग्रामीण सूदखोरों के भारी ऋणों और उसके ब्याज का बोझ उनके लिए काल बनता रहा है। ऐसे यदि किसान अन्न उत्पादन से इसी तरह विमुख होते रहे तो अर्थव्यवस्था की छवि सुधारने के सारे दावे तो धरे ही रह जायेंगे, साथ ही गरीबी और बेरोजगारी अपने चरम पर जा पहुंचेगी। अभी ही अपने यहां सबसे ज्यादा २० करोड़ से अधिक लोग सरकार की जानकारी में भूख से जूझ रहे हैं, जिनकी सुध लेने वाला कोई नहीं है। हालांकि सरकार के आंकड़ों के अनुसार देश में २८. ६ फीसदी ही गरीब हैं, जबकि विश्व बैंक ४२. फीसदी लोगों को गरीबी रेखा से नीचे बताता है। जाहिर है इनमें उन भूमिहीनों की बात भी की जा रही होगी जो किसी न किसी रूप में कृषि उत्पादन से जुड़े होते हैं। जिनको बड़ा किसान कहा जाता है, वे भी अब कृषि उत्पादन से विमुख होते जा रहे हैं इसका बड़ा कारण तो खेती को खर्चीला होना है ही। दूसरा कारण सामाजिक भी है, जिसके चलते पढ़े-लिखे लोग किसानी को अपना जिविकोपार्जन का साधन नहीं बनाना चाहते। हाड़-तोड़ मेहनत करने वाला किसान मुनाफाखोरों और जमाखोरों से अलग त्रस्त रहता है, उसे अपने माल का उचित दाम नहीं मिलता। कई बार तो वह उत्पादन लागत तक निकालने में अक्षम रहता है। अर्थशास्त्रियों कें अनुसार देश के ८३.३ करोड़ लोग २० रुपये से भी कम में प्रतिदिन गुजारा करने को मजूबर बताये जाते हैं और ग्रामीण इलाकों में प्रति व्यक्ति ७०० रुपये प्रति माह बतायी जा रही है। ऐसे में किसान को खेती और गांव से बांध कर रखना, कोई आसान काम नहीं है। वह कृषि से विमुख होकर बड़े शहरों की तरफ भागेगा, जहां उपेक्षा और महंगाई उसका जीवन और कष्टकर बनाती जाएगी। मामूली नौकरियों या छोटे-मोटे धन्धों के भरोसे वह समाज का अन्नदाता बने रहने का वह गौरव गंवा बैठेगा, जिस पर हमको गर्व है।

-(साभार श० सहारा 125 नवम्बर)

आपके-पत्र

साम्प्रदायिक नहीं यह एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है

महोदया,

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन १९४० में मुहम्मद अली जिन्नाह ने कहा था:-

१. हमारे मित्र यह क्यों नहीं समझते कि हिन्दू तथा मुसलमान केवल दो पंथ या सम्प्रदाय ही नहीं यह दो विभिन्न सभ्यताएं हैं।

२. भारत की समस्या साम्प्रदायिक समस्या नहीं। यह एक अन्तरराष्ट्रीय समस्या है।

३. मुस्लिम एक अलग राष्ट्र हैं। उनका दर्शन शास्त्र, उनकी परम्पराएं, उनका साहित्य हिन्दुओं से भिन्न है।

४. वे (हिन्दू तथा मुसलमान) ना तो आपस में विवाह कर सकते हैं। और न मिलकर भोजन ही।

५. उनकी सभ्यताएं अलग-अलग हैं जो परस्पर विरोधी सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

६. दोनों की गहिक एवं पारलौकिक जीवन की परिकल्पना अलग-अलग हैं।

७. दोनों की एतिहासिक निष्ठाएं और उत्साह के स्रोत अलग-अलग हैं।

८. इनके महाकाव्य और वीरगाथाएं अलग-अलग हैं।

९. एक का वीर पुरुष दूसरे का शत्रु है। इसी प्रकार एक की जीत दूसरे की हार है।

१०. मुस्लिम कोई Minority नहीं है एक भ्रांति मात्र है। मुसलमान स्वयंमेव एक राष्ट्र है।

११. इस प्रकार के दो राष्ट्र समूहों को किसी एक राज्य के अन्तर्गत बांधना नहीं है जिस में एक को Majority और दूसरे को Minority कहा जाये। ऐसी सांझी राज्य व्यवस्था होने पर असंतोष तथा अराजकता उत्पन्न होगी। विभाजन के पश्चात् भी जो मुसलमान भारत में रह गये उन्होंने भी न देश के पूर्वजों को और न ही देश की संस्कृति को अपनाया है। भारतीय मुसलमानों ने अपने आपको तमिल, मराठी, गुजराती, तेलगु, बिहारी या बंगाली नहीं कहा। वह जहां भी हों अपने आप को उर्दू भाषी कहते हैं। भारतीय मुसलमानों के लिये सरकारी दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के बंगाल, आसाम, तमिलनाडू, केरल, आन्ध्र, महाराष्ट्र इत्यादि केन्द्रों से उर्दू में समाचार प्रसारित करने पड़ते हैं। भारतीय बंगाल प्रदेश और बंग्लादेश की विचित्र स्थिति है। बंग्लादेशी मुसलमान बंगाली भाषा को अपनाए हुए थे। इसी भाषा के कारण बंग्लादेश पाकिस्तान से अलग हुआ। लेकिन वही बंग्लादेशी जब भारत में आते हैं तो उनके लिये उर्दू महत्वपूर्ण हो जाती है और उनके लिये उर्दू में समाचार प्रसारित करने पड़ते हैं। इस दोगली नीति से यही आशंका होती है कि उर्दू भाषा भी नये विभाजन का माध्यम है।

-जितेन्द्रनाथ जोशी

के जी १/२६५, विकासपुरी, नई दिल्ली।

आतंकवादियों को सरकारी तोहफे

महोदया,

आपको याद होगा कि १९९६ के कोयम्बटूर धमाके में ५८ व्यक्ति मारे गये थे और २०० घायल हुए थे। इन धमाकों के करने वाले ९ आतंकवादियों (सारे मुसलिम) पर कोर्ट ने ११ वर्ष की कैद की सजा दी थी। आश्चर्य की बात है, कि तमिलनाडु सरकार ने डी. एम. के पार्टी के संस्थापक एवं पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री सी. एन. अब्बादुराई के जन्म दिन के अवसर पर उनकी सजा की अवधि-दो साल कम करके पहिले ही छोड़ने का तोहफा दिया है। विडम्बना है कि तमिलनाडु सरकार ने पीड़ित व्यक्तियों पर दया न करके आतंकवादियों पर दया की है। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है, कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने भी कश्मीर में मारे गये आतंकवादी परिवारों के लिए भी आर्थिक सहायता/ भत्ता देने की घोषणा की थी। इस जानकारी से लगता है कि केन्द्र व राज्य सरकारों को भोली-भाली जनता के दर्द का कोई आभास नहीं है, आभास है तो केवल आतंकवादियों का।

-(जे.पी.शर्मा-अध्यक्ष मानवतामिशन, हरिद्वार)

यज्ञमय जीवन

-महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

मनुष्य सबकुछ सीखा पर जीना न सीखा। आप कहोगे जीवन कैसे नहीं सीखा, क्या जी नहीं रहा? जीना तो यही है-सांस लेना, हवा खाना, जल पीना और अन्न खाना। इसी से तो जीवन है। सभी जी रहे हैं और अन्न, जल, हवा खाना जानते हैं। यह भी कोई सीखने की बात है? .....अच्छा. ....मैं पूछता हूं, क्या मनुष्य गन्दे कूड़े के ढेर में रहकर सांस लेना, हवा खाना चाहता है? गन्दे छप्पड़, तालाब से पानी-पीना चाहता है? क्या गले सड़े कीड़े पड़े, सूखे अनाज फल को खाना पसन्द करता है?

आप कहेंगे, नहीं हरगिज नहीं। मनुष्य तो शुद्ध हवा, शुद्ध जल, शुद्ध अन्न खाएगा। वरना भूखा रहेगा, भाग जायेगा वहां न ठहरेगा। नाक बन्द करेगा, सांस लेना न चाहेगा।.....मगर.....पशु गन्दे सड़े अन्न, गन्दे जल, गन्दी हवा में ठहरा रहेगा।.....फिर.....आप कहोगे मनुष्य तो अपने आप सीखा हुआ है और जीना क्या सीखना है? मनुष्य को सिखाया नहीं गया, वह स्वाभाविक इन बातों को सीखा हुआ है इससे और भी बड़ी बात जो है वह यह है कि सैकड़ों मन हवा इसके सामने रहती है और हवा के बिना इसका क्षण भी नहीं गुजर सकता।.....परन्तु.....लेता हवा उतनी है जितनी उसे जरूरत है। जल बेशुमार इसके सामने होता है परन्तु पीता उतना है जितने से प्यास बुझ जाती है। अन्न बहुत रखा हुआ है परन्तु खायेगा उतना जिससे इसकी भूख मिट जाती है।

अधिक ग्रहण नहीं करता। उसे पता है कि अधिक लिया तो शरीर रोगी हो जायेगा। जल अधिक पिया तो पेट अफर जावेगा। अन्न अधिक खाया तो पेट दर्द अपच हो जायेगा। हवा अधिक ली तो जुकाम सिरदर्द हो जायेगा।

समझिये प्रकृति ने मनुष्य को स्वाभाविक योग सिखाया है। यह है योग के पहले अंग यम का एक भाग अपरिग्रह। **'अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यमः'** अपरिग्रह का अर्थ है आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना। यह सब कुछ स्वाभाविक है, सीखा नहीं। आप कहोगे योग की बड़ी चीज तो अपरिग्रह है, जिसे यह प्राप्त हो उसे और क्या योग चाहिए? जब आप समझो योग के नाम से लोग घबराते हैं, डरते हैं। प्रभु देव ने तो मनुष्य को ऐसा बनाया स्वभाव से कि वह योगी है मगर योग सिद्ध नहीं होता। योग का ज्ञान नहीं होता।.....जब तक.....यज्ञ न करें। अब आप खुश होंगे कि हम तो यज्ञ प्रतिदिन करते हैं। प्रतिदिन हवन करते हैं परन्तु मेरे देव ने मुझे अन्दर से कहा-तुम लोग यज्ञ नहीं करते, बच्चों जैसे खेल करते हो।

प्यारे! यज्ञ तो अपने जैसा उसे कर देता है, जो यज्ञ करने वाला हो

फिर यज्ञ कौन करता है? तुम्हारा यज्ञ करता है घृत। यज्ञ कर रही है तुम्हारी समिधा (काष्ट)। यज्ञ का नाम प्रसिद्ध कर रही है तुम्हारी सामग्री। शास्त्र तो कहता है अथ क्रतुः मयः पुरुषः। मनुष्य क्रतु है। करे तो वैसा हो जावे। तनिक ध्यान करके विचार की खुली आंख से देखो तुम्हारी काष्ट कठोर थी, अकड़ रखती थी, उसने यज्ञ किया कठोरता अकड़पन दोनों गल गये। बोले गले के ना? फिर अग्नि का रूप बन गये कि ना? अब बन गया काष्ठ यज्ञ संसार के लिए। घृत में स्नेह था, आसक्ति थी, आसक्ति जल गई, अर्पण करने की देर थी कि तुरन्त प्रचण्ड अग्नि बोल उठी यह घृत अब यज्ञ में पड़ी सब बैर विरोध को मिटाकर भिन्न-भिन्न गुण के पदार्थों ने एकता कर ली। फल क्या हुआ, सारे वायु मण्डल को सुगन्धित कर दिया तथा तुम्हारे नाम का संसार में यश होने लगा कि अमुक ने यज्ञ रचाया! तुम्हारी सामग्री ने संसार का कल्याण कर दिया।

अब बोलो, धर्म ईमान से बोलो यदि तुम यज्ञ करते तो यज्ञमय जीवन न बन जाता? अन्दर झांको।

तुम्हारे जीवन का कौन-सा अंग यज्ञ मय बना? मनुष्य का जीवन तो इन्द्रियों से प्रकट होता है। आंख, कान, वाणी, हाथ आदि से क्या जीवन यज्ञमय टपकता है। यदि नहीं, तो समझो कि तुम्हारी कमाई ने यज्ञ किया है। परन्तु काष्ट, सामग्री, घृत तो आपका था ही नहीं। हां तुमने खरीदा और उसे बेचा। खरीद बेच से लाभ मिलेगा, भाव पर। यह भाव है हृदय का। गांठ बांध रखो यह बात, जिस हृदय भाव से तुमने आहुति दी है। यह है देवताओं को बेचना उतना लाभ मिलेगा। **'पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुरापत'** दर्वि भाव को कहते हैं। जड़ पदार्थों के बदले में जड़ पदार्थ मिलेंगे जड़ता ही साथ रहेगी।

यज्ञ तो सिखाता है.....जीना.....अग्नि यज्ञ का गुण है प्रकाश। कर्म है त्याग बिना तमीज, बिना भेदभाव के और स्वभाव है प्रेम। मनुष्य की पहचान तो....स्वभाव से होती है। फिर यज्ञ करना कहां से सीखें यज्ञ सीखें सूर्य, चन्द्रमा तथा पृथ्वी से। यह तीनों बनें एक ही उपादान कारण से। परन्तु कर्ता का क्या आश्चर्य है? एक कारीगर सोने से सोने की चीजें बना सकता है। चांदी से चांदी की, लोहे से लोहे की, चाहे अनेक प्रकार की बनावे, परन्तु चांदी से सोने का जेवर नहीं बना सकता। बढ़िया घटिया मूल्य के, बढ़िया घटिया वजन के, भिन्न-भिन्न शक्ल के तो बना सकता है। परन्तु सोने की वस्तु चांदी से, चांदी की लोहे से नहीं बना सकता।

परन्तु प्रभु की कारीगरी विचित्र है

उपादान कारण एक है परन्तु बनाया है सूर्य, चन्द्र तथा पृथ्वी। कितना अन्तर पड़ गया? दिन तथा रात का। पृथ्वी समस्त संसार के जीवों का आधार है जीवन का, परन्तु सूर्य और चन्द्र के बिना बेकार है। पृथ्वी कुछ भी नहीं कर सकती। घास का एक तिनका भी सूर्य उगाता तथा पकाता है परन्तु चन्द्रमा के बिना पदार्थ में रस अमृत नहीं पड़ सकता और आश्चर्य यह है कि चन्द्र को सूर्य की आवश्यकता है। बिना सूर्य वह बेकार है। कहां से ज्योति ले? पृथ्वी को सूर्य तथा चांद दोनों की। फिर संसार को इन तीनों की आवश्यकता है। बड़ा आश्चर्य तो यह है कि सूर्य रहे पूर्व में चांद रहे पश्चिम में और पृथ्वी रहे बीच में नीचे। एक दूसरे के विरोधी गुण स्वभाव रखते हैं।.....परन्तु.....कर्म तीनों में एक दूसरे के सहायक अपितु उत्तरदायी सहायक बन जाते हैं।....तब.....इस कर्म का नाम यज्ञ बन जाता है, यज्ञ कहलाता है देवता, पृथ्वी देव यज्ञनि देवों के यज्ञ करने का स्थान बन जाती है। जो कर्म करते हैं वह यज्ञ कहलाता है। कौन से काम कल्याण मार्ग के लिए करे। वेद कहता है?, ददता, अघ्नता, जानता। कर्म भक्ति, ज्ञान के कामों में **ददता-वह याज्ञिक है? जो इन्द्रियों पर दमन करते हुए जीवों पर दया करके दान करता है।**

अघ्नता-वह याज्ञिक है जो बिना हिंसा रहित प्रेम करता है।

जानता-वह याज्ञिक है जो ज्ञानपूर्वक यथा योग्य मार्ग देता है।।

सर्वसाधारण के लिए सब कामों में, सब बर्तावों में और व्यवहारों में एक ही कसौटी है **'हरचे बरखुद पसन्दी हर दीगराने पसन्द'** अर्थात् वैसा ही तुम दूसरों के साथ व्यवहार करो जैसा तुम अपने साथ चाहते हो। यह नियम क्या अहिंसा में, क्या अस्तेय में सब पर लागू आयेगा।

हर क्षण यह विचार करना चाहिए कि हमारा जीवन प्राणिमात्र के लिए सुखदाई तथा कल्याणकारी हो। कोई कार्य ऐसा न होने पावे हमसे, जिससे किसी का हानि या अपमान होकर उसे दुःख पहुंचे। **यह है जीना-यज्ञ के लिए जीना**

अब प्रश्न होगा कि जानता-ज्ञान पूर्वक मार्ग देने का क्या अर्थ होगा?

यज्ञ को अध्वर्य कहा गया है इसमें मुख्य बात है संसार हित हो। हिंसा के सम्बन्ध में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसका जीवन कितना मनुष्य समाज के उपयोग अथवा हानिकारक है इसलिए खटमल, पिस्सू, मच्छर आदि जन्तु से लेकर उत्तरोत्तर एक-दूसरे के लिए

बलिदान किये जा सकते हैं। अन्तिम मनुष्य है- और मनुष्य में साधारण मनुष्य की अपेक्षा उन उच्च कोटि के मनुष्यों की जिनका जीवन पवित्र तथा उत्कृष्ठ (श्रेष्ठ) है। जिनसे देश, समाज तथा प्राणीमात्र को अत्यन्त लाभ पहुंच रहा है।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम् सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददता अघ्नता जानता संग में महि॥

पूर्णमासीका चांद संसार भर के प्राणियों को आह्लाद और शीतलता देता है और औषधि वनस्पति में अमृत रस भर रहा है। समुद्र का जल भी उछल-उछल कर चन्द्रमा को अर्घ्य भेंट कर रहा है। भगत योगी, यति वैरागी को प्राप्त करने, संसार के विषयों में उलझ अपने शान्ति और आनन्द देने वाले भगवान् की ओर दौड़ रहे हैं। प्रभु देव हम सब देवताओं की नकल करने वाले याज्ञिक यज्ञ प्रेमियों को शक्ति और योग्यता प्रदान करें कि हम भी यज्ञमय जीवन को प्राप्त कर आपके चरणों में बैठने के अधिकारी बनें और तेरी पूजा और उपासना करके जीवन जन्म सफल बनावें।

सुयोग्य वर चाहिए

कन्या का नाम- कु० कान्ति भारद्वाज **आयु**- 34 वर्ष (20/06/1975) **कद**- ५ फुट **रंग**- गेहुंआ **योग्यता**- एम. ए. (अंग्रेजी) बी. एड. बी. एससी (बायो) एपटेक से डी. सी. एस फिलहाल केन्द्रीय विद्यालय विदिशा (म.प्र.) में शिक्षक अनुबंध पर **परिवार**- आदर्शगौड़ **गोत्र** -भारद्वाज **शाखा**- यजुर्वेद **निवास**- राजस्थान **शासन**- पनवाडिया पूर्वजों की भूमि हरियाणा, किन्तु सभी सम्बन्धी दिल्ली में **पिता**- रिटायर्ड मुख्याध्यापक म.प्र. राजकीय सेवा **माता**- शिक्षित गृहणी मैट्रिक, पालम, दिल्ली **भाई**- दो भाई विवाहित नोएडा में निवास **बहनें**- दो (एक दिल्ली में विवाहित)।

पता:जय कृष्ण भारद्वाज टेलीफोन एक्सचेंज के पीछे सांची (जि. रायसेन, म.प्र.)-011-464661
फोन नः-07482-266795-**मो**०-09406565327

वर चाहिए

गोरी, सुन्दर, सुसंस्कृत, मेधावी, आयु 26 वर्ष, कद 5 फुट 7 इंच, प्रसिद्ध बिजनेस स्कूल से मैनेजमेंट की डिग्री प्राप्त, दक्षिण दिल्ली के प्रतिष्ठित, सम्पन्न, क्षत्रिय आर्य परिवार की कन्या हेतु शाकाहारी, सम्मानित परिवार का सुयोग्य लम्बा, आकर्षक व्यक्तित्व का अच्छे संस्थानों से इन्जीनियर तथा एम. बी. ए. वर चाहिए। जाति बन्धन नहीं। कृपया विस्तृत जानकारी भेजने का कष्ट करें।

श्री एस.पी.सिंह
सी-521, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-24
ई.मेल : ger983@gmail. com
मोबाईल : 098-917-95601

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही शीघ्र वार्षिक शुल्क एक सौ दस रूपये भेजने का यत्न करें तथा पत्र के साथ संलग्न कार्ड पर उत्तर भी दें।

डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी. पी. भेजने में अब २५ रुपये लगते हैं। अत: मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट अथवा केवल दिल्ली के चैक द्वारा "जनज्ञान" के नाम शुल्क भेजें। **दिल्ली से बाहर के चैक पर बैंक चार्ज लगभग ५० रुपये व्यर्थ पड़ जाता है।**

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ..... .अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही देने की कृपा करें। हमारे यहां से भेजे पत्रों में सदस्य नं. .....आपके पते के साथ लिखा होता है। धन्यवाद **-सम्पादक**

ईशवाणी वेद ज्ञान

-डा॰ अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास के प्रथम भाग में जहां ईश्वर सम्बन्धी विषद् विवेचना की गई है वहीं इसी समुल्लास के दूसरे भाग में उस प्रभु, जिसने सबको उत्पन्न कर धारण किया है, की वाणी वेद अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का वर्णन किया है। ईश्वर ने वेदज्ञान के द्वारा अपनी प्रजा के कल्याण हेतु विभिन्न विद्याओं का उपेदश दिया है। निराकार होते हुए भी उस प्रभु ने यह ज्ञानोपदेश दिया। यह तभी सम्भव हो सका क्योंकि वह प्रभु सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक है। वह जीव के अन्दर भी है। इसी कारण यह उपदेश देने के लिए उसे किसी प्रकार के उच्चारण आदि की आवश्यकता नहीं पड़ी। वेद ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से दिया गया, यथा "अग्नि" को ऋग्वेद, वायु को यजुर्वेद, आदित्य को सामवेद तथा अंगिरा को अथर्ववेद के ज्ञान का प्रकाश किया। वेद का ज्ञान संस्कृत में किया गया। यही भाषा ही विश्व की प्रथम भाषा थी तथा विश्व की सभी भाषाओं की जननी होने का सम्मान भी इसी कारण ही इस वेद भाषा संस्कृत को मिला। सबको समान रूप से एक ही भाषा में अपना ज्ञान देने वाले परमात्मा को पक्षपात रहित ही कहा जा सकता है।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञानः वेद ईश्वर कृत हैं, इसे किसी प्रकार से भी प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है। तो भी महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में इस हेतु जो प्रमाण दिये हैं, वह देखने योग्य हैं। जो इस प्रकार हैं:

१. आर्यसमाज के दूसरे नियम में तथा सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम व सप्तम समुल्लास में ईश्वर के गुणों पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने यहां पर यह भी स्पष्ट किया है कि जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म, व स्वभाव अनुसार कथन हो वही ईश्वर प्रदत्त है।

२. ईश्वरोक्त ज्ञान होने के लिए सृष्टि क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्त आत्माओं के व्यवहार के समान होना आवश्यक है।

३. ईश्वर के निर्भ्रम ज्ञान के समान ही भ्रान्ति रहित ज्ञान ही ईश्वर का ज्ञान है।

४. परमेश्वर सम जैसा सृष्टिक्रम है वैसा ही सृष्टि कार्य कारण और जीव का प्रतिपादन ही ईश ज्ञान है।

५. शुद्धात्मा के स्वभाव सम ज्ञान ही ईश प्रदत्त ज्ञान है।

समग्र सृष्टि क्रम में केवल चार वेद ही ऐसा पुस्तक है जो: कसौटियों पर खरे उतरते हैं। वे ही मात्र एक ऐसा ज्ञान है जो ईश्वर ने दिया है। अन्य सब मनुष्य कृत हैं।

वेद ज्ञान की आवश्यकताः योग दर्शन अनुसार सृष्टि के आरम्भ में सर्वश्रेष्ठ ऋषि अग्नि, अंगिरा, आदित्य और वायु सरीखे सर्वश्रेष्ठ आचार्यों का भी वही प्रभु आचार्य है। यदि परमात्मा उन्हें वेदों का ज्ञान न देता और वह इसे आगे न बांटते तो सृष्टि में सभी मूर्ख ही होते। जिस प्रकार नवजात शिशु को जंगली पशुओं में छोड़ दिया जावे तो वह भी पशुओं समान ही बन जाता है। अत: सृष्टि के आदि में प्रभु द्वारा प्रदत्त वेद विद्या रूपी सुशिक्षा पाकर ही मनुष्य उत्तरोत्तर विद्वान् होते गए।

ब्राह्मण ग्रन्थः जब वेद ज्ञान का विस्तार अनेक लोगों तक हो गया क्योंकि प्रभु को ब्रह्म भी कहते हैं। जिस ऋषि ने सर्वप्रथम वेद के जिस मन्त्र की व्यख्या की उसका नाम उस मन्त्र के साथ जोड़ दिया गया। अत: यह ग्रन्थ वेद न होकर इतिहास ग्रन्थ हैं।

शाखा ग्रन्थः चारों वेदों को मिलाकर कुल ११३१ शाखांए हैं। इन में वेद ही ईश्वर कृत हैं, शेष ११२७ शाखा ग्रन्थ भी इतिहास ही हैं।

वेद का नित्यत्व: परमात्मा ने सृष्टि के सभी मनुष्यों पर कृपि कर वेद का पवित्र ज्ञान दिया ताकि सभी ज्ञान रूपी सूर्य को पाकर आनन्द प्राप्त करते हुए विद्या व सुख समृद्धि को प्राप्त हों। नित्य परमेश्वर का दिया ज्ञान भी नित्य है। वेद को पढ़कर ही ऋषियों ने व्याकरण, निरूक्त, छन्द शास्त्र आदि ग्रन्थ बनाए। अत: ईश्वर कृत ज्ञान वेदों के अनुसार ही सब प्रकार के व्यवहार करने चाहियें। जब कोई पूछे कि आप का धर्म क्या है? तो एक मात्र यही ही उत्तर देना चाहिये। कि वेद हमारा धर्म है। वेद ही हमारा कर्तव्य है। पालन ही प्रभु की आज्ञा का पालन है। इसी में ही हम सबका कल्याण है।

-आर्य कुटीर, ११६-मित्र विहार मण्डी डबवाली, हरियाणा।

"एक गीत छः मन्त्र"

हों ओज सहस बल वीर्य घने। मानवता के नवनीत बने।।
स्वावलम्बिता, सहिष्णुता हो, तन-मन की शक्ति शूरता हो।
यह नहीं जगायें दानवता, इनसे नर में सुर मृदुता हो।
हो प्राज्ञ पराक्रम प्रीत पने। मानवता के नवनीत बने।।१।।

ब्रह्मा-साधना स्वाध्याय नित्य, हों आस्तिकता सद्गुणीकृत्य।
नित सात्विक अन्नाहार करें, जग विजय करें विप्रता सत्य।
हों उन्नायक उद्गीथ धुनें। मानवता के नवनीत बनें।।२।।

क्षत्रियत्व विजय पुरुषार्थ करे, जी न्याय नियम परमार्थ वरे।
निर्बल-सज्जन की रक्षा हो, सुखमय स्वराज्य का पात्र भरे।
जय विभव शक्ति सुविनीत सने। मानवता के नवनीत बने।।३।।

यह आत्म-देह अधिकारी हो, शासक जितेन्द्र अविकारी हो।
दुर्व्यसनो पर विजयी बनकर, यह आत्म स्वत्व सत्कारी हो।
परमात्म-आत्म हों मीत मने। मानवता के नवनीत बने।।४।।

सौम्यता सजाये जीवन को, ऐश्वर्य सुभग तन-मन-धन को।
सत् सृजनशील सौजन्य रहे, शुभ सुगढ़ श्रेष्ठ उत्पादन हो।
पुन्यायी पृथा प्रतीत तने। मानवता के नवनीत बने।।५।।
जल स्रोत निरन्तर बहते हैं, प्रश्वौस-श्वौस गति गहते हैं।
ऐसे तपपूर्ण परिश्रम से, सत्कर्मशील जग जयते हैं।
मन-मनन प्राण संगीत गुने। मानवता के नवनीत बने।।६।।

भू,जल, अग्नि, पवन गगन हों, शुचिर रुचिर प्राकृतिक कण हों।
रहें व्यवस्थित करें प्रतिष्ठित, रहित प्रदूषण सघन मगन हों।
सन्तति प्रिय प्रजा पुनीत जने।मानवता के नवनीत बने।।६।।

आधार-(अथर्ववेद काण्ड १० सूक्त ५ मन्त्र सं० १ से ६)
इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सह स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्य स्थेन्द्रस्य नृम्णंस्थ। जिष्णवे योगाय क्षत्रयोगैर्वो युनज्मि।।१।।
इन्द्रस्यौज--नृम्णंस्थ। जिष्णवे योगाय क्षत्रयोगैर्वो युनज्मि।।२।।
इन्द्रस्यौज---नृमणंस्थ। जिष्णवे योगायेन्द्रयोगैर्वो युनज्मि।।३।।
इन्द्रस्यौज--नृम्णंस्थ। जिष्णवे योगाय सोमयोगैर्वो युनज्मि।।४।।
इन्द्रस्यौज-नृम्णंस्थ। जिष्णवे योगायाप्सुयोगैर्वो युनज्मि।।५।।
इन्द्रस्यौज-नृम्णंस्थ। जिष्णवे योगाय विश्वानि मा भूतान्युप तिष्ठन्तु युक्ता म आप स्थ।।६।।

आठ मन्त्र एक गीत

श्रुति लोकालोक प्रसारी हैं वे ईश-सदन सुखधारी हैं।
जिन्हें प्रजापति धाम चाहिये, उन्हें नहीं विश्राम चाहिये।
प्रभु की दी, दिव्य शक्तियों से, करना शुभ निष्लाभ चाहिये।
जग सुदृढ़ देह उपकारी हैं। वे ईश सदन सुखधारी हैं।१।।
शुभ कर्मों में संलग्न रहें, वे नहीं कभी उद्विगन रहें।
शुक्रवीर ही शुद्धधीर हों, वे शान्त निरोग निमग्न रहें
सद्बुद्धि विमल बलकारी हैं। वे ईश-सदन सुखधारी हैं।२।।
जो वर्च प्रजापति का गहते, दुह लोक संवारे वे रहते।
मिलते परलोक ईश उनको, जो प्रभु के गुणादर्श गहते।
सहृदय सौम्य सहकारी हैं। वे ईश-सदन सुखधारी हैं।।३।।
अतिशय चमके अग्रणी बने, क्या रचना के भी धनी बने?
किये सृजन तुमने बहुतेरे, क्या सृजन सौम्य सद्गुणी बने?
जिनके गौरव गुणकारी हैं। वे ईश-सदन सुखधारी हैं।४।।
बहु सृजन किये महनीय बने, निज दोष ढाँप वरणीय बने।
जिनसे स्नेह मित्रता क्या, उनके अवगुण अहिनीय हने।
अविरल सम्बन्ध सुधारी हैं। वे ईश-सदन सुखधारी हैं।५।।
करके संयम नियम नियन्त्रण, उत्तम पद पाये आकर्षण।
कितना किया प्रजा परिपालन, पितृ तुलय करके संरक्षण।
फैलाये सुयश उजारी हैं। वे ईश-सदन सुखधारी हैं।६।।
प्रिय पाल-पोष परिवार जिया। क्या उनको शुद्ध विचार दिया।
इस देव वृत्ति की सन्तति ने, कितना प्रेरक विस्तार किया।
जो श्रुति-संस्कृति संचारी हैं। वे ईश-सदन सुखधारी हैं।७।।

सर्व समान हिंसक विषधारी

आधारः- (अथर्व्वेद काण्ड १० सूक्त मन्त्र सं ७ से १४)
अग्ने भागस्थ अपो शुक्रमापो देवीर्वचो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेर्वो धाम्नाऽस्मैलोकाय सादये।।१।।
इन्द्रस्य भागस्थ --- उपरोक्त ------।।२।।
सोमस्य भागस्थ ----- यथोपरि ------।।३।।
वरुणस्य भागस्थ -----,, ,, ,, ------।।४।।
मित्रावरुणयोर्भागस्थ -----,, ,, ,, ------।।५।।
यमस्य भागस्थ ------,, ,, ,, ------।।६।।
पितृणां भागस्थ ------,, ,, ,, ----- ।।८।।

(देव नारायण भारद्वाज)-'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ०प्र०)

२० दिसम्बर महात्मा वेदभिक्षुः जी की २७वीं पुण्यतिथि पर स्मरण

संकल्प के धनी-साहस की साकार प्रतिमा

अन्तिम सन्ध्या तक बड़ी से बड़ी संकटों की घड़ियां भी कभी विचलित नहीं कर सकीं। किसी ने साथ दिया या नहीं, किन्तु उन्होंने अपने कदम पीछे नहीं हटाए। मस्तक कट सकता है पर बाधाओं-संकटों के आगे झुक नहीं सकता। इस उक्ति को ऋषि दयानन्द के इस पंथानुयायी ने अपने जीवनवृत्त से चरितार्थ किया। दो विदेशी शक्तियों की चुनौती महात्मा जी ने स्वीकार की और अपनी प्रखर लौह लेखनी से उनपर प्रबल प्रहार किया। जबकि अपनो के वार मुस्कराकर झेले।

महात्मा जी जब वेदभिक्षु: बने उसके पूर्व का इतिहास है-श्री भारतेन्द्रनाथ जी साहित्यालंकार के नाम से। सम्भवत: मेरा व उनका जब साक्षात्कार हुआ उसके कुछ ही समय पूर्व हम दोनों व्यक्तियों ने आर्यसमाज की रंगशाला से शिक्षित होकर कार्यशाला में पदार्पण किया था। उत्तर-प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा में मैं महोपदेश बना था तो भारतेन्द्र जी आर्यमित्र साप्ताहिक के सम्पादक पद पर आसीन हुए। स्वभाव से सरल-स्निसार। शीघ्र ही हम एक दूसरे से अभिन्न हो गए।

पं० भारतेन्द्रजी की लेखनी ने आर्यसमाज में नई चेतना की लहर पैदा की। अधिकारी संभले-सभा की नीति बदली, निर्णय लिया-आर्यमित्र दैनिक के रूप में भी निकाला बड़ी धूमधाम से। और लगभग ग्यारह मास तक चला भी। "दैनिक आर्यमित्र" के सम्पादक पं. भारतेन्द्रनाथ जी ने अपनी परिमार्जित लेखनी से जो भी लिखा, आर्यजनता ने उत्साह से स्वीकारा। लेकिन आय कम-व्यय अधिक। आर्यमित्र चलने लगा घाटे पर। सभा के कुछ अधिकारियों तथा अन्तरंग सभा के कुछ सदस्यो में आपसी विद्रोह का स्वरूप उभरा। फिर कैसे सफल होते भारतेन्द्र? यही वे क्षण हैं जहां से मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध पारिवारिक रूप में पनपा और उत्तरोत्तर बढ़ता ही चला गया।

पंडित भारतेन्द्र जी कभी भी निराशा के आगे नतमस्तक नहीं हुए-विजय के लिए संघर्ष-संघर्ष और संघर्ष-! फिर यह जीवन का एक लक्ष्य ही बन गया। आर्य प्रतिनिधि सभा से दूर चले गए तो फिर उधर घूमकर भी नहीं देखा। अपने ही आश्रय और बलबूते पर दयानन्द का जयघोष किया और देश के जनमानस को पुकारा। उनकी आवाज सुनी गई-"जनज्ञान" के नाम से। कोई साथ दे या न दे जिस अभियान पर चल पड़े, स्वयं ही नहीं, पूरा परिवार आहुति देने लग गया। निश्चित किया कि हम अपने रक्त से आर्यसमाज की नींव को सुदृढ़ करेंगे और आगे बढ़ेंगे। आज भी इतना ही नहीं एक हुंकार दी कि आपको कायरों की भांति जीना है या वीरों की तरह मृत्यु का वरण करेंगे। करो या मरो-कार्य वा "साधयेयं देहं वा पातयेयम्" शिवराज विजय का वाक्य जीवन का अंग ही बना लिया।

सफलता ने चरण चूमे-लेकिन कब जब देश भर में फैले उन वीरों ने साथ दिया-जागरण के बिगुल पर ध्यान देकर सभी का स्नेह-सहयोग उत्साह-पूंजी बनकर मिला। क्योंकि जनमानस जानता था। संगठन लक्ष्य नहीं साधन हैं। लक्ष्य है, देश, धर्म और परम्पराएं। उन पर यदि आंच आए तो चुपचाप नहीं सहना है। उनकी लेखन कला में जो ओज था उससे ही भावना स्पष्ट झलकती है। आर्यसमाज जीवित रह सकता है। उनकी शैली ने राष्ट्र के आवाल-वृद्ध नर-नारियों को झकझोर कर रख दिया। इतने वर्षों की कठिन साधना श्रम और सतत् प्रयत्नों का यही सार है कि जनता में जीवन है। सबल नेतृत्व न पाकर वह महर्षि के नाम पर ही स्वयं को जिन्दा रख रही है।

महात्मा जी की तीखी कलम ने जनता को धर्म पर आए संकट को समझने की क्षमता

पण्डित घासीराम

पं॰ घासीराम का जन्म कार्तिक पूर्णिमा सं॰ १९२९ (सन् १८७२) को मेरठ में ला॰ द्वारिकादास के यहां हुआ। शिक्षा आगरा में हुई जहां १८९६ में एम.ए. और एल.एल.बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। जसवन्त कालेज, जोधपुर में दर्शन एवं तर्कशास्त्र के प्रवक्ता नियुक्त हुए किन्तु १९०१ में इस कार्य को छोड़ कर मेरठ आ गये। कुछ काल तक मेरठ में वकालत भी की, किन्तु इसमें आपको विशेष सफलता नहीं मिली। आप आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के वर्षों तक प्रधान रहे। ३० नवम्बर १९३४ को आपका निधन हो गया। पं॰ घासीराम को हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, बंगला और अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान था। सन् १९२४ में मथुरा में आयोजित महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी के आयोजन में महात्मा नारायण स्वामी का सक्रिय सहयोग किया। उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य ऋषि दयानन्द के जीवन के गवेषक पं॰ देवेन्द्रनाथ मुखोपध्याय लिखित बंगला जीवनचरित का अनुवाद एवं सम्पादन है। मुखोपाध्यायजी द्वारा लिखित ऋषि के प्रथम जीवनचरित (१८९४) का हिन्दी अनुवाद पं॰ घासीराम ने किया जो प्रथम बार १९१२ में भास्कर प्रेस मेरठ द्वारा छपा। जब देवेन्द्र बाबू ने अपने एतद् विषयक विशद अनुसंधान के बाद ऋषि जीवन का पुनर्लेखन आरम्भ किया और चार अध्याय पर्यन्त लिखकर दिवंगत हो गये, तो पं॰ घासीराम ने इस सामग्री को काशी से प्राप्त किया और दो खण्डों में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से १९३३ में प्रकाशित कराया। यदि देवेन्द्र बाबू को पं॰ घासीराम सहयोग नहीं मिलता, तो उनके द्वारा संगृहीत ऋषि दयानन्द के जीवनचरित विषयक बहुमूल्य सामग्री पाठकों के समक्ष नहीं आ पाती।

श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालंकृता

श्रीमती सुशीलादेवी का जन्म २६ दिसम्बर १९१० को पश्चिमी उत्तरप्रदेश के जिला बिजनौर के हलदौर कस्बे में हुआ। आपके पिताश्री भवानीप्रसाद जी संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के विद्वान् थे। आर्यसमाज के प्रतिष्ठित नेता थे। आपने 'आर्य पर्व पद्धति' लिखी थी। श्रीमती सुशीलादेवी ने काशी तथा पंजाब यूनीवर्सिटी से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। फोरमन क्रिस्चियन कालेज लाहौर में भी अध्ययन किया। अपने पति पं॰ सत्यकेतु विद्यालंकार का सभी साहित्यिक कार्यों में सहयोग दिया। पेरिस में रहकर फ्रेंच भाषा तथा साहित्य का भी अध्ययन किया। मसूरी नगर पालिका की सदस्या रहीं। देश-विदेश में अनेक यात्राएं कीं। आपने एक फ्रेंच उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद किया। जिसे भारत सरकार ने पुरस्कृत किया। आपका निधन दिल्ली में हुआ।

पृष्ठ १३ का शेष-

प्रदान की। विभीषिका को समझने के लिये उनके छोटे-छोटे ट्रैक्ट नवचेतना प्रदान करते हैं। भारत के गौरवपूर्ण अस्तित्व को मिटाने के लिए जो योजनाएं युक्तिपूर्वक बन चुकी हैं, उधर किसी का ध्यान नहीं है। राजनीति छलना बनी है, और धर्म दुकानदारी। परन्तु महात्मा वेदभिक्षुः जी का कार्य समय को देखते हुए सराहनीय है। विधर्मियों को जो चुनौती महात्मा जी ने दी, उससे सोया देश अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया। स्वास्थ्य बिगड़ने की स्थिति में कलम रुकी नहीं। महात्मा वेदभिक्षुः जी का कार्य समय को देखते हुए सराहनीय है। इस्लाम और ईसाइयत को जो चुनौती महात्मा जी ने दी, उससे सोया देश अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया। स्वास्थ्य बिगड़ने की स्थिति में कलम रुकी नहीं। महर्षि के विचारों को जैसे भी बना समर्थ विचारों द्वारा सोये राष्ट्र को जागृति हेतु दिया। हिन्दू जाति को जगाया वे कहते थे कि मैं तो खाट पर अस्वस्थ पड़ा हूं फिर भी हाथ पैर मार रहा हूं। प्रभु सामर्थ्य देंगे तो यह सब करता ही रहूंगा। स्वास्थ्य बिगड़ा पर सशक्त लेखनी नहीं रुकी। आज वे नहीं है पर उनके लिखे वाक्य पुस्तक, पत्र-पत्रिकाओं एवं भाषणों में निहित हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। साथ ही हमारा बन्धुभाव भी अतीत की भांति जुड़ा रहेगा।

-सच्चिदानन्द शास्त्री

बलिदान-दिवस १९ दिसम्बर

पं. रामप्रसाद बिस्मिल

-डा॰ अशोक आर्य

जिस भारत में आज हम सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इस भारत की गुलामी की बेड़ियाँ काटने के लिये अनेक वीरों और रणधीरों ने अपने जीवन को बलिदान किया। वे हंसते-हंसते फाँसी के फन्दे पर झूल गए या जेलों में सड़ते रहे। अपने आपको आजादी के लिए बलिदान देने वालों में पं. रामप्रसाद बिस्मिल भी एक थे।

पं. रामप्रसाद का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी सं. १९८४ को शाहजहाँपुर के मुरलीधर तिवारी के यहाँ हुआ। वह आरम्भ से ही बुरी संगत में फंसकर बुरी आदतों यथा चोरी, धूम्रपान, भांग पीना, गन्दे उपन्यास पढ़ना आदि में समय नष्ट करने लगे। पकड़े जाने पर तथा सहपाठी के सुयोग्य मार्गदर्शन से इन गन्दी आदतों से छुटकारा मिला। मुन्शी इन्द्रजीत की प्रेरणा से आर्यसमाज के साथ जुड़े तथा नियमित आसन-प्राणायाम भी करने लगे। इससे आत्मविश्वास बढ़ा शरीर बलिष्ठ हुआ। आर्य कुमार सभा के माध्यम से बच्चों को देशभक्ति की प्रेरणा दी जाने लगी। इस सभा में युवकों को आत्मरक्षा हेतु शस्त्र चलाना भी सिखाया जाता था। इसके साप्ताहिक अधिवेशनों में वाद-विवाद भाषण के अतिरिक्त धार्मिक पुस्तकों को पढ़ा भी जाता था। इसी सभा के माध्यम से उन्होंने अपने प्रायः सभी साथियों को देशभक्त बना लिया। इन्हीं दिनों आर्यसमाज के एक संन्यासी स्वामी रामदेव जी से इनका सम्पर्क हुआ। इन्हीं के मार्गदर्शन में आजादी के दीवाने क्रान्तिकारी युवकों का संगठन बनाया गया, इसमें पं. गेंदालाल दीक्षित उनके सहयोगी व मार्गदर्शक बने। इनसे न केवल बन्दूक इत्यादि चलाना सीखा, अपितु स्वाधीनता व क्रान्ति सम्बन्धी अनेक पुस्तकें भी पढ़ीं।

क्रान्ति के लिए भारी धन की आवश्यकता थी, जिससे शस्त्र खरीदे जा सकें। इसलिए काकोरी के पास गाड़ी में जा रहा सरकारी खजाना लूटा गया तथा इस पैसे से शस्त्र खरीदकर क्रान्ति की गतिविधियाँ तेज कर दीं। सरकार के लाख यत्न करने पर भी वह न पकड़े जाते, यदि उनमें से ही एक साथी दुष्ट बनवारी लाल देशद्रोही बनकर भेद न खोलता। परिणामस्वरूप केवल एक चन्द्रशेखर आजाद को छोड़कर सभी दस से दस देशभक्त दीवाने पकड़े गये। पुलिस अमानवीय अत्याचार करके भी कुछ उगलवा न सकी। न्याय का ढोंग अवश्य रचा गया तथा पूर्व निर्धारित दण्डस्वरूप फांसी की सजा सुना दी गई।

जेल में फांसी की कोठरी में भी वीर बिस्मिल ने अपनी दिनचर्या को बनाए रखा। प्रतिदिन प्रातः उठना, दण्ड-बैठक निकालना, सन्ध्या-हवन इत्यादि नियमित दिनचर्या थी। इतना ही नहीं, इस अवसर पर उन्होंने अपनी आत्मकथा भी उन्हीं दिनों लिख डाली। उनकी यह आत्मकथा है, जो हिन्दी की न केवल श्रेष्ठ आत्मकथाओं में से एक है, बल्कि फांसी से मात्र तीन दिन पूर्व किस प्रकार जेल से बाहर भेज दी गई, यह विदेशी भी देखकर भोंचक्के रह गए। १९ दिसम्बर १९२८ में फांसी के समय जब अन्तिम इच्छा पूछीं गई तो वीर बिस्मिल ने दहाड़ते हुए कहा कि "अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो, यही मेरी अन्तिम अभिलाषा है।" वे हंसते हुए स्वयं रस्सी गले में डाल विदा हुए। जाते-जाते भी सन्देश दे गए कि कट-कटकर मरें, फिर भी सन्ध्या-हवन आदि दिनचर्या को न छोड़ें। उनको सच्चे मन से यदि हम याद करना चाहते हैं, तो उनकी अन्तिम इच्छा की पूर्ति के लिए अपने जीवन को यज्ञमय बनाते हुए बुराईयों के नाश के लिए डट जावें। ○○

महात्मा वेदभिक्षुः सचमुच महान-आत्मा थे

-डा॰ ज्ञानचन्द

एक परम आदर्शमय अनुपम जीवन

महात्मा वेदभिक्षुः (पूर्व भारतेन्द्रनाथ) को मैंने इन चर्मचक्षुओं से तो कभी नहीं देखा, परन्तु मेरे अन्तर्चक्षुओं में उनकी एक चित्र विचित्र छवि निर्मित हुई है और वह सतत् अप डेट होती जा रही है। उत्तम और विशालतर होती वह छवि स्वयं में अनेकों दिव्य और असाधारण प्रसंग सजाए हुए है। वही अपने अन्तर्हृदय में विजड़ित छवि मैं जनज्ञान के पाठकों के समक्ष रख रहा हूँ। जनज्ञान के प्रबुद्ध अध्येताओं से अपनी अनुभूति व प्रभाव शेयर करना, बाँटना चाहता हूँ।

एक प्रसिद्ध कहावत है कि किसी सफल व्यक्ति की अनुपम, बेमिसाल सफलता का रहस्य जानना हो तो उसकी पत्नी से मिलो। प्रत्येक महान व सफल व्यक्ति के पीछे स्त्री का हाथ होता है। यह कहावत महात्मा वेदभिक्षुः के जीवन में तो सत्य हुई ही परन्तु इस कहावत का एक अकथित अज्ञात पक्ष यह है कि वेदभिक्षुः की महानता का अनुमान लगाना हो, उनकी महानता को तोलना हो तो उनकी आदर्श पत्नी, उनका जीवन्त स्मारक आदरणीया पंडिता राकेशरानी के दर्शन करो। महात्मा वेदभिक्षुः की अप्रतिम और अभूतपूर्व सफलता है कि वे अपनी वदान्यता, उदारता, कर्मठता, लगन, वेदप्रेम, तत्परता और अत्यन्त उच्च शीलगुण पूर्णतः अपनी पत्नी में सम्प्रेषित कर गए।

कुछ लोग महान होते हैं, और कुछ बन जाते हैं। महात्मा वेदभिक्षुः उत्तम पवित्र परिवार में श्रेष्ठ सात्विक व सुसंस्कृत प्रभाव व पवित्र संस्कार लेकर पैदा ही हुए थे। उन्हीं का उन्होंने तत्परतापूर्वक जीवन भर विकास और विस्तार किया। वे महान बन नहीं गए, वे पैदा ही महान हुए थे। उस महानता की सुगन्ध-सौरभ को ही उन्होंने सम्पूर्ण जीवन भर फैलाया, चारों ओर बिखेरा। वे सशरीर आज नहीं हैं परन्तु उनके स्वभाव, कर्म, विचार और कृर्त्तत्वों की सुगन्ध सतत् फैलती रही है और आज भी फैलती जा रही है।

वेद के प्रति अनन्य और अभंग प्रेम, विख्यात वेदोद्धारक महर्षिदयानन्द और उनके दिव्य अवदान के प्रति अखण्ड तैलधारावत् परम प्रेम स्वरूप भक्ति, जन-जन के मति-जागरण के प्रति अहर्निश अनवरुद्ध, कर्मठता और कर्म संलग्नता उन्हें एक असाधारण और अनुदाहरणीय व्यक्ति प्रमाणित करती है। उनके इन गुणों का परिचय उन लोगों का पूरा-पूरा रहा है। और आज भी है, जो लोग कि उनके सम्पर्क में आए, उनको देखा और उनके वचन सुने। उन्हीं के मुख से उनका गुणकीर्तन सुना है।

हिन्दी भाष्य वेद के प्रकाशन में उनकी स्वाकीय साधनहीनता और लोगों की उदासीनता के बावजूद चारों वेदों का मूल सहित हिन्दी अनुवाद के मुद्रण का कार्य प्रायः एक असम्भव सा ही कार्य था पर इस लगन वाले साधन के अपने संकल्प को सफल करके दिखाया। यही एक कार्य महात्मा जी को सत्यलोकान्तरों में जा पाने की सुविधा दिलाता है। लेख, कविता व समालोचना लिखने में सिद्धहस्त वेदभिक्षुः ने अपनी प्रतिभा व ज्ञान को छिपाकर नहीं रखा। उन्हें दीक्षा दी गई कि भारत के उद्धार का कार्य व वेद के प्रचार-प्रसार का कार्य तुम्हें करना होगा। अपना तन-मन-धन सारा जनहित समर्पित कर देने वाले महात्मा के यश का वर्णन, कीति का बखान अत्यन्त दुरुह कार्य है। अनेक विषयों का जानकार, अनेक प्रमिव्यक्ति पूर्ण विधाओं के अभ्यासक महात्मा वेदभिक्षुः का अनुगमन-अुनसरण भी एक अत्यन्त जाटिल और प्रायः अशक्य कार्य है। धनाभाव, जनभाव, व्याधिपूर्ण शरीर, अनेक प्रकार की अन्य व्यवहारिक अड़चनें-सबके बावजूद अपने समस्त

शेष पृष्ठ २४ पेज पर

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द : कुछ श्रद्धासुमन

नवभारत के पथप्रदर्शक

स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रथम परिचय का सौभाग्य मुझे भागलपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के समय प्राप्त हुआ। उस समय तक स्वामी जी ने सन्यास नहीं लिया था। और महात्मा मुंशीराम जी के नाम से ही प्रसिद्ध थे। गुरुकुल की स्थापना करके राष्ट्रीय-पद्धति से शिक्षा देना उन्होंने बहुत पहले ही आरम्भ कर दिया था। आपकी हिन्दी प्रेम और हिन्दी सेवा को देखकर ही सम्मेलन में सभापति के पद पर आपका निर्वाचन किया था। सम्मेलन को जिस उत्तमता के साथ आपने निभाया, वह हमें आज भी अच्छी तरह याद है। स्पष्टवादिता और निर्भीकता के वे मूर्तिमान् स्वरूप थे। जो लोग काले कानून के विरोधी आन्दोलन के समय दिल्ली के चांदनीचौक में मौजूद न भी थे, उनके हृदयपट पर भी स्वामी जी की यह निर्भीक मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है। उस समय स्वामी जी ने अंग्रेजों की गोलियों और संगीनों के सामने अपना सीना खोलकर निर्भीकता तथा उच्चता का प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित किया। उनकी उस शुद्ध तथा उच्च भावना ने जामा मस्जिद के मिम्बर से उनसे उपदेश करवाया और हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढ़ता, सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता और निर्भीकता के कारण आततायी के हाथों से शहादत प्राप्त की। भारत आधुनिक इतिहास में स्वामी जी के साक्षात् दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ उनके लिए स्वामी जी के जीवन वृतान्त को पढ़ना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना करके ब्रह्मचारियों के शिक्षण का ही प्रबन्ध नहीं किया, उनका सारा जीवन ही देश के लिये एक महान गुरुकुल का काम कर रहा है। और करता रहेगा।

-डा. राजेन्द्र प्रसाद

बलिदान की मूर्ति

स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोलकर सामने जाते हैं और कहते हैं-लो चलाओ गोलियां। उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।

-सरदार बल्लभभाई पटेल।

स्फूर्ति के स्रोत

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्य-स्मृति का सम्मान करने में मैं हृदय से आपके साथ हूं। उनका उत्कृष्ठ उदाहरण युवक पीढ़ियों के लिये स्फूर्ति का ऐसा कष्ट सहन की भावना का विकास करने वाला और कर्तव्य-पालन में उत्साह और साहस का संचार करने वाला होगा।

-मदन मोहनमालवीय

दलितों के उद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द

इस जीवन में बहुत कम ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें मैं उतना प्रेम करता हूं जितना स्वामी श्रद्धानन्द जी को करता था। हमारी स्वच्छ, निर्मल तथा प्रगाढ़ मैत्री में कदाचित् ही धुंधलापन आया हो। उनके उच्च चरित्र की महत्ता थी जिसने उनके प्रति मेरे प्रेम को सच्चा और गहरा बनाया। यह जानकर मैं बहुत प्रसन्न होता था कि स्वामी जी भी मुझसे प्रेम करते हैं। इस बलिदान-जयन्ति के अवसर पर श्रद्धानन्द ट्रस्ट के मंत्री जी के अपील-मुझ तक महात्मा गांधी जी के साथ वर्धा आश्रम में ठहरे हुए पहुंची है। आज मैं २० वर्ष पूर्व के उस दिन की ओर आंख उठाकर देखता हूं जब मैंने पहले-पहल महात्मा गांधी से गुरुकुल हरिद्वार के उस तपस्वी महात्मा मुंशीराम जी के सम्बन्ध में बातचीत की थी। दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में जब हम आपस में बातचीत कर रहे थे तो महात्मा गांधी गुरुकुल और महात्मा मुंशीराम जी के प्रति प्रकट किये गये मेरे उत्साह पर बीच-बीच में मुस्करा उठते थे। महात्मागांधी उस

समय की प्रतीक्षा में थे जबकि वे गुरुकुल को देखने का अवसर प्राप्त करेंगे। हम दोनों ने यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि सम्भव हुआ तो हम दोनों एक ही साथ मुंशीराम जी से भेंट करेंगे। इस जयन्ती के अवसर पर जो सन्देश मैं देना चाहता हूं, वह सन्देश प्रत्येक आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य और उसके द्वारा शेष भारत तक पहुंचेगा। मैं यह भी चाहूंगा कि यह सन्देश समुद्र पार समस्त भारतवासियों तक पहुंचे। भारत के बाहर आर्यसमाज में मेरे बहुत से दोस्त हैं, जो मुझे इसलिए प्रेम करते हैं कि मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी को जानता और उन्हें प्रेम करता था। मेरा सन्देश यह है कि स्वामी श्रद्धानन्द एक अत्यन्त स्निग्ध और उदार हृदय रखते थे। जब कभी गरीबों, दुखियों और दलितों के नाम पर अपील की जाती थी तो वह उनके लिए अपरिहार्य हुआ करती थी। इसलिए जब-जब बलिदान जयन्ती आये तब-तब उनके सच्चे प्रेमियों का ध्यान गरीबों की ओर जिन्हें वह प्यार करते थे, जाना चाहिए। **-सी. एफ. उन्ड्रयूज**

स्वामी श्रद्धानन्द की जय

स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्यसमाज की महात्मा पार्टी के नेता थे। वह स्वयं उच्च वर्ग के हिन्दुओं में से थे। परन्तु उन्होंने दलित-जातियों को उच्च जाति के अत्याचारों से मुक्ति में किंचित मात्र भी संकोच नहीं किया। उन्होंने सारा जीवन मनुष्य मात्र की सेवाओं के लिये अर्पित किया हुआ था। वह सच्चे हिन्दू थे। उन्होंने अस्पृश्यता और सामाजिक विषमता जैसी उन अहिन्दू दुर्भावनाओं तथा रीति-रिवाजों को, जो कि मध्यकाल के ब्राह्मणों के अज्ञान के कारण पैदा हो गये थे, अपने हृदय से निकाल दिया था। कुछ समय के लिए उन्होंने कांग्रेस मैन के रूप में भी काम किया। परन्तु अन्त में उन्होंने अपना सारा जीवन हिन्दू-जाति के सामाजिक और धार्मिक सुधार करने में लगा दिया। वह वैदिक संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ थे। उन्होंने अपने जीवन का चरम भाग दलित जाति के उद्धार के काम में अर्पित किया था। वे वैदिक धर्म के निर्भीक प्रचारक थे। पौराणिक मूर्तिवाद के प्रचारकों ने हिन्दू-समाज में छुआछूत की प्रथा को प्रचलित कर दिया था। यह छुआछूत का धर्म घृणा का धर्म है। ऐसा धर्म वैदिक धर्म की पवित्र भावनाओं के प्रतिकूल है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने छुआछूत के धर्म की जी जान से निन्दा की। वेद सार्वभौम मानव-धर्म के स्रोत हैं। उन्होंने वैदिकधर्म की विश्वव्यापी शोभा तथा आभा को संसार में स्थापित करने के लिए भागीरथ प्रयत्न किया और अन्तिम क्षण तक लगे रहे। हमें भी उद्देश्य के लिए इस आन्दोलन-यज्ञ में अपना-अपना भाग समर्पित करना चाहिये, जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति सदा चिरंजीवी रहे।

-लालाहरदयाल

महान् हुतात्मा का हिन्दू-जाति को सन्देश

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू-जाति पर तथा हिन्दुस्तान की बलिवेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी। उनका सम्पूर्ण जीवन और विशेषकर उनकी शानदार मौत हिन्दू-जाति के लिये एक स्पष्ट सन्देश देती है। हिन्दू-राष्ट्र के प्रति हिन्दुओं का क्या कर्तव्य है-इसे मैं स्वामी जी के अपने शब्दों में ही रखना चाहता हूं। सन् १९२६ के २९ अप्रैल के "लिबरेटर" पत्र में वे लिखते हैं-"स्वराज्य तभी संभव हो सकता है, जब हिन्दू इतने अधिक संगठित और शक्तिशाली हो जाएं कि नौकरशाही तथा मुस्लिम धर्मोन्माद का मुकाबला कर सकें।" उपर्युक्त उद्धरण से हिन्दू-जाति की तीव्र मांग का पता चल सकता है और विशेष ऐसे नाजुक समय में जबकि इसमें चारों ओर से सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है और यही सब दुर्घटनाओं की एकमात्र रामबाण औषध है। यदि हिन्दू-जाति को ज्ञान और सम्मान से जीवित रहना है तो उसे यही पाठ याद करना होगा। हे हिन्दुस्तान के हिन्दुओं! यदि तुमने उस महान् हुतात्मा के बहुमूल्य आदेश और सम्मति की अवहेलना की तो तुम्हारा क्लेश और नाश निश्चित ही है। हां, यदि तुम इसे क्रियात्मक रूप दे सके तो तुम उस भयंकर युद्ध में अवश्य विजयी होगे, जो युद्ध चारों ओर से इस जाति पर असंख्य दुर्घटनाओं के साथ हो रहा है। तभी तुम जातीय गौरव को स्थापित कर सकोगे और हिन्दू-राष्ट्र को इस मर्त्यलोक में तीव्र ज्योति से चमकता हुआ राष्ट्र बना सकोगे। **-वीर विनायक दामोदर सावरकर**

प्रखर राष्ट्रभक्त लाला लाजपतराय

-डा॰ भाई महावीर (पूर्व राज्यपाल)

इस युग में देश की श्रद्धा-विभोर जनता ने दो महामानवों को पंजाबकेसरी की उपाधि से अलंकृत किया है। उनमें से प्रथम थे महाराज रणजीतसिंह। १८ दिसम्बर १८५४ को जन्म हुआ मुन्शी राधाकिशन का, जिनकी प्रथम सन्तान के रूप में पंजाब को अपना दूसरा केसरी प्राप्त हुआ। अपने देश और धर्म के लिए जिस प्रकार का स्वाभिमान, अपने हिन्दूपन के लिए जितनी तड़प और उसका अपमान अथवा हानि होते देखकर जितनी तीव्र प्रतिक्रिया लाला लाजपतराय को जीवन भर होती रही, उसे देखकर यह आश्चर्यजनक लगता है कि उनके पिता अपनी आधी उम्र तक केवल नाम के हिन्दू थे। नहीं तो रमजान के दिनो में रोजे रखने में, हर रोज पाँच बार नमाज पढ़ने में और कुरान आदि मुस्लिम ग्रन्थों के पारायण में शायद ही कोई मुसलमान उनसे बाजी ले पाता होगा। यह उनके उस्ताद का प्रभाव था, उनके अनेक सहपाठी विधिवत् इस्लाम स्वीकार कर चुके थे।

मुस्लिम संस्कृति में पोषित पिता-

मुन्शी राधाकिशन कलमा पढ़कर बाकायदा मुसलमान नहीं बने। इसका श्रेय बहुत अंश में उनकी पत्नी गुलाब देवी को ही है। मुन्शी जी ने अपने मुसलमान मित्रों को घर पर बुलाकर उनकी इच्छानुसार कई बार मांसादि का भोजन करवाया और कभी-कभी उनके यहां से पका हुआ भोजन लाकर खाया। इसने उस साध्वी नारी के जीवन को अत्यन्त दु:खित बना रखा था और कई-कई दिन तक उसने गम के सिवा कुछ न खाकर और आंसू पीकर काटे थे। गोद के शिशु पर उसने अपनी ममता भी उंडेली और उसी पर अपनी सारी आशाएं भी केन्द्रित कीं। परन्तु सारी व्यथा सहकर भी कभी उसने उन्हें छोड़ जाने की कल्पना तक नहीं की। एक बार तो मुन्शी जी ने इस्लाम की दीक्षा लेने का फैसला कर ही डाला और पत्नी व बालक को लेकर मस्जिद में जा पहुंचे। परन्तु सती नारी के अन्तर्मन की पीड़ा उसकी आंखों की मूक वाणी से कुछ ऐसी प्रकट हुई कि बाहर सीढ़ियों पर ही बालक लाजपत चीखकर रोने लग पड़ा। बस, इस रुदन से मुन्शी राधाकिशन के दुर्बल मन का अस्थिर निश्चय डगमगा गया और वे लौट आए। आगे चलकर लाला जी ने शुद्धि का जो कार्य करना था उसका भी श्रीगणेश जैसे साक्षात् अपने पिता से शैशवास्था में ही उन्होंने कर दिया।

विद्यार्थी जीवन-

लाला लाजपतराय को पढ़ने की लगन पिता से विरासत में मिली, परन्तु गरीबी के कारण उनका विधिवत् शिक्षण न हो पाया। जहाँ-जहाँ उनके पिता अध्यापक रहे, प्राय: उन्हीं स्कूलों में वे पढ़े। शिक्षाकाल में ही वे दो-तीन बार लाहौर आए तो उन्हें दो साथी मिले-गुरुदत्त और हंसराज। कुछ समय पूर्व ही वहाँ आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी और वे दोनों उस रंग में रंगे हुए थे। इस मैत्री से और इसके द्वारा आर्यसमाज के जो संस्कार लाजपतराय को मिले, उनसे उन्हें देश-जाति की सेवा का संकल्प प्राप्त हुआ। हंसराज में जो सरल सेवा की वृत्ति थी, गुरुदत्त में जो बौद्धिक प्रतिभा थी और लाजपतराय में जो उग्र देश-प्रेम तथा करुणा का सागर था, उनके मिश्रण से ये त्रिमूर्ति आर्यसमाज की नींव बन गई। गुरुदत्त तो अकाल मृत्यु के ग्रास बने, परन्तु लाला लाजपतराय और महात्मा हंसराज की मैत्री आजीवन रही।

समाज सेवा-

लाजपतराय अत्यन्त भावुक प्रकृति के थे। स्वभाव की भावना प्रधानता के कारण उन्हें जहाँ कहीं कष्ट दिखाई पड़ा, चाहे वह राजपूताना का अकाल था, चाहे कांगड़ा का भूकम्प, वहीं

पहुंचे। और जन-जन के कष्ट को कम करने में जुटे। पैसा उन्होंने कमाया पर उसमें मन नहीं लगाया, उसे जीवनपूर्ति का प्रमुख कार्य नहीं बनाया। यही नहीं, उन्होंने अन्याय के विरुद्ध सदा आवाज उठाई। कौन कितना बड़ा है, इसकी परवाह किए बगैर उन्होंने अन्यायपूर्ण बात का विरोध किया।

मुस्लिम कांग्रेस अध्यक्ष को उत्तर-

ऐसी ही एक प्रसंग था, जब १९२३ में काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से मौलाना मुहम्मद अली ने कहा था कि हिन्दू अपनी अछूत जाति की समस्या हल नहीं कर सकते। इसलिए क्यों न उन्हें आधा-आधा बांट लिया जाये! यह तर्क जितना लचर और निर्लज्ज था, उतना ही हिन्दू भावना पर चोट करने वाला भी था। बाकी लोग भले ही इस अपमान को पी सके, परन्तु लालाजी की प्रतिक्रिया बहुत तीव्र थी- "यह हमारा घरेलूप्रश्न है। किसी और के दखल की इसमें जरूरत नहीं। हिन्दू ही छूआछूत की समस्या का हल करेंगे। फिर अछूत जातियाँ क्या ढोर पशु हैं, जिनके इस तरह बंटवारे की बात की जा रही है?" हिन्दू भाव उनके हृदय में क्यों रहता था? इसका उत्तर उन्हीं के शब्दों में यह है-"यदि स्वराज्य लेने के लिए हमारी आतुरता हमें धर्म बदलने की प्रेरणा दे और हम ईसाई बनें, तो यह एक प्रकार की स्वतन्त्रता अंग्रेज हमें देंगे। परन्तु स्वराज्य तो सच्चे अर्थों में तभी होगा, जब हम अपने स्वरुप में स्थिर रहकर राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करें। हमारा स्वरूप है हमारा धर्म, हमारी संस्कृति और हमारी अपनी देशगत, जातिगत भावनाएं। उन्हें त्याग कर मिलने वाला स्वराज्य, स्वराज्य नहीं है।"

जब वे कांग्रेस में रहे तो ऐसे उत्साह के साथ जो सरल व सच्चे हृदयों में ही हो सकता है और जो हर कदम पर हानि-लाभ का विचार करने का अभ्यस्त नहीं होता। वह "आग से खेलता है तो झुलस जाने के लिए तैयार भी रहता है।" और इसमें कोई दो मत नहीं कि ब्रिटिश सरकार के साथ संघर्ष में इन प्रश्नों पर उलझने के अवसर उनके लिए अनेक आए।

हिन्दूपन का भाव-

राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण से लाला लाजपतराय के जीवन का दूसरा चरण प्रारम्भ होता है। कांग्रेस की स्थापना के समय से ही अलीगढ़ के सरसैयद अहमद ने मुसलमानों को उससे अलग रखने का झण्डा उठा लिया था।

अनेक लेखों के उत्तर में अनेक पत्र उन्हीं के पुराने विचारों के हवाले से छपे। चाहे वे पत्र गुमनाम थे, परन्तु अधिक दिन तक यह छिपा न रहा कि वे किस लेखनी का प्रसाद थे। उनके कारण लाला जी की जो प्रसिद्धि हुई, उसका परिणाम यह था कि कांग्रेस के समय उनका स्वयं स्टेशन पर स्वागत किया और श्री ह्यूम ने उन चिट्टियों का स्वयं सम्पादन करके पुस्तकाकार में प्रकाशित किया। लाला जी सम्भवत पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने तब अंग्रेजी में काम करने वाली कांग्रेस के अधिवेशन में हिन्दी में भाषण दिया। उनकी असाधारण वक्तृत्व शक्ति ने उन्हें शीघ्र ही संस्था की चोटी के नेताओं की श्रेणी में ला खड़ा किया।

बंग-भंग आन्दोलन में-

और तब १९०५ में आया बंग-भंग का वह निर्णय, जिसके विरोध में 'लाल-बाल-पाल' की त्रिमूर्ति गरम दल के रूप में देश के उद्‌गारों का प्रतिनिधित्व करने लगी। "प्रिंस ऑफ वेल्स" के स्वागत के प्रश्न पर बनारस अधिवेशन में कांग्रेस के नरम और गरम दलों में टक्कर हो गई। इसके बाद जागृति की जो लहर देश भर में चली वह मीठे-मीठे भाषणों, सरकार के नाम भेजे गये आवेदन पत्रों और 'गॉड सेव द किंग' के गायन की मर्यादाओं को ध्वस्त करके 'स्वराज्य, स्वदेशी और बहिष्कार' के मन्त्रों के रूप में चारों दिशाओं में व्यापक हो गई। इस नए जागरण के निर्माता यदि महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक और इनका 'केसरी' थे, तो पंजाब में लाजपतराय और उनका 'पंजाबी' तथा बंगाल में विपिनचन्द्र पाल और अरविन्द घोष के सम्पादन में चलने वाला 'वन्देमातरम्'। लाला

जी की वाणी में ओज तो था ही, अब वह आग बरसाने लगी। नौकरशाही इस ताक में रहने लगी कि उनको किस प्रकार रास्ते से हटाए।

तभी पंजाब में नहरी आबादियों के कानून के विरुद्ध आन्दोलन चला। सही या गलत यह धारणा कृषकों में घर कर गई कि अंग्रेज कानून द्वारा उत्तराधिकार के नियम को बदलने की तैयारी में है। लाला जी आन्दोलन के समर्थक तो थे, पर उसमें सक्रिय नहीं हुए। किन्तु न चाहते हुए भी वे खिंचकर उसमें उलझ ही गए। लायलपुर की एक सभा में वे अध्यक्ष बनाए गए। वहीं भगतसिंह के चाचा अजीतसिंह ने भाषण दिया, जो काफी विद्रोहपूर्ण था।

नरम और गरम दल-

अजीतसिंह और लाजपतराय दोनों को १८१८ के पुराने रेगुलेशन के अधीन निर्वासन का दण्ड दिया गया। ६ महीने की कैद के बाद लाला जी मांडले जेल से रिहा होकर लौटे। इस कैद ने उनकी कीर्ति को दिग्दिगन्त तक फैला दिया। उसके शीघ्र बाद ही सूरत कांग्रेस का अधिवेशन था। जनता के हृदयों पर तो लाला जी का शासन था और तिलक भी चाहते थे उन्हीं को अध्यक्ष बनाना। परन्तु लाला जी दलबन्दी में पड़ना न चाहते थे। अधिवेशन तो मार-पिटाई और उछलते जूतों की गड़गड़ में समाप्त हो गया। साथ ही स्पष्ट हो गया कि नरम और गरम दल वालों के रास्ते बिलकुल फट गये हैं। कुछ काल के लिए उन्होंने फिर आयर्ससमाज के क्षेत्र को अपना लिया। १९१४ में वे इंग्लैंड चले गये। वे वहीं थे जब महायुद्ध शुरू हो गया।

युद्ध नीति-

अब भारतीयों और कांग्रेस के सामने यह प्रश्न था कि उनकी नीति युद्ध के बारे में क्या हो? गांधी जी बिना किसी शर्त के सरकार की सहायता करने के पक्ष में थे। लाला जी का दृष्टिकोण क्या था? "मैं युद्ध में अंग्रेजों की सहायता के विरोध का आन्दोलन चलाने के पक्ष में तो नहीं था। मैं तो उनकी युद्ध नीति का समर्थन करने को भी उद्यत था, यदि उसमें हमारे युवकों को भी सेना में प्रतिष्ठित पदों की प्राप्ति, शस्त्रास्त्र के पयोग तथा युद्धकला में निपुणता प्राप्त करने का अवसर मिल जाता। सरकार ने ये दोनों बातें अस्वीकार कर दीं। इस दशा में मैं बिना किसी शर्त के युद्ध में भर्ती होने को तैयार नहीं था। परन्तु मेरे देश के शिक्षित नेताओं का मत इससे भिन्न था।" लाला जी व तिलक जी दोनों का दृष्टिकोण एक ही था जो कि गांधी जी की तुलना में यथार्थवादी भी था, लाला जी और तिलक जी का दृष्टिकोण! इसी दूरदर्शिता ने लाला जी को देश न लौटने तथा कहीं नजरबन्द हो जाने के स्थान पर बाहर रहने के लिए प्रेरित किया। वे फरवरी १९२० तक नहीं लौटे।

> यदि स्वराज्य लेने के लिए हमारी आतुरता हमें धर्म बदलने की प्रेरणा दे और हम ईसाई बनें तो यह एक प्रकार की स्वतन्त्रता अंग्रेज हमें दें गे। परन्तु स्वराज्य तो सच्चे अर्थों में तभी होगा जब हम अपने स्वरूप में स्थिर रहकर राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करें। हमारा स्वरूप है हमारा धर्म, हमारी संस्कृति और हमारी अपनी देशगत, जातिगत भावनाएँ। उन्हें त्यागकर मिलने वाला स्वराज्य, स्वराज्य नहीं है।
>
> **लाला लाजपतराय**

निरंकुश लाठियाँ-

लौटे तो ब्रेडला हाल के पीछे मैदान में उनका पहला भाषण हुआ। उसमें उनकी अंग्रेजों को चुनौती थी-'खिचड़ी पक रही है! खाएंगे न खाने देंगे। न सोएंगे, न सोने देंगे! मंजिल पर पहुंचे बिना चैन न लेंगे।" और सच में वह महापुरुष न सोया न उसने प्रतिपक्षी को सोने दिया, जब तक निरंकुश शासकों की लाठियों ने उसे सदा की नींद न सुला दिया। उन लाठियों के विषय में लाला जी

के शब्द किसी भी क्रांति की चिनगारी से कम ज्वलन्त नहीं थे-**"हम पर की गई एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में एक-एक कील सिद्ध होगी!"** उन्होंने यह भी कहा कि "यदि मैं मर गया और जिन नवयुवकों को मैंने काबू में रखा हुआ था, उन्होंने शातिपूर्ण उपायों के अतिरिक्त अन्य मार्ग ग्रहण करने का निश्चय किया, तो मेरी आत्मा उनके कार्य को आशीर्वाद देगी।!" अपने निर्वाण समय के निकट मद्रास समुद्र तट पर हुई एक विशाल सभा में लाला जी ने कहा, "अब जब जीवन की संध्या होते देखता हूँ और सिंहावलोकन करता हूँ तो खेद होता है कि जिस माता की कोख में जन्मा, जिसकी गोद को मलमूत्र से अपवित्र किया, जिसका स्तन पिया, वह माता बन्धन में ही है और मेरे जीवन के सूर्य का अस्ताचल की ओर प्रयाण तीव्रगति से हो चला है। माता के बन्धन तोड़ने के लिए मैंने कुछ नहीं किया, इसी की तीव्र वेदना मुझे व्यथित करती रहती है।" आज जब माता के बन्धन टूट चुके हैं, लाला लाजपतराय और उनके अन्य साथियों के आदर्श कहां तक पूरे हो रहे हैं? आज की राजनीति की ऊहापोह में मन खोजता है ऐसे साहसी व उदात्त चरित्रों को, जिन्होंने आदर्शवाद से प्रेरित होकर जीवन को यज्ञ बनाया हो, जिनके श्वासों में देशप्रेम हो, जिनकी धड़कनों में राष्ट्र की व्यथा हो। कहाँ हैं ऐसे राजनीतिज्ञ जो स्वयं को उन महापुरुषों के उत्तराधिकारी कह सकें, जिन्होंने पत्थर बनकर स्वातन्त्र्य मन्दिर की नींव को भरा था? (दिव्य युग से साभार.....)

किसानों इस पर भी विचार करों

१. फसलों का मूल्य व्यापारी या सरकार क्यों तय करे, क्या यह अधिकार कृषक का नहीं है?
२. व्यवसाय और नौकरी में अंग्रेजी की अनिवार्यता कृषकों तथा ग्रामीण युवकों को नौकरियों से दूर रखने का षड़यन्त्र नहीं है?
३. कृषि आधारित उद्योग नगरों में क्यों हैं? उन्हें ग्रामों में स्थापित क्यों नहीं किया जाता?
४. भारतीय परम्परागत जो कृषि से जुड़े हैं, उन पर विदेशी कम्पनियों कार्य कर रही हैं, गावों में उनका विकास क्यों नहीं होता?
५. आरक्षण का आधार भूमि का स्वामित्व होना चाहिये। कृषकों और भूमिहीन कृषकों को आरक्षण की व्यवस्था क्यों नहीं, यह जातिवाद के विष का उपचार भी है।
६. ग्रामों के विकास के लिये पृथक योजना आयोग की स्थापना क्यों नहीं की गई?

कृषि के लिये एक हजार करोड़ जबकि मदरसों के लिये १२ हजार करोड़, अल्पसंख्यक आयोग के लिये ६ हजार करोड़, साथ ही बजट का १५ प्रतिशत मुस्लिमों के लिये, किसानो को सहायता पाने के लिये मुस्लिम होना आवश्यक है? छद्म धर्मनिरपेक्ष दल किसानों का भला नहीं कर सकते। किसान पिटा है केवल इन मुखौटेबाज नेताओं के कारण ही।

आइये! हिन्दू महासभा के साथ किसान स्वाभिमान अभियान से जुड़ें

चन्द्र प्रकाश कौशिक	मुन्ना कुमार शर्मा	वीरेश कुमार त्यागी	आचार्य मदनसिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री	सं॰ मंत्री

हिन्दू महासभा, हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग नई दिल्ली-१

पुण्य तिथि पर विशेष

भाई परमानन्द जी आज के सन्दर्भ में

-मुन्ना कुमार शर्मा

देश की राजनीतिक स्थिति पर दृष्टि जाती है, तो भाई परमानन्द जी की याद आती है। उन्होंने यह चित्र बरसों पहले ही देख लिया था। आज देश में जो साम्प्रदायिकता उभर रही है, यह उन्हीं घटनाओं के विकासक्रम की चरम सीमा है, जिनकी ओर भाई जी राष्ट्र का ध्यान बार-बार आकृष्ट करवाते रहे। उन्हें इस संसार से गये ३५ वर्ष से भी अधिक समय हो गया और बात वहीं की वहीं हैं। महात्मागांधी ने अपना पूर्ण जीवन हिन्दू-मुसलमान मैत्री हेतु लगा दिया। इस ऐक्य को आधार मानकर ही पाकिस्तान बनने दिया गया। अन्त में इसी मैत्री की बलिवेदी पर महात्मा जी की आहुति चढ़ी।

साम्प्रदायिक स्थिति का नजारा आज भी वही है जो १९३० में था। कांग्रेस ने उन दिनों नेहरु रिपोर्ट और जिन्ना की १४ माँगों को स्वीकार कर लिया था। १९४२ में साम्प्रदायिक निर्णय की घोषणा की गई थी, जिसके आधार पर ही आगे चलकर पाकिस्तान की नींव रखी गई। १९४२ में किप्स मिशन आया। उसी के प्रस्तावों के सन्दर्भ में राजा जी का फार्मूला प्रस्तुत किया गया। १९४५ में हिन्दू और मुसलमानों के प्रतिनिधित्व प्रायः समान अधिकार मान्य लिया गया। १९४६ में कैबीनेट मिशन आया और १९४७ में भारत विभाजन हो गया। यदि हिन्दुओं ने भाई जी की आवाज सुनी होती और उनके प्रति अपमानजनक उपेक्षावृत्ति न अपनाई होती, तो भारत का इतिहास कुछ और होता। बताया जाता है कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में गाँधी जी बहुत ही दुखी थे। यद्यपि देश स्वाधीन हो गया था, परन्तु इससे उन्हें हार्दिक उल्लास नहीं हुआ। विभाजन के समय भीषण रक्तपात हुआ और अमानुषिक उत्याचार हुए। हिन्दुओं और मुसलमानों का परस्पर द्वेष और भी अधिक हो गया। परन्तु यह महसूस नहीं किया, कि जो नीति गांधी जी की रही। इसका परिणाम इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो सकता था। गाधीं जी के निकट सूत्रों ने एक बार बताया था कि गाँधी जी को यह महसूस हो गया था कि भारत कांग्रेस के प्रयत्नों से स्वतन्त्र नहीं हुआ। कांग्रेस के सब प्रयत्न १९४२ में विफल हो चुके थे और 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन कुछ ही दिनों में कुचल दिया गया था। जब अंग्रेज इस देशव्यापी आन्दोलन को इस सरलता से दबा सके, तो इसके बाद के आन्दोलनों को भी कुचलकर रख सकते थे। १९४६ में विश्व युद्ध में जर्मनी और जापान के पराजित होने के समय भारतीय स्वाधीनता के लिए किए जाने वाले सब प्रयत्न विफल हो गए थे। इसके बाद अंग्रेज की शक्ति भी जर्जर होने लग गई थी। अमेरीका और रूस विश्व की दो महा शक्तियों के रूप में उभर आये थे। इन दो शक्तियों ने ब्रिटेन पर यह दबाव डाला था कि व अपने साम्राज्य की दुकान को समेट दे। ब्रिट आर्थिक दृष्टि से भी दिवालिया हो चुका था और अमेरिका का कर्जदार बन गया था। इन दोनों शक्तियों के दबाव में आकर ही ब्रिटेन को एक-एक करके अपने सभी उपनिवेशों को स्वतन्त्र करना पड़ा था। कांग्रेस ने शोर मचाकर यह श्रेय लेने का प्रयास किया कि उनके अहिंसक सत्याग्रह के फलस्वरूप देश आजाद हुआ है। ब्रिटेन ने जाते-जाते भारत को विभाजित कर दिया और जिन लोगों के हाथ में उनके जाने के बाद सत्ता आई उन्होंने भी राष्ट्रीय एकात्मकता की ओर उचित ध्यान नहीं दिया। राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का शोर मचाते हुए अलगाव की शक्तियों को ही प्रोत्साहित किया। जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता और भाषावाद देश की एकता के लिए भयानक

खतरा बनकर उभर आया। सारे देश के लिए समाज कानून भी न बनाया जा सका। कश्मीर में मुस्लिम साम्प्रदायिकता, पंजाब में सिख साम्प्रदायिकता और उत्तर-पूर्वी राज्यों में ईसाई साम्प्रदायिकात ने भयंकर रूप धारण कर लिया। जन्म जाति और सम्प्रदाय के आधार पर आरक्षण की नीतियों ने संयुक्त राष्ट्रीयता को स्वप्न बनाकर रख दिया है। अब विदेशों से आने वाले धन की सहायता से पादरी और मौलवी हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उनकी संख्या को कम करने के अभियान में जुटे हैं। इससे यह प्रश्न उभरते हैं कि क्या यह किसी नीति की उपेक्षा का फल तो नहीं है? क्या हमारे समक्ष अब भी बचाव का कोई रास्ता है? धर्मनिपेक्षता की भ्रान्ति के अन्तर्गत अल्पसंख्यकों को प्रसन्न और पृथक रखने को सरकार की नीति से जो भ्रमजाल निर्माण हुआ है। उससे मुक्त होना प्राय: असम्भव हो रहा है। भाई जी कहा करते थे कि हिन्दू को अपने मित्र और शत्रु की पहचान नहीं। वास्तव में हिन्दुस्तान में स्थिति यह रही कि जब यहाँ पर मुसलमान अपना राज्य जमाने में सफल हो गये तो उन्होंने अपने राष्ट्र का विस्तार करना आरम्भ कर दिया। इसके लिए वह सभी प्रकार का उचित और अनुचित ढंग अपनाने लगे। तत्कालीन हिन्दुओं में से राष्ट्रीय भावना तो निकल गई थी। उन्हें पता ही नहीं था कि राष्ट्र क्या बला हैं उनके दिमागों मे केवल यही बात रह गई थी कि वे राजपूत, कार्यस्थ ब्राह्मण, मराठे और पंजाबी हैं मुसलमानों को भी उन्होंने एक जाति ही समझा। महात्मा गाँधी अथवा ब्रह्मसमाज के प्रर्वतक राजा राममोहन राय तथा इन दोनों महापुरुषों के अनुयायी भी हिन्दू-मुसलमान और ईसाई को जातिमात्र समझते थे। आरम्भ में हिन्दू-मुसलमान को निकट लाने का प्रयास किया तो यही समझा कि यह झगड़ा पन्थगत है। अत-दादू, कबीर, गुरुनानक इस पन्थ की विभिन्नता को मिटाने का यत्न करते रहे। वे भी असफल हुए।

मुसलमान अपना विस्तार कर रहे हैं। विभाजन के बाद देश में उनकी जो संख्या थी उससे वे दुगने हो गये हैं। इस स्थिति में भाई जी के कथनों की सार्थकता उभर कर सामने आती है। मगर आज सबसे अधिक खेद की बात यह है कि भाई जी के उत्तराधिकारी और प्रशंसक इतिहास की उपेक्षा कर, वही बातें कह रहे हैं, जिनका विरोध करने में भाई जी ने अपना समस्त जीवन लगाया। भाई परमानन्द स्मारक समिति द्वारा आयोजित, एक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने बड़े जोश के साथ कहा, भाई जी देशभक्त थे, आज यदि वह जीवित होते तो हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात करते। क्या यह एक स्वर्गीय आत्मा के साथ न्याय है? क्या पाकिस्तान बन जाने के बाद भी देश में हिन्दू-मुस्लिम समस्या का दृश्य वहीं नहीं, जो संयुक्त भारत में १९३० से १९४७ तक था। परन्तु राजनीतिज्ञों की सत्ता की भूख उन्हें कई गलत धारणायें व्यक्त करने पर बाध्य कर देती है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी का विवेचन कहां तक सत्य सिद्ध होगा यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। मगर भाई जी के मार्ग पर चलकर सोचने वाले किसी भी व्यक्ति को यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि इस देश की समस्या हिन्दू-मुस्लिम एकता से नहीं हिन्दू मात्र को एक झण्डे तले लाकर ही सुलझेगी। जिस मृगतृष्णा के पीछे भाग-भागकर हमारे देश के स्वयंभू कर्णधारों ने अपना और देश का सर्वनाश किया है उसका वाजपेयी को पूरा ज्ञान है। तब भी श्री वाजपेयी इस मृगतृष्णा के पीछे भागना चाहें तो उन्हें कौन रोक सकता है? -हिमस भवन मंन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

१६ पृष्ठ का शेष-
कतव्य बहुत उत्तम से सम्पन्न किए। उन महात्मा वेदभिक्षु: को कोटि-कोटि प्रणामन्, भावपूर्ण नमन। महात्मा वेदभिक्षु: मेधावी वेद आर्य धर्म प्रसारक वेदभिक्षु: का हार्दिक, आत्मिक नमन।

तुम गए तो सही हे महानात्मा
पर हमें वेद उपहार दे तो गए
पंडिता सा महारत्न तो दे दिया
और खुद रत्नमय तुम स्वयं खो गए
तुम महर्षि दयानन्द के कार्य के
युक्त साफल्य का हरत परिणाम हो
वेदभिक्षु: महात्म, मनस्वी महत्
सद्गुणों का महासिंधु अभिराम हा

श्री अरविन्द चेतना समाज चमेलियन रोड दिल्ली-6

-मनचन्द

हिन्दू जाति की चिकित्सा आवश्यक

-भाई परमानन्द

प्रस्तुत लेख भाई परमानन्द द्वारा चालीस के दशक में लिखा गया था। भाई जी ने हिन्दू समाज में व्याप्त राष्ट्रहित एवं स्वधर्महित उदासीनता को एक रोग के रूप में चित्रित किया है। उन्हें इस बात की पीड़ा थी कि हिन्दू समाज बाह्य प्रतीकों के प्रति जितना सजग है उतना आन्तरिक सबलता प्राप्त करने के लिये नहीं है। आधी शताब्दी पूर्व लिखा गया यह आलेख वर्तमान में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था।

कई मनुष्यों को इस बात का निश्चय नहीं हो पाता कि **व्यक्ति की भाँति जाति को भी रोग लग सकते हैं और उन रोगों की चिकित्सा करनी पड़ती है।** मनुष्य के रोगों को पहचानना कठिन नहीं होता। वह स्वयं अपने रोग को प्रकट करने की चेष्टा करता है, परन्तु रोग के कठिन और गहरे हो जाने पर बड़े-बड़े वैद्य और डॉक्टर भी उलझन में पड़ जाते हैं। जाति के रोग का निदान इससे भी कठिन है। जाति स्वयं अपनी पीड़ा को प्रकट नहीं कर सकती। जब कभी उसका रोग प्रकट भी होता है तो भी न उसे रोगी माना जाता है और न उसकी चिकित्सा की जाती है।

मुझसे प्रश्न किया जाता है कि बताओ हिन्दू जाति के शरीर में रोग कहाँ है, हमें कोई रोग नहीं दीखता। में कहता हूँ हम सब पराधीन हैं । क्या पराधीनता रोग नहीं है? जाति भूखी और निर्धन है। क्या यह रोग नहीं है? इस देश में प्रतिवर्ष लाखों मनुष्य अकाल मृत्यु से मरते हैं। क्या यह भंयकर रोग नहीं है? जब कोई हिन्दू अपनी तुलना दूसरी जातियों से करता है तो स्पष्ट स्वीकार कर लेता है कि हिन्दू जाति में जीवन का अभाव है। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि हिन्दू जाति रोगग्रस्त है? हम सब मानते हैं कि हिन्दू जाति रोगग्रस्त है किन्तु रोग को पहचानने वाला कोई चिकित्सक रोग का उपचार लिख देता है, तो न तो हम औषधि का सेवन करते हैं और न उसके परामर्श पर चलते हैं। हो तो क्या? अपनी व्याधी जानकर और औषधी जानकर भी हम इतने विवश हैं कि कुछ नहीं कर पाते। गत कुछ वर्षों की घटनाएँ देखकर मैंने जाति के कष्ट का अनुभव किया है और उसकी यह पुकार सुनाई पड़ी है कि जाति को संगठन की आवश्यकता है।

संगठन किसी व्यक्ति विशेष का काम नहीं है। रुग्ण हिन्दू जाति की आत्मा ने स्वयं अपने लिए संगठन की औषधि सोची है। प्रत्येक हिन्दू यह कहता दिखाई देता है कि संगठन के बिना हम बच नहीं सकते। परन्तु उनसे पूछिए कि तुमने संगठन के लिए क्या किया है? क्या तुम संगठन के सदस्य हो? क्या तुमने अपने भाईयों को संगठन के कार्य के लिए अपना कुछ समय अर्पण किया है? तो या तो वह चुप हो जाएगा या टालने के लिए कहेगा क्या करें कोई कुछ करता ही नहीं। परन्तु उससे आपका उत्तरदायित्व समाप्त नहीं हो जाता आप इतना ही कीजिये कि सप्ताह में कम से कम एक दिन मिल बैठकर विचार कीजियें। कानों में शब्द जाता है किन्तु हृदय पत्थर हो चुका है। वह अनुभव ही नहीं करता। सोते हुए जगाया जा सकता है परन्तु जागे हुए को कौन जगा सकता है? क्या आप अपने रोग का इससे भी बड़ा प्रमाण चाहते हैं? मैं न आर्यसमाज के विरुद्ध हूँ और न कांग्रेस के जो, कुछ कहता हूँ वह इस उद्देश्य से कहता हूं कि जो कोई गलती पर हो वह यदि अपनी गलती समझ जाये तो उसे ठीक कर ले। मुझे इन दोनों संस्थाओं के कार्य करने के ढंग पर आपत्ति है। इन दोनों में दिखावा बहुत अधिक आ गया है। रुग्ण जाति अपनी निर्बलता को दिखावे से छिपाना चाहती है और बलवान होने का ढोंग भर रही है। यह बड़ी आपत्तिजनक अवस्था है। ईश्वर का भरोसा छोड़कर हम उसकी पूजा का ढोंग कर रहे हैं। रोगी जाति में पवित्रता और धर्म नहीं हो सकता। हम पवित्रता और धर्म का आडम्बर कर रहे हैं,

और बाह्य चिन्हों पर मर मिटने को तैयार हैं। हम दिखावे में फँसकर निरोग होने की चिन्ता भी नहीं करते, यही बड़े दुःख का विषय है। दिखावे से थोड़ा बहुत लाभ भी होता है, जब कोई संस्था खूब काम करती है। और जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए थोड़ा दिखावा भी करती है तो वह लाभदायक भी होता है, परन्तु वास्तव में जब काम कुछ भी नहीं होता तो दिखावा ही वास्तविक काम का स्थान ले लेता है और जलसे करना ही उद्देश्य बन जाता है। यद्यपि ऐसी जाति उनति करती प्रतीत होती है परन्तु वास्तव में वह अवनति के गड्ढे में गिर रही होती है। दिखावा करना गिरी हुई जातियों का लक्षण है और उसी पर उनके जीवन का भरोसा होता है। वे समझती हैं कि दिखावा जोश उत्पन्न करने का एक तरीका है। परन्तु यह होता है कि वास्तविकता समाप्त होकर केवल दिखावा ही दिखावा रह जाता है। हमारे रोग की चिकित्सा का एक ही उपाय है और वह है त्याग बलिदान का भाव। जिस समय रूस और जापान में युद्ध हो रहा था जापानी सेना ने एक रूसी किले पर आक्रमण किया। किले तक पहुँचने के लिए किले की खाई को भरना आवश्यक था। जापानी सैनिकों ने अपने साथियों के मृतक शरीर खाई में डाल दिये परन्तु ऐसा करने पर भी वह खाई भर न सकी। उस पर उन घायल सिपाहियों को जिनके बचने की कोई आशा न थी उन मृत सिपाहियों के ऊपर लाकर डाल दिया। जब इससे भी काम न बना तो सैकड़ों मनचले जापानी युवक सैनिक आगे बढ़कर खाई में कूद पड़े। खाई भर गई। उन वीरों के मृतक शरीर पर जाकर जापानी सेना ने रूसी किले पर विजय प्राप्त कर ली। यद्यपि हम उन वीरों के नाम नहीं जानते परन्तु जापान की शक्ति और कीर्ति की नींव उन्हीं के बलिदान पर स्थिर है। जिस समय आप थोड़ा बहुत काम करके अपनी प्रशंसा और बड़ाई समाचार-पत्रों जलसों में सुन लेते हैं तो वह बलिदान नहीं रहता। वह तो एक दुकानदारी बन जाता है। वास्तव में दिखावा और बलिदान परस्पर विरोधी शब्द हैं। दिखावे का रोग चुपचाप और गुप्त बलिदान से दूर हो सकता है। कुछ लोग पूछते हैं कि क्या हिन्दू जाति का रोग किसी प्रकार दूर हो सकता है। मैं कहता हूँ हो सकता है। यदि कुछ नवयुवक प्राणों की बाजी लगाकर जाति हित के लिए कर्मक्षेत्र में कूद पड़ें

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुंजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	६०००/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	५०००/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	४०००/-रुपए
आधा पृष्ठ	३०००/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	१५००/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" नई दिल्ली के नाम भिजवाएं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

विज्ञापन व्यवस्थापक
जनज्ञान-मासिक
२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष:२८७५२७४१,४१००४७४१

"यजुर्वेद के १८वें अध्याय पर वैज्ञानिक गवेषणा"

-डा॰ पूर्वी आर्या

आज के सम्पूर्ण तथाकथित सुपठित एवं सम्पन्न मानव समाज हेतु सबसे बड़ा खतरा ग्लोबल वार्मिंग हैं, जो कि वर्त्तमान के कैमिकल युग की देन है। हमारे जीवन की मूलभूत तीन आवश्यकतायें अन्न वायु व जल तीनों ही हानिकारक कैमिकलों से युक्त हैं तथा ये तीनों जीवन तत्व आज जीवन के विनाश का सबसे बड़ा कारण बने हुए हैं। इनके प्रदूषित होने के कारण आज अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अम्लीय-वर्षा, ग्लोबल-वार्मिंग, भूकम्प, सुनामी, मौसम परिवर्तन, तापमान वृद्धि कैंसर, स्वाईनफ्लू जैसे विनाशकारी ताण्डव हो रहे हैं। इन सबका कारण मानव का प्राकृतिक नियमों के साथ छेड़छाड़ करना है। यदि इन सबका उचित समाधान न निकाला गया तो वह दिन दूर नहीं कि समुद्रतटीय क्षेत्र समुद्र में जलस्तर बढ़ने के कारण जल-निमग्न हो जायेंगे। वैज्ञानिकों ने पिछले दिनों मालद्वीप के जल-निमग्न होने की आशंका जतायी है।

इन सभी समस्याओं के समाधान हेतु सम्पूर्ण विश्व के समक्ष मात्र एक ही मितव्ययी समाधान वैदिक यज्ञ है। जो कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन मल-मूत्रादि द्वारा धरती पर जितना प्रदूषण फैलाता है उसका परम धर्म है कि वह उसे शुद्ध भी करे। बाजार में हर चीज को शुद्ध करने का सामान मिलता है परन्तु वायु को ठीक रूप से शुद्ध करने का कोई साधन नहीं है। **यदि विश्व में वायु को पूर्णरुपेण शुद्ध करने का कोई साधन है तो वह वैदिक यज्ञ ही है। किसी भी जाति अथवा मजहब के लोग वैदिक यज्ञ का प्रतिदिन अनुष्ठान कर सकते हैं।** केवल प्रतिदिन दस मिनट का वैदिक यज्ञ सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान है। वैदिक यज्ञ मात्र कोई धार्मिक अनुष्ठान नहीं अपितु वैज्ञानिक प्रक्रिया है। जिसमें अग्नि में डाले गये पदार्थों के कम्बशन के फलस्वरूप फार्मेल्डीहाइड, पोपीनोंहक एसिड जैसी गैसें निकलती हैं जो वातावरण को प्रदूषण मुक्त करने के साथ-साथ ग्लोबल वार्मिंग को भी कम करने का कार्य करती हैं।

हमने हमारे वैज्ञानिक परीक्षण जो कि उद्गीथ साधनास्थली वैदिक रिसर्च सेन्टर हिमाचल में आचार्य आर्यनरेश जी वैदिकगवेषक के सानिध्य में सम्पन्न किये, उसमें यह पाया कि अम्लीय वर्षा की सबसे घातक सान्द्रता २.५ होती है जिसके प्रभाव के कारण पौधे नष्ट हो जाते हैं तथा पुनः वहां न तो कोई वनस्पति हो पाती है और न ही जीव-जन्तु उत्पन्न होते हैं। इसका मुख्य कारण सल्फर डाई आक्साइड व नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड गैसें हैं जो कि ग्रीन हाउस गैंसे भी कहलाती हैं तथा ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। हमने मुख्य रूप से तीन साइटों पर यह परीक्षण किया। पहली साइट यज्ञशाला के समीप थी दूसरी साइट यज्ञशाला से ६० मीटर दूरी पर थी व तीसरी हमनें बिना रासायनिक खाद व रासायनिक उर्वरक डाले केवल यज्ञभस्म गाय के गोबर से उपचारित कर सोयाबीन के बीजों को बोया। तथा पेस्टीसाईड के स्थान पर यज्ञभस्म, गोमूत्र व जल विशिष्ट अनुपात में मिलाकर स्प्रे किया। परिणामों के लिए हमने तीनों साईटों का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें हमने पाया कि जो पौधे २.५ अम्लीय सान्द्रता के कारण नष्ट हो जाते हैं वे हमारी प्रथम साईट पर नष्ट नहीं हुए साथ ही साथ उनकी उपज भी तीसरी साईट की तुलना में ७० प्रतिशत् अधिक हुई। अतः इन **परीक्षणों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि केवल एक वैदिक यज्ञ ही वह वैज्ञानिक साधन है जिसके माध्यम से हम शुद्ध हैवी मैटल रहित अन्न, फल, शाक, जल, व वायु**

को प्राप्त करके धरती पर जीवन को बचा सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कैंसर, स्वाइनफ्लू, डिप्रेशन, शुगर आदि क्लिष्ट तथा संक्रामक रोगों से मुक्ति दिला सकते हैं। यदि हमारे पास अधिक साधन न हों तथा अधिक मन्त्र न आते हों तो केवल गायत्री मन्त्र बोलकर ३१ बार आहुति डालें। सामग्री के स्थान पर चावल, गुड़, नीम के पत्ते, गिलोय, आवंला, गुग्गल, कपूर, मूंग, उड़द आदि मिलाकर घर में सामग्री बनायें व आहुति दें। प्रात:काल समय न हो तो सायंकाल यज्ञ करें। समिधाओं के लिए गाय के गोबर के उपलों का प्रयोग करें। ध्यान रहे यज्ञ पश्चात् वहीं वेदी पर कुछ काल बैठकर दीर्घ श्वास लेकर ओम् का उच्चारण, गायत्री अथवा संध्या के मन्त्रों का पाठ करें।

यज्ञ के प्रति विश्व में सर्वाधिक श्रद्धा रखने वाले आर्यजनों हेतु इसी विषय की ८.११.०९ को गुरुवर विरजानन्द व स्वामी दयानन्द के १५०वें मिलन पर्व पर आचार्य श्री आर्यनरेश जी के ब्रह्मत्व में हुए यज्ञ में चर्चा की थी। हमने गुरु भूमि मथुरा में सम्पूर्ण भारत व विदेश से उपस्थित हुए हजारों जनों को प्रेरणा दी थी कि पर्यावरण को बचाने हेतु सर्वप्रथम आर्यजन दैनिक यज्ञ करने का संकल्प करें। जिससे कि अन्य लोग भी इसे शीघ्र अपना सकें।

॥प्रतिदिन हवन रचायेंगें, धरती को विनाश से बचायेंगे॥
॥हवन से खेती रचायेंगें, धरती को स्वर्ग बनायेंगें॥

-उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल प्रदेश)

जन्मदिवस (३० दिसम्बर) पर विशेष

प्रकाशवीर शास्त्री:वैदिक संस्कृति का अनुपम रत्न

-प्रियवीर हेमाइना

जिसके मस्तक पर विराजता था ब्रह्मतेज का दिव्य प्रकाश,
जिसके सम्बोधन से हिल जाते थे धरती और आकाश।
वह वैदिक संस्कृति का रत्न वह अनुपन ही व्याख्याताथा। वह प्रकाशवीर शास्त्री भारत का भाग्य-विधाता था॥१॥

जिसने अपना घर परिवार भारत माता को था माना राष्ट्र आराधना को ही जीवन का लक्ष्य था जाना भारत के हर प्राणी से जिसका भाई-बन्धु का नाता था वह प्रकाशवीर शास्त्री भारत का भाग्य-विधाता था॥२॥

देश-विदेश में हर स्थान पर हिन्दी में भाषण देकर हिन्दी को सर्वोच्च बनाना यही प्रतिज्ञा लेकर, जिससे संसद सदस्य पद स्वयं सम्मानित हो जाता था।
वह प्रकाशवीर शास्त्री भारत का भाग्य-विधाता था॥३॥

ऋषि दयानन्द के सपनों की छाया में जो चलता था, निर्माण हो सशक्त भारत का यह निश्चय करता था राष्ट्र विरोधी तत्वों को जो आड़े हाथों लेता था। वह प्रकाशवीर शास्त्री भारत का भाग्य-विधाता था॥४॥

सरस्वती जिसकी जिह्वा पर थी प्रतिपल ही विद्यमान राष्ट्र-चिन्तन करने वाला वह व्यक्तित्व प्रखर महान देश प्रेम और राष्ट्र-भक्ति के गीत सदा जो गाता था वह प्रकाशवीर शास्त्री भारत का भाग्य-विधाता था॥५॥

-३१८ विपिन गार्डन, पो॰ मोहन गार्डन, उत्तम नगर नई दिल्ली॥

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अत: आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें।

-सम्पादक

आह्वान
(स्वामी दयानन्द)

-विजय गुप्त

स्वामी बिरजानन्द जी की कुटिया। मृगच्छाया पर स्वामी जी विद्यमान हैं। समाधि की अवस्था। समीप मेज पर वेद-उपनिषद् ग्रन्थ आदि रखे हैं। स्वामी बिरजानन्द की दाढ़ी-मूँछें केश सब श्वेत हैं। सामान्य कुटिया की स्थिति के अनुरूप व्यवस्था।

स्वामी बिरजानन्द : (मधुर स्वर में)-

ओ३म् भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात...

(तभी युवावस्थामें स्वामी दयानन्द जी का प्रवेश। हाथ में लौंग की तश्करी)

स्वामी दयानन्द : (गुरुदेव को प्रणाम करते हुए)...गुरु ब्रह्म: गुरु विष्णु, गुरुदेव महेश्वरा, गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मैं श्री गुरुवेनमः।

बिरजानन्द : कौन?

दयानन्द : मैं हूं गुरुदेव..

बिरजानन्द : कहां चले गए थे दयानन्द?

दयानन्द : अभी कहीं जाने की स्थिति में हूं क्या?

बिरजानन्द : इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त की है तुमने। मेरे पास ज्ञान की जो अमूल्य निधि थी, वे रत्न मैंने तुम्हारे समक्ष सब खोल कर रख दिए... क्या अपनी योग्यता और शिक्षा पर तुम्हें विश्वास नहीं संतोष नहीं....

दयानन्द : नहीं गुरुदेव! आपने जो ज्ञानदीप हमारे लिए जलाया, मैंने शाश्वत प्रयास किया, उसका उजाला हृदय में भर लूँ, विवेक को जगमग कर दूं। लेकिन अध्ययन प्राप्ति पर शिष्य के दायित्व को अभी पूरा करना शेष है....

बिरजानन्द : (हंसते हुए), कौन-सा दायित्व?

दयानन्द : गुरुदेव, जब तक शिष्य गुरु के चरणों में दिए गए ज्ञान के बदले में गुरु दक्षिणा नहीं दे पाता, अपने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त नहीं करता, तब तक जीवन में सफलता की राह पर वह कैसे बन्धन-मुक्त होकर बढ़ सकता है?

बिरजानन्द : (हंसते हैं)- तो तुम बंधन मुक्त होना चाहते हो क्या? वह तो तुम बन्धन मुक्त पहले ही हो। मैंने जो भी शिक्षा या ज्ञान तुम्हें दिया है, वह किसी बनिए की दुकान का सौदा नहीं....

दयानन्द : जानता हूँ, वह तो अमूल्य निधि है। उसका मूल्य कैसे आंका जा सकता है। कोई भी शिष्य उससे कैसे उऋण हो सकता है?

बिरजानन्द : दया गुरु के रूप में सर्वप्रथम माँ आती है, जिसके वात्सल्य की वर्षा से प्रेम के बीज हृदय में अंकुरित होते हैं। स्मरण करो उन दिनों को, जब तुम मूलशंकर थे। माँ की ममता पल-प्रतिपल तुम्हारी रक्षा, तुम्हारे हित के लिए चिन्तित हो उठती थी। क्या तुम उऋण हो पाए, जिस माँ ने तुम्हें जन्म दिया था...बोलो....

दयानन्द : (रुंधा स्वर)-नहीं...नहीं गुरुदेव! (आंखें छलक उठती हैं) (स्वत:)- माँ, आज भी तेरी पावन स्मृति की डोर से बंधी पंतग हूं। यद्यपि तोड़ कर आया था रिश्तों की डोर को-जीवन में उस शाश्वत सत्य शिव की खोज में, लेकिन पल-प्रतिपल आभास हुआ है, माँ का वात्सल्य ईश्वरीय प्रेम के समक्ष अपनी समता रखता है।

बिरजानन्द : आज भी माँ की ममता विह्वल करती है, तुम्हें? इसमें किसी का दोष नहीं। आदिगुरु शंकराचार्य भी हर क्षण अपनी जननी के प्रति सचेत रहे। उनके पास पूंजी थी माँ के आशीर्वचन की, दिग्विजय की थी उन्होंने।

दयानन्द : लेकिन मेरे पास तो वह भी नहीं। अपनी माँ को छटपटाता, अपने पिता को बिलखता हुआ छोड़कर निकला था घर से।

बिरजानन्द : किसलिए? इसीलिए न कि शिव मन्दिर में शिव के प्रति विश्वास छला गया। इसीलिए न कि १६ वर्ष की उस किशोर अवस्था में जब परिवार में सर्वत्र स्वर्ग सा आनन्द था, वहीं अकस्मात घिरा था अकाल मृत्यु का काला बादल, जो सर्प बनकर तुम्हारी प्यारी बहन को लील गया-१४ वर्षीय उस कली को डस गया?-क्रमशः

-एफ 1/335 मदनगीर नई दिल्ली-62

स्वामी ओमानंद की सांस्कृतिक धरोहर झज्जर संग्रहायलय

-हृदय कौशल

कला कल्याण की जननी है। इस धरती पर मनुष्य की उदयबेला का इतिहास कला के हाथों लिखा गया, विश्वात्मा की सर्जना शक्ति होने के कारण सृष्टि के समस्त पदार्थों में उसी का आधार है। वह अनन्तरूपा है और उसके इन अनन्त रूपों की निष्पत्ति ही कलाकार (परमेश्वर) है। जितने भी तत्वविद्, साहित्यसृष्टा और कला सेवी हुए, उन सबने भिन्न-भिन्न मार्गों से उसी एकमेव लक्ष्य का संधान किया है।

प्राचीन भारतीय परम्परा में हरियाणा प्रदेश को आदिसृष्टि की जन्मभूमि माना गया है। भारतवर्ष के प्राचीन राजनैतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में इस प्रदेश का योगदान सर्वाधिक और सर्वतोमुखी है। फिर भी हरियाणा के कलात्मक इतिहास के संबंध में कोई विशेष प्रदर्शन प्रवाह कार्य अब तक नहीं हो पाया, ऐसा कुछ लोग मानते हैं। कुछ जाने-माने लोग इस कलात्मक दृष्टिकोण को गहराई से समझे-बूझे बिना ही एक लकीर को पीटते हुए कहते हैं कि हरियाणा में कल्चर के नाम पर क्या है? "यहां तो कल्चर के नाम पर सिर्फ एग्रीकल्चर है"। मैं इस बात का खण्डन करता हूं, वे केवल तुकबंदी का प्रयोग करते हैं और बोल कर चुप हो जाते हैं कल्चर की तुक एग्रीकल्चर से जुड़ती है, लेकिन आलोचक हरियाणवी संस्कृति, कला, विरासत व कलात्मक दृष्टिकोण के पक्ष में कुछ नहीं बोल पाते। सभ्यता जहां सबसे पहले आई।

विश्वकर्मा की धरती

उस सिंधु घाटी और हड़प्पा की सभ्यता से हरियाण प्रदेश व उसके कलाकार अछूते नहीं हैं। आप विश्वास नहीं करेंगे कि विश्व का सबसे पतला (सिर्फ एक मिलीमीटर मोटी दीवार वाला) टैराकोटा मृद्भाण्ड हरियाणा में ही मिला है। मूर्तिशिल्प व कलाक्षेत्र में अनेकों परम्पराएं तो छोड़िए अकेली मृण्मयकला का क्षेत्र ही इतना समृद्ध है कि दांतों तले उंगलियां दबा लें। पाषाण मूर्तिशिल्प, श्रृंगार प्रयोग व आभूषण 'कल्चर' जैसे शब्द को सर्वतोमुखी सिद्ध करने वाले हैं। इस कलात्मक परिदृश्य को जरा ध्यान से देखें तो लगता है कि भगवान विश्वकर्मा अगर कहीं हैं तो केवल हरियाणा की धरती पर हैं।

हरियाणा के विभिन्न भागों में भिन्न प्रकार की सांस्कृतिक धारायें प्राचीन काल से गंगा, यमुना और सरस्वती के अलग-अलग प्रवाह की भांति बहती चली आ रही हैं। जैसे इन पवित्र नदियों का जल त्रिवेणी संगम की तरह एकरूप हो जाता है, उसी प्रकार हरियाणवी संस्कृति की आंतरिक विभिन्नता में भी एकरूपता इस संस्कृति का विशिष्ट गुण है और जिस साहित्यिक कलात्मक परंमपरा मे इस सारस्वत संस्कृति की झलक मिलती है, उसके प्राचीनतम अंश की रचना हरियाणा प्रदेश की पवित्र भूमि पर हुई है।

हरियाणा का प्रारम्भिक इतिहास भारतवर्ष का इतिहास है। यह अत्यंत आवश्यक है कि इस प्रदेश के निवासियों को इस पवित्रभूमि के इतिहास व संस्कृति और कलात्मक दृष्टिकोण को जानने के साधन उपलब्ध हों। हरियाणा प्रदेश पवित्र वेदों और महाभारत की भूमि है। इसे भारतीय संस्कृति का उद्गम स्थल कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं। भारतवर्ष की स्वस्थ और समृद्ध परम्पराओं ने हरियाणा की धरती पर जन्म लिया और धीरे-धीरे सारे देश में उनका विस्तार हुआ।

"झज्जर गुरुकुल संग्रहालय" का संपूर्ण संग्रह कल्चर को एग्रीकल्चर बोलने वालों के मुंह

पर तुरन्त ताला जड़ सकता है और वे आंखें खोलकर देखने पर मजबूर हो सकते हैं। इसका सारा श्रेय जाता है स्वामी ओमानंद सरस्वती (पूर्वनाम आचार्य भगवान देव) और उनके शिष्य विरजानंद देवकरणि को, जो इस कल्चर अर्थात् संस्कृति का संग्रह कर धरोहर स्वरूप संजोकर रखे हुए हैं, लेकिन आर्थिक तंगी व सुरक्षा के अभाव के कारण समुचित रूप से प्रदर्शित नहीं कर पा रहे हैं।

झज्जर के पुरातत्व संग्रहालय में इकट्ठे किए गए बहुमूल्य अवशेषों से, जो हरियाणा के विभिन्न पुराने स्थलों की खुदाई से प्राप्त किए गए हैं, इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं कि हरियाणा यौधेय, अगरोह और कुनियन गणतन्त्रात्मक राज्यों का केन्द्र रहा है। जो भारत-यूनान, भारत-सीथियन और भारत-पारथियन राजाओं से सम्बन्ध रखते थे। हरियाणा के लोगों का रहन सहन सादा है। यहां के लोग बड़े उदार, दानदार और साफ दिल हैं। स्त्रियां बड़ी आज्ञाकारी और मेहनती तथा पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली है। सभी परम्परागत त्योहारों को बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। विश्वास व पवित्रता की झलक यहां की संस्कृति में साफ तौर पर दिखाई पड़ती है। इस क्षेत्र की कला और लोकमानस का कलात्मक दृष्टिकोण, प्रदर्शन और अनुकृतियों का सार्थक सामंजस्य इस की संस्कृति में झलकता है।

झज्जर गुरुकुल में हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना सन १९६१ में हुई। चौ. कुम्भाराम आर्य ने उद्घाटन किया। स्वामी ओमानंद ने इसका आरंभ किया। यहां पर हरियाणा की धरती पर मिले सिक्के, मुद्राएं, ताम्रपात्र? अस्त्र-शस्त्र, शिलालेख, टैराकोटा, पत्थर की मूर्तियां, बीड्स आभूषण, हस्तलेख, पाण्डुलिपियां आदि सुरक्षित हैं। यहां संस्कृति का अनुपम संग्रह है। जिसे देखकर हृदय पुलकित हो जाता है। अग्रोहा से टैराकोटा, नौरंगाबाद बाबला (भिवानी) से सिक्के, कुषाण, यौधेय, नुगरिक यूनानी, पंचमार्क, खोखराकोट (रोहतक), मोहनबाड़ी झज्जर, सतकुंभा, सोनीपत, शुंग यमुनानगर, हांसी, राखीगढ़ी, हिसार, रेवाड़ी और जगाधरी, मिताथल, नारनौल, दादरी, बहादुरगढ़, कुलासी में मिली सांस्कृतिक धरोहरें हजारों की संख्या में गुरुकुल संग्राहलय में से ग्रहीत है। प्रदर्शित करने की जगह कम होने के कारण ये सब यहां आलमारियों, संदूकों व कमरों में सुरक्षित रखी गई हैं।

यहां कल्चर से सम्बन्धित इतनी सामग्री है कि अलग-अलग विषयों पर सैकड़ों विद्वान शोधार्थी शोध कर सकते हैं। सभी कलात्मक वस्तुएं संस्कृति का दर्पण स्वरूप हैं और सभी का निर्माण इसी क्षेत्र में हुआ है। विरजानन्द कहते हैं-"यहां कला व संस्कृति प्रेमी नहीं हैं। सारा दिन ताश खेलते हैं, टीवी देखते हैं या नेट पर कुछ सर्च करते रहते हैं, पर संस्कृति में उनका कोई रुझान नहीं है। अब आप ही बताएं कि हरियाणा में कल्चर का अभाव है या उसकी अनेदखी की समस्या। ○○

वैदिक विद्वान से लिए प्रधानमंत्री ने सुझावः

नई दिल्लीः-प्रधानमंत्री, डा॰ मनमोहन सिंह ने देश की शिक्षा में राष्ट्रीय मूल्यों को महत्व पूर्ण स्थान देने के लिए देश के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा॰ रामप्रकाश शर्मा 'सरस' दिनांक १०नवम्बर को प्रधानमंत्री निवास में विचार विमर्श किया। श्री सरस के कार्यालय से प्रसारित विज्ञप्ति के अनुसार प्रधानमंत्री ने स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मागांधी, श्रीअरविन्द की समन्वित शिक्षा सम्बन्धी अवधाराणों पर डा॰शर्मा के सुझावों की अनेक बार प्रशंसा की। डा॰ शर्मा ने राष्ट्रीय चरित्र, सामाजिक चरित्र, व्यक्तिगत चरित्र इन तीनों को शिक्षा के विशेष उद्देश्यों में देखने की दृष्टि विकसित करने की सलाह अभिभावकों, छात्रों शिक्षकों और शिक्षा से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सरोकार रखने वालों में पैदा करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डा॰ रामप्रकाश शर्मा 'सरस' आर्य समाज के उन वक्ता लेखक, विचारक, विद्वानों में से हैं आपके नेतृत्व में देश के सभी प्रान्तों से चयनित ३६ शिक्षकों का प्रतिनिधि मंडल शन्ति संदेश लेकर पाकिस्तान बाघा बार्डर गया। ○○

समाज वैज्ञानिक ऋषिवर स्वामी दयानन्द

-डा॰ चन्द्रकान्त गर्गे

१९वीं सदी के पुनजार्गरण काल में महर्षि स्वामी दयानन्द सुधारक और वैदिक सत्य धर्म प्रवर्तक के रूप में उभरे। उनके समाज सुधार और धर्म प्रवर्तन का आधार वेद और वेद प्रतिपादित आर्ष ग्रन्थ थे। ऋषिवर वैदिक सिद्धान्त की विलक्षण तथा श्रेष्ठता से भलीं-भांति परिचित थे।

वे वैदिक चिन्तन एवम् मनन में केवल प्राचीन में ही रममाण नहीं हुए अपितु तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों पर भी उन्होंने दृष्टिपात किया। इस अभ्यास में वे समाज वैज्ञानिक के रूप में भी प्रकाशित प्रस्थापित होते हैं। वैदिक सिद्धान्त पर आधारित मनुष्य समाज देश तथा समूचे विश्व में निर्माण के लिए वे अपनी अन्तिम सांस तक संघर्ष करते रहे। सारा विश्व समुदाय एक हो इस उद्देश्य से उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। ऋषिवर द्वारा संस्थापित आर्यसमाज सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्र को झकझोरने वाली संस्था थी, अभी भी वही शक्ति, वही क्षमता रखने वाली संस्था है।

वेद सम्पूर्ण मानव का हित चाहने वाले प्राचीनतम् ग्रन्थ हैं। वेदों का विषय ही मानव हित है मानवहित के लिए विधान एवं सिद्धान्त व्यक्ति और समाज के पारस्परिक सुसम्बन्ध से जुड़े हैं भारत का प्राचीन आर्ष साहित्य इन्हीं वैदिक सिद्धान्तों से अनुप्राणित है, जिनमें तत्कालीन समाज का प्रतिविम्ब दृष्टिगोचर होता है। वेदांग, उपनिषद्, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थों की चिन्तन प्रतिक्रिया में मनुष्य और समाज ही केन्द्र बिन्दू हैं।

इस चिन्तन कि आधुनिक कड़ी में दयानन्द जुड़े है। ऋषिवर का समग्र जीवन समाज सुधारक का प्रतिनिधित्व करता है। तो उनकी ग्रन्थ सम्पदा एक समाज वैज्ञानिक को प्रस्थापित करती है। सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में नयी क्रान्ति लाकर विश्वमानव के सर्वाधिक उत्थान के लिए वे अहर्निश प्रयत्नशील रहे। एक दृष्टि से वे १९ वीं शताब्दी के उन्नायक रहे हैं।

ऋषिवर की समाज वैज्ञनिकता को विश्लेषित करने के पूर्व विज्ञान की चर्चा करना आवश्यक लगता है। जो विषय ज्ञान निरीक्षण से प्राप्त होता है, उसके अध्ययन को विज्ञान के नाम से अभिहित किया जाता है। अत: विज्ञान में विषयानुरूप विशिष्ट पद्धति से ही प्राप्त होता है, इसे वैज्ञानिक पद्धति कहते हैं। मानवीय जीवन में घटित तथा घटती हुई तथ्यशों का अध्ययन यह मन्तव्य विज्ञान का विषय रहा है। इस विज्ञान में जीवन के विभिन्न आयामों से जुड़े ज्ञान निहित हैं जैसे समाजविज्ञान, राजनीतिविज्ञान, अर्थविज्ञान, मनोविज्ञान, नीतिविज्ञान आदि।

मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति यह है कि वह सम्मिलित रूप में संगठित होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो-अपने ही जैसे समाज में विचरण करने की मनुष्य की प्रवृत्ति समाज को जन्म देती है। जब समाज जीवन का तर्कनिष्ट और वस्तुनिष्ट वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन किया जाता है तब समाज विद्वान अस्तित्व में आता है। व्यक्ति-व्यक्ति का सम्बन्ध, व्यक्ति का समाज से सम्बन्ध, समूह-समूह के बीच के सम्बन्ध को विश्लेषित करने वाला जो विद्वान है, वह समाज विद्वान है, वह समाज विद्वान कहलाता है। मनुष्य के विभिन्न व्यापारों के सम्बन्ध विवरणों को अभिव्यक्त करने वाला यह समाज विद्वान है, वह समाज विद्वान कहलाता है। मनुष्य के विभिन्न व्यापारों के सम्बन्धित विवरणों को अभिव्यक्त करने वाला यह समाज विद्वान है। समाज विद्वान की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार है।

महर्षि स्वामीदयानन्द ने तत्कालीन समाज जीवन को काफी नजदीक से देखा था। समाज एक संगठन सूत्र से बंधा नहीं था, उसमें बिखराव

ही अधिक था। धार्मिक रुढ़ियाँ, प्रथाएं रुढ़िमूलक हुई थीं। समाज गतिशीलता को खो चुका था।

आर्यजाति का गौरव समाज से लुप्त था और पनपने लगी थीं बुराईयाँ, मूर्खतापूर्ण रीति रिवाज, पुरातन सड़ी गली प्रथाएं। समाज में विषमता शोषण अत्याचार, अन्याय का बोलबोला था। समाज में बालविवाह अनमेल विवाह प्रचलित थे।

विधवाएं नारकीय जीवन जीने के लिए विवश थीं। जन्मगत जाति प्रथा से समाज बटा हुआ था। ऐसे भटके हुए समाज को सच्ची दिशा दिखलाकर आदर्श समाज की पुनः स्थापना करना यह उस समय के समाज की आवश्यकता थी। ऋषिवर दयानन्द समाज के चिन्तक, अन्वेषक, समाज वैज्ञानिक के रूप में समाज में विचरण करते रहे। वेद पर आधारित अपने विचारों को समाज के सम्मुख रखते रहे। महर्षि ने अपने जीवन काल में छोटे-बड़े ३० ग्रन्थों की रचना की। सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, भ्रान्ति निवारण, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु, सत्यधर्म, विचार आदि महान और अद्‌भुत ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त समय-समय पर दिये उनके प्रवचन, व्याख्यान, शास्त्रार्थ भी हैं। ऋषिवर ने आर्यसमाज संस्था के जो दस नियम निर्धारित किये हैं। विशेषतः ६,४,६,२,१० नियमों का केन्द्रबिन्दु मनुष्य सत्यासत्य को जाने, सत्य को ग्रहण करे, असत्य को परित्याग करे। सत्याचरण के बिना मनुष्य जाति की उन्नति असम्भव है। ऋषिवर के इस सामाजिक चिन्तन को सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में देखा जा सकता है। ऋषिवर की दृष्टि में मनुष्य वही है जो मननशील होकर स्वात्मवत हो। अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। सत्यार्थ प्रकाश व्यष्टि के समुन्नयन में समाज एवम् राष्ट्र का समुन्नयन निहित है। इस तत्व को स्वीकार कर विश्व सुख और शान्ति से सम्पन्न हो राकता है। आदर्श समाज, राष्ट्र, विश्व के सम्बन्ध में ऋषिवर का यह चिन्तन रहा है। ऋषिवर ने अनेक मंत्रों के आधार पर मनुष्यों को कौन सी इच्छा करनी चाहिए। मनुष्य क्या करें, क्या न करें मनुष्य के कर्तव्यों को विश्लेषित किया है।

स्वामीदयानन्द प्राचीन शिक्षा प्रणाली के हिमायती थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्राचीन शिक्षा प्राणाली में चरित्र निर्माण, समाजधर्म, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य परायणता आदि मूलभूत जीवन सिद्धान्त सन्निहित है। बालक भावी समाज का अहम् आधार है, इसीलिए बालकों को उचित शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश-द्वितीय समुल्लास-बालशिक्षा विषय)।

ऋषिवर ने अपने ग्रन्थों के माध्यम से प्राचीन से चली आ रही 'वर्णाश्रम्' व्यस्था का महत्व विषद् किया है। आश्रम व्यवस्था में ही समग्र समाज का सुख और विकास निहित है। श्रमविभाजन पर आधारित 'वर्णव्यवस्था' एक समाजिक व्यवस्था है। यह निरूपण ऋषिवर ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-अध्याय २८,३०,३१,३२, उपदेश मंजरी (पुणेंनगरी में दिए हुए व्याख्यानों का संग्रह-तृतीय व्याख्यान। मानव की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु तक भिन्न भिन्न समय में संस्कारों की व्यवस्था प्राचीन ऋषिमुनियों ने की है। उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए, ऋषिवर ने जीवन की उन्नति के लिए संस्कारों की महत्ता विषद् की है। वेदादि शास्त्रों से अनभिज्ञ स्वार्थी मनुष्यों ने संस्कारों के सम्बन्ध में मिथ्या ग्रन्थों की रचना की है। उनका खण्डन कर लोगों को संस्कारों की महत्ता बोधित करने के लिए उन्होंने 'संस्कार विधि' ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में नाम के अनुरुप विभिन्न अवसर पर किये जाने वाले संस्कारों की विधि भी विश्लेषित की है। पुणें के सातवें व्याख्यान भाग-2 संस्कार (उपदेश मंजरी व्याख्यानों का संग्रह) में ऋषिवर ने संस्कार शब्द का अर्थ स्पष्ट किया है। "किसी द्रव्य को उत्तम स्थिति में लाना इसका नाम संस्कार है। उनकी दृष्टि में संस्कार भारतीय जीवन का एक स्थित्यंतर है। शरीर और आत्मा सुंसस्कृत होने से धर्म, काम, मोक्ष, इन पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। और सन्तान

अत्यन्त योग्य होते हैं। अत: संस्कारों को करना सब मनुष्यों को उचित है। शारीरिक दृष्टि से मनुष्य-मनुष्य ही दीखता है। पर संस्कारित होने से मनुष्य-मनुष्य बन जाता है। मनुष्य जब तक मनुष्य बन नहीं जाता तब तक अच्छे और निष्काम कर्म करना असम्भव हो जाता है। ऋषिवर भारतीय समाज के अन्तरंग तक पहुंचे थे। मनुष्य का समूह ही समाज नहीं है, अपितु राष्ट्र से भी मनुष्य जुड़ा हुआ है। उनके इस चिन्तन में समाज की व्यापकता का दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। राष्ट्र की रक्षा हर मनुष्य का कर्तव्य है। राष्ट्र के विकास में प्रजा और राजा का पारस्परिक सहयोग, विद्यार्यसभा, धर्मोचार्यसभा, राज्यसभा, के माध्यम से राष्ट्र की तत्कालीन समस्याओं को प्रासंगिकता के सन्दर्भ में देखते हैं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ऋषिवर ने वेदों के धर्म विषयक तत्वों की चर्चा की है। मनुष्य का अपना एक धर्म होता है-सत्य ही धर्म है असत्य ही अधर्म है। सत्य का आचरण करना ही धर्म है। जो सत्य है, वही विश्वास का मूल है। धर्म ही मनुष्य, समाज और राष्ट्र का नियंत्रक और संरक्षक है।

ऋषिवर ने समाज की यथार्थता को राष्ट्रीय जन जागृति के सन्दर्भ में देखा है। उनकी दृष्टि में समूचे समाज में एकात्मभाव ही देशभक्ति का सूचक है। ऋषिवर की देशभक्ति 'सुसराज्य' की अपेक्षा स्वराज्य में देखी जा सकती है। उनकी मान्मता है कि विदेशियों के सुराज्य की अपेक्षा देश की स्वाधीनता महत्वपूर्ण है। वे मनुष्य, समाज, देश की स्वाधीनता में विश्वास रखते हैं। वे ईश्वर से प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा स्वराज्य सदा बढ़े, अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों, हम लोग कभी पराधीन न हों (आर्याभिविनय)। उन्होंने अपने देश को स्वर्णभूमि कहा है। यह स्वर्गभूमि देशवासियों के आलस्य, प्रमाद, पारस्परिक कलह, द्वेष, मत्सर के कारण स्वाधीनता (राष्ट्र भूमि न रही)सत्यार्थप्रकाश-एकादश समुल्लास) प्राचीन सामाजिक प्रबन्ध बिगड़ने पर देश की दुर्दशा की ओर भारतीय समाज का ध्यान वे आकर्षित करते हैं (उपदेश-मंजरी १२ वां व्याख्यान) आर्यजगत के विलुप्त गौरव को पुन: प्राप्त करने का ध्येय ऋषिवर का रहा है। ऋषिवर के स्वराज्य चिन्तन में समाज विज्ञान के तत्व निश्चित ही निहीत हैं-व तत्व हैं मनुष्य अकेला रहता नहीं है, उसके लिए उसका अपना समूह समाज तथा देश भी महत्वपूर्ण है। देश की स्वाधीनता समाज की स्वाधीनता। मनुष्य सामाजिक समुदायों के साथ व्यापक स्तरपर स्थापित कर समाज और राष्ट्र को उन्नत बनाए।

हर किसी काल समय या अपना समय होता है, साथ ही समस्याएँ भी होती हैं। समस्याओं की गहराई तक पहुँचकर उसके निदान की प्रक्रिया भी चलती रहती है। इस चलती प्रक्रिया के कारण होते हैं समाजचिन्तक और समाजवैज्ञानिक। ऋषिवर ने अपने प्रारम्भिक काल में ही, अपने भ्रमण में इन समस्याओं का निरीक्षण किया था, अनुभव भी किया था। उन्हें भी सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा था। निडर होकर, वेदाधारित सत्य के सहारे समाज की रुग्णावस्था को दूर करने का उन्होंने भरपूर प्रयास किया। सामाजिक आन्तरिक प्रक्रिया को समझते हुए उन्होंने व्यक्ति और परिवार ऋषिवर अपने ग्रन्थों, प्रवचनों, व्याख्यानों माध्यम से समाज का पीड़ा के निवारण के लिए अन्त तक प्रयन्तशील रहे। वे सामाजिक बुराईयों पर निरन्तर प्रहार ही करने वाले नहीं थे, अपितु वे एक श्रेष्ठ और आदर्श विधान के पुरुस्कर्ता भी थे। उनका व्यक्तित्व और कृतत्व विभिन्न पहलुओं से भरा है। वे धर्म संशोधक धर्म व्याख्याता थे ही, इससे बढ़कर एक समाज संस्कारक, समाज वैज्ञानिक, सामाजिक क्रान्ति के उन्नायक थे। संसार का उपकार करना इस समाज का उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए। प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहे।

भोपले नगर ।।-भोपले इलायट शिवाजीनगर पुणें (महाराष्ट्र)

'हिन्दू विनाश परम्परा'

-डा॰ धर्मवीर

हिन्दू समाज के पास दो विचित्र विशेषतायें हैं। एक इसके पास प्राचीन शास्त्रों का आदर्श चिन्तन और दूसरा मध्यकालीन पाखण्ड और अन्धविश्वास भरा आचरण। हिन्दू समाज बातें शास्त्र की व हिन्दू आदर्शों की करता है-हिन्दू जीवन पद्धति है, हिन्दू सहअस्तित्व का सिद्धान्त है, हिन्दू सर्वमंगल का दर्शन है, हिन्दू विविधता उसकी विशेषता है आदि, यह समाज के जीवन की विडम्बना है। अपने अहिंसा के उपदेश में चींटी को मारना पाप समझता है परन्तु नरबलि इसका धर्म है। इस विचित्रता को समझने के लिए हमारे पास एक सटीक सन्दर्भ है-

नोआखली का हत्याकाण्ड-१९४६ में मुस्लिम लीग ने 'पाकिस्तान प्राप्त करने के लिए' Direct Action के नाम से देश-भर में हिंसात्मक आन्दोलन छेड़ा। सबसे भयंकर हत्याकाण्ड नोआखली (पूर्वी बंगाल) में हुआ। हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा गया, स्त्रियों का सतीत्व लूटा गया और न जाने कितनों को बलात् मुसलमान बनाया गया। डा॰ श्यामाप्रसाद मुखर्जी उस समय अखिल भारत हिन्दू महासभा के प्रधान थे। इस सारी समस्या पर विचार करने के लिए उन्होंने हिन्दू महासभा भवन में एक बैठक बुलाई। सनातनधर्मियों के प्रतिनिधि के रूप में, उसमें स्वामी करपात्रीजी उपस्थित थे आर्यसमाज की ओर से मैं डा॰ मुकर्जी ने विशेष रूप से दो प्रश्न प्रस्तुत किये-

१-बलात् मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को कैसे वापस लाया जाए।

२-हिन्दू महासभा के हाथों में शासन की बागडोर कैसे आये?

पहले प्रश्न के उत्तर में स्वामी करपात्रीजी ने कहा कि जो फिर से हिन्दू बनना चाहेगा, उसे एक पाव गौ का गोबर खाना होगा। अपनी बारी में मैंने कहा-जो यह कहे कि मैं हिन्दू हूँ, उसे हिन्दू मान लिया जाए। उसके लिए किसी प्रकार के संस्कार की आवश्यकता नहीं है। डा॰ मुकर्जी ने मेरी बात का समर्थन करते हुए आपबीती एक अत्यन्त मार्मिक घटना सुनाई। उन्होंने कहा कि जब मैं नोआखली गया तो मुझे एक बुढ़िया मिली। उसने मुझे बताया कि मुझे और मेरी तरह अन्य बहनों को इस प्रकार मुसलमान बनाया कि दो मौलवियों ने पगड़ी का एक-एक छोर पकड़ा और हमें तलवार का भय दिखाकर पगड़ी को हाथ से पकड़ने का आदेश दिया। डर के मारे हमने पगड़ी अपने हाथों में ले ली। मौलवियों ने कलमा पढ़ा और हमें मुसलमान मान लिया गया। परन्तु जिस समय वे कलमा पढ़ रहे थे, उस समय मैं मन-ही-मन राम-राम कर रही थी। मुझे बताओ, वह बुढ़िया मुसलमान कब हुई जो मैं उसे फिर से हिन्दू बनने के लिए एक पाव गोबर खाने के लिए कहूँ? मैं दीक्षित जी से पूरी तरह सहमत हूँ।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में करपात्रीजी ने कहा कि हम अपने धर्म में सरकारी हस्तक्षेप नहीं सहन कर सकते। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ३०-३५ करोड़ सनातनधर्मी हिन्दू महासभा को अपना मत देकर जिता सकते हैं, यदि आप यह विश्वास दिलाएँ कि आपकी सरकार हमारे धर्म में हस्तक्षेप नहीं करेगी अर्थात् ऐसे कानून नहीं बनाएगी जिनके अधीन छूतछात को अपराध माना जाएगा, बाल-विवाह बन्द होंगे और विधवा-विवाह को इजाजत होगी, मन्दिरों में हर किसी को जाने की छूट होगी, वर्णव्यवस्था को जन्म की बजाए कर्मों पर आश्रित माना जाएगा इत्यादि। डॉ॰ मुकर्जी ने कहा-तो हमें शासन करने की आवश्यकता ही क्या है, यदि हम हिन्दू जाति की रक्षा और उन्नति न कर सकें? (सन्दर्भ-पुस्तक खट्टी-मीठी यादें, लेखक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, पृष्ठ संख्या ५६-५७)

यह आचरण हिन्दुत्व का उदाहरण है जिसे हिन्दू सन्त-महन्त-शंकराचार्य मानते हैं। इतिहास साक्षी है आज के बंगलादेश के निर्माण का आधार

ऐसी ही घटना है। ढाका के नवाब की सेना में काम करने वाले पण्डित कालीचरण से नवाब की बेटी ने विवाह करने की इच्छा प्रकट की तो नवाब ने कालीचरण के सामने प्रस्ताव रखा वह चाहे तो बेटी को हिन्दू बना ले, चाहे तो स्वयं इस्लाम स्वीकार कर ले या मौत को स्वीकार कर ले। पण्डित कालीचरण ने अपने गांव के आसपास के, फिर पुरी के पण्डितों, बनारस, मथुरा, वृन्दावन तक के आचार्यों से नवाब की लड़की को हिन्दू बनाने का विधान पूछा। सबने उसका विरोध किया, अनादर किया और इस प्रकार धर्म परिवर्तन को शास्त्र विरुद्ध बताया। पं. कालीचरण ने नवाब को इस विवाह से इन्कार कर दिया तथा हिन्दू रहते हुए मरना स्वीकार किया परन्तु जिस दिन उसे मृत्युदण्ड दिया जाना था उस दिन नवाब की बेटी ने कालीचरण और जल्लाद के बीच खड़े होकर घोषणा कर दी कि कालीचरण को मारने वाले की तलवार पहले मुझ पर चलेगी तब कोई कालीचरण तक पहुंच सकेगा। इस दृश्य ने कालीचरण का हृदय परिवर्तित कर दिया और उसने इस्लाम स्वीकार करने का प्रस्ताव मान लिया। नवाब की बेटी से विवाह कर काले खाँ बन गया और नवाब ने उसकी इच्छा के अनुसार अपनी सेना की कमान उसके हाथ में सौंप दी, फिर उसने जो कत्लेआम किया और बिहार, उड़ीसा, बंगाल, बनारस और जौनपुर तक उसने धावा बोला। उसकी क्रूरता और निर्दयता ने उसका भंयकर नाम काला पहाड़ करा दिया। आज सारा बंगलादेश उसके धार्मिक प्रतिशोध का परिणाम है। इस घटना को उद्धृत करने का उद्देश्य है कि यह परम्परा आज भी हिन्दू समाज में उसके विनाश का कारण बनी हुई है। एक वर्ष में तीन ऐसे काण्ड चर्चा में आये जिनसे हिन्दू समाज के क्षरण का पता चलता है परन्तु हिन्दू समाज के पास इस क्षरण को रोकने का न कोई उपाय है न सोच। पहली घटना इलाहाबाद उच्च न्यायालय का कथन जो एक हिन्दू लड़की और मुस्लिम लड़के के प्रेम विवाह के प्रसंग में दिया गया है। न्यायालय ने अपनी टिप्पणी में कहा है कि प्रेम किसी का किसी से भी सम्भव और स्वभाविक है परन्तु एक ही सम्प्रदाय की लड़की और एक ही सम्प्रदाय के लड़के एक वर्ष में हजारों की संख्या में प्रेम में पड़कर विवाह कर लें यह चिन्ताजनक और अनुसंधान का विषय है। एक वर्ष की अवधि में हजारों प्रेम विवाह न्यायालय द्वारा कराये गये जिनमें सभी लड़के मुस्लिम थे और सभी लड़कियाँ हिन्दू, ऐसा कौन सा मंत्र है जिसमें यह चमत्कार सम्भव है। न्यायालय ने टिप्पणी कर दी इसलिए इसकी समाचार पत्र में चर्चा हो गई परन्तु यह कार्य रुका नहीं है मुस्लिम समुदाय इसे क्यों रोके, उसे रोकना भी नहीं चाहिए क्योंकि उसे जनसंख्या का लक्ष्य प्राप्त करना है। प्रश्न उठता है किस हिन्दू ने या हिन्दू संगठन ने इसके निराकरण के प्रयास किये या कोई कदम उठाया क्योंकि ऐसा करना हिन्दू के ध र्म शास्त्र में तो लिखा नहीं है।

दूसरी घटना को याद कीजिए जिसको लेकर संचार माध्यमों ने व्यक्ति स्वतन्त्रता के नाम पर बहुत शोर मचाया था। घटना भोपाल से सटे हुए बैरागढ़ कस्बे की है। यहां पर सिन्धी समुदाय के लोग अधिकांश में रहते हैं। व्यापारी और सम्पन्न हैं, यहां के लोगों का अकस्मात् ध्यान गया उनके परिवारों में से थोड़े समय के अन्दर पांच सौ से अधि क लड़कियों ने प्रेम विवाह किया और सभी लड़के मुस्लिम थे। इन सब लड़कों में ऐसा अनूठापन क्या था कि सारी सिंधी लड़कियाँ उनके पीछे चली गईं, ऐसा कदापि सम्भव नहीं है। जबतक इसे करने के पीछे कोई निश्चित विचार और योजना न हो। इसके प्रतिकार में सिंधी समुदाय ने केवल इतना किया कि अपनी लड़कियों पर अंकुश लगाया कि वे घर से बाहर न घूमें फिरें, इसको लेकर दूरदर्शन पर प्रदर्शन, विरोध, परिचर्चाओं का आयोजन कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा का नारा तो बुलन्द किया गया परन्तु इसके पीछे के कारणों तक जाने की परिचर्चा करना आयोजकों को आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

अभी जुलाई के प्रथम सप्ताह में हिन्दुस्तान टाइम्स में एक समाचार छपा जो बैंगलोर संस्करण के अनुसार इस प्रकार है-'सी.आई.डी. विल प्रोब हिन्दु मुस्लिम लव मेरेजिज' इस बड़ी खबर में बताया गया है कि महाराष्ट्र विधान सभा में भारतीय जनतापार्टी के दो सदस्यों एकनाथ खाडसे तथा

देवेन्द्र फडनवीस ने सरकार से मांग की है कि महाराष्ट्र के गांवों में बड़ी संख्या में मुस्लिम लड़कों द्वारा हिन्दू लड़कियों से प्रेम विवाह कर उन्हें मुसलमान बनाया जा रहा है तथा लड़कियों को खाड़ी के देशों में भी भेजा जा रहा है। महाराष्ट्र सरकार के गृह राज्यमंत्री नितिन राउत ने इस विषय की खबरे मिलने की बात स्वीकार करते हुए इस विषय में सी.आई. डी. जांच कराने की बात कही है। वहीं पर शरद पवार कोंग्रेस राज्यमंत्री आरिफ नसीमखान ने कहा कि कानून में ऐसा कोई प्रावधान नहीं जो दूसरे धर्म में शादी करने से रोकता हो वह केवल भाजपा का राजनीतिक प्रवाद है। दोनों मंत्री जैसा नाम से पता लगता है कि मुस्लिम हैं और उनका विचार ठीक है क्योंकि हिन्दू इतर सम्प्रदायों को उनके धार्मिक विचार उन्हें एक समूह में बांधते हैं अत: सारे देश में उनका आचरण भी उसी प्रकार का होता है परन्तु यहां हिन्दू किसका नाम है यह कहना ही कठिन है। जैन अपने को [illegible] नहीं मानता, बौद्ध स्वयं को हिन्दू नहीं कहना चाहते, सिक्ख अपने को हिन्दू कहने को तैयार नहीं। दलितों के संगठनों ने नारा दिया है हम हिन्दू नहीं फिर हिन्दुओं की यह दशा न हो तो क्या आश्चर्य है। आज सम्पूर्ण देश में महाविद्यालयों और विद्यालयों में इस प्रकार की स्थिति देखी जा सकती है, जहाँ हिन्दू लड़कियाँ इस प्रकार के षड़यन्त्र का शिकार बन रही हैं। अजमेर का दुराचार काण्ड वर्षों तक समाचार पत्रों में छाया रहा, जहां मुस्लिम लड़कों द्वारा अनेक हिन्दू लड़कियों को अपने चंगुल में फंसाकर उनका यौन शोषण किया गया। इसी प्रकार फिल्मों में काम करने वाले बहुत से मुस्लिम अभिनेताओं की पत्नियाँ तो हिन्दू हैं परन्तु इसके विपरीत तो होता दृष्टिगत नहीं होता। परन्तु हिन्दू समाज की ओर से इसके प्रतिकार के लिए कोई उपाय नहीं किया गया। हिन्दू किसी भी आपत्ति को सामूहिक नहीं मानता यह उसके संस्कार में है। वह भुक्ति से मुक्ति तक अकेले चलने में ही विश्वास करता है यही इसके विनाश का मुख्य कारण है। एक घटना से अपनी सामाजिक स्थिति को समझने में सहायता मिलेगी जो स्वामी विद्यानन्दजी ने अपनी उसी पुस्तक में लिखी है-

असगरी बेगम उर्फ शान्ति देवी-एक बार मैं मुम्बई में था। मुझे स्मरण आया कि शान्ति देवी तो यहीं कहीं बम्बई में रहती हैं। शान्तिदेवी का पहला नाम असगरी बेगम था। असगरी बेगम को शुद्ध करके शान्तिदेवी बनाया था स्वामी श्रद्धानन्द जी ने। इसी शुद्धि के कारण मुसलमान उनके जानी दुश्मन बन गये थे। उनकी दुश्मनी की परिणति स्वामी जी के बलिदान में हुई थी। मैं अपने एक परिचित के साथ श्रीमती शान्तिदेवी से भेंट करने उनके निवास स्थान पर गया। सामान्य शिष्टाचार के बाद उन्होंने आवाज लगाई-बेबी, अपने चाचाजी के लिये चाय ला। चाय आई। चाय लाने वाली बेबी किन्नी (किरण) को लक्ष्य करके मेरे साथी ने कहा-इसे तो आप जानते-पहचानते होंगे। मेरे 'नहीं' करने पर उन्होंने कहा-अरे! आप इसे नहीं जानते। ये १५० फिल्मों में काम कर चुकी प्रसिद्ध अभिनेत्री तबस्सुम है। तबस्सुम की शादी मेरठ के एक वैश्य परिवार में हुई, किन्तु उसकी बड़ी बहन के लिए हिन्दू लड़का नहीं मिला। १९७६ में श्रीमती शान्तिदेवी की मृत्यु हो गयी। जिस शान्तिदेवी की शुद्धि के कारण स्वामी श्रद्धानन्द को शहीद होना पड़ा, 'जनज्ञान' (२६ दिसम्बर १९७६) में प्रकाशित समाचार के अनुसार उसे कबर में दफनाया गया। अन्त्येष्टि संस्कार नहीं हो सका। क्योंकि बम्बई की किसी आर्यसमाज या आर्यसमाजी ने इसमें पुरुषार्थ नहीं किया। लाचार होकर उनकी पुत्री को शान्तिदेवी के मृतक शरीर को दफनाना ही पड़ा। (सन्दर्भ-पुस्तक खट्टी-मीठी यादें, लेखक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, पृष्ठ संख्या १३३-१३४) इस प्रकार हम घोषणा तो करते हैं हिन्दुत्व की महानता की, हिन्दू धर्म में स्त्रियों के गौरवपूर्ण स्थान की परन्तु समाज की दशा उसके खोखलेपन और ढ़ोंग को ही उजागर कर रही है। मनु ने कहा है जहां स्त्रियों की पूजा होती है वह स्वर्ग है जहां अपमान होता है वह नर्क है, हमें सोचना होगा आज हम कहां खड़े हैं। इन परिस्थितियं में देश में हिन्दू बहुमत कितने दिन बना रह सकता है

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्त तत्र देवता:।
यत्रै तास्तू न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया:॥

-दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर इब्राहिमपु

ज्वलन्त समस्या

-जोगिन्दर सिंह

मिलावट के खिलाफ जज्बा चाहिए

भारत के हर क्षेत्र में नकली माल का धंधा फल-फूल रहा है चाहे वह खाने-पाने की चीजें हों या दवाइयां। ऐसे कारोबारी असली ब्रांडों के रूतबे को नुकसान पहुंचाकर उनका बाजार हथिया रहे हैं और लोगों की सेहत बिगाड़ रहे हैं। चूंकि ये नकली माल के व्यापारी टैक्स नहीं चुकाते इसलिए सरकार को भी हानि होती है।

भोजन पानी हमारे शरीर का ईंधन है। अगर यह ईंधन ही मिलावटी हो तो इन्सान के शरीर का क्या हाल होगा, यह कल्पना करना चिन्ता से भर देता है। खाद्य पदार्थों में कोई घटिया चीज मिलाकर या उसमें मौजूद कोई कीमती चीज निकालकर बेचना मिलावट है और यह सब हमारे देश में आजकल धड़ल्ले से चल रहा है जबकि इसके खिलाफ हमारे देश में बहुत सख्त कानून मौजूद है। लेकिन, उसका कोई असर होता नहीं दिखाई देता। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि मिलावट का काम प्राचीन काल से सारे विश्व में चल रहा है। प्राचीन बेबीलोनिया में १७५० ईसा पूर्व हम्मूरबी कानून लागू था जिसके तहत शराबखानों को नियंत्रित किया जाता था। जो बीयर में पानी मिलाने के दोषी पाए जाते थे। उनके लिए मौत की सजा थी। सन् १४८४ में बावेरिया (जर्मनी) में यदि कोई व्यापारी मिलावटी जाफरान बेचते हुआ पकड़ा जाता तो उसे जिन्दा जला दिया जाता था। १५वीं-१६वीं सदी के जर्मनी में इतने भयंकर दंड विधान के बावजूद खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट बहुत जोरों पर थी। सन् १४५६ में न्यूरेमबर्ग में दो लोग वाइन में मिलावट करने के दोषी पाए गए तो उन्हें जिन्दा जला दिया गया। १६वीं सदी के साहित्य में पता चलता है कि जर्मनी में उस जमाने में अदरक में ईंट का चूरा, काली मिर्च में अस्वास्थ्यकर पदार्थ, माप-तौल में बेईमानी, नकली रंग, मसालों का वजन बढ़ाने के लिए उन्हें नम कोठरियों में रखने जैसे उपाय किए जाते थे।

काली मिर्च लगभग सभी देशों में सदियों से लोकप्रिय रही है। इसमें भी मिलावट की जाती थी, जैसे मटर का आटा, सरसों के छिलके और पपीते के बीज आदि। आज विज्ञान में हुई तरक्की से यह सम्भव हुआ कि मिलावट का पता लगाया जा सके। हमारे देश में हर राज्य में खाद्य मिलावट का कानून १९५४ से लागू है। अब यह राज्य सरकारों पर निर्भर है कि वे इस कानून को अमल में लाने में कितनी दिलचस्पी रखती हैं।

आमतौर पर स्वास्थ्य विभाग का जिम्मा होता है कि इसे लागू करे। लेकिन फिर भी हमारे देश में शायद ही कोई जगह हो जहां दुग्ध या दुग्ध उत्पाद या आटा-चावल और मसाले या फिर रेडी टू ईट खाद्य पदार्थों में मिलावट न होती हो।

अपराधी क्यों इतने आराम से ये सब कर लेते हैं? इसके पीछे सबसे बड़ा कारण मामलों के निपटारे में होने वाली देरी है। खाद्य मिलावट कानून के तहत किसी अपराधी को सजा मिलने में छह-सात साल लग जाती हैं। उदाहरण के लिए पंजाब के लुधियाना जिले में आटे में स्टार्च मिलाने का मामला सामने आया था। १८ सितम्बर २००२ में उस पर केस दर्ज किया गया और जनवरी २००८ में वह दोषी सिद्ध हुआ। उसके बाद भी सुप्रीम कोर्ट तक अपील करने का एक लंबा सिलसिला जारी है। जुलाई २००९ में वाराणसी नगर निगम ने नकली खाद्य पदार्थों की बिक्री

रोकने के लिए एक अभियान चलाया था और ५१ मामले पीएफए एक्ट के तहत दर्ज हुए। पकड़े गए ७५ प्रतिशत मामले दुग्ध उत्पादों के थे जिनमें खोया, मीठा, दही, क्रीम आदि शामिल थे। ये सभी मामले जांच और कानूनी प्रक्रिया के दौर से गुजर रहे हैं। देश का कोई भी हिस्सा हो, कोई भी प्रदेश हो आप पाएंगे कि मिलावट का कारोबार कोई छोटा-मोटा नहीं बल्कि बहुत बड़ा है। अक्टूबर २००८ में गाजियाबाद पुलिस ने २५०० मिलोग्राम नकली खोया एक ट्रैक्टर-ट्राली से बरामद किया था। यह नकली खोया उत्तर प्रदेश के मुरादनगर शहर से दिल्ली भेजा जा रहा था। एक हफ्ते पहले भी इसी शहर में पुलिस ने ५० टन नकली खोया पकड़ा था। अहमदाबाद में एक बच्चे की मौत हो गयी व १० अन्य बीमार पड़ गए। इसके बाद फ़ैक्टरी को सील कर दिया गया और सैम्पल प्रयोगशाला में जांच के लिए भेजे गए। इसी साल जून में आगरा पुलिस ने नकली घी बनाने की फैक्टरी से १२५ बड़े ड्रम, १५० टिन और ४ भट्ठियां बरामद कीं। यहां जानवरों की चर्बी को लोहे के बड़े-बड़े कड़ाहों में उबालकर घी बनाया जा रहा था, लेकिन कोई पकड़ा नहीं जा सका, क्योंकि पुलिस के मुताबिक छापे की खबर लीक हो गयी थी। इस घटना के बाद अगले महीने जुलाई २००९ में हरियाणा पुलिस ने १४०० किलोग्राम विभिन्न नकली दुग्ध उत्पाद पकड़े जिनमें चीज, घी, क्रीम में रसायन मिलाये जा रहे थे। वहां पर विभिन्न किस्म के रसायन मिले जैसे कि व्हाइटनर, कास्टिक सोडा, हाईड्रोन पैराक्साइड तथा ब्रांडेड दुग्ध उत्पादों के खाली पाउच। इन्हीं चीजों से मिलावट होती है। दिल्ली व मुंबई में मशहूर कोला व ब्रांडेड बोतलबंद पानी में बहुत ही खतरनाक कीटनाशक पाये जाने की रपटें तो महीनों तक चर्चा में रहीं। ये सभी रपटें एक स्वतंत्र एनजीओं सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायरमेंट द्वारा किए अध्ययन से सामने आयी थीं। अगस्त २००९ में मध्यप्रदेश के ग्वालियर में ५ कारोबारियों द्वारा घी में मिलावट करने पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून लगाया गया था। प्रदेश में शायद पहली बार इस कानून का ऐसा प्रयोग हुआ। इन आरोपियों का ग्वालियर में १०० करोड़ रुपये से भी ज्यादा का कारोबार चल रहा था। भारत के हर क्षेत्र में नकली माल का धंधा फल-फूल रहा है चाहे वह खाने-पीने की चीजें हों या दवाईयां। ऐसे कारोबारी असली ब्रांडों के रुतबे को नुकसान पहुंचाकर उनका बाजार हथिया रहे हैं और लोगों की सेहत बिगाड़ रहे हैं। चूंकि ये नकली माल के व्यापारी टैक्स नहीं चुकाते इसलिए सरकार को भी हानि होती है।

कुछ लोगों ने बताया कि अधिकारी सिर्फ होटलों और दुकानों पर छापे मारते हैं, वह भी तब-जब उनके मालिक रिश्वत देने से मना कर देते हैं। मिलावट के लिए किसी की कोई जवाबदेही तय नहीं की गई है और कार्रवाई नहीं करने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाती। इस स्थिति को ठीक करना होगा। अस्पतालों में मरीजों को दिया जाने वाला खाना, होटल रैस्तरांओं में परोसा जा रहा भोजन, रेलवे स्टेशनों पर मिलने वाली चीजें जिन्हें बड़ी संख्या में लोग खाते हैं सब ओर पॉइजनिंग का दैत्य लोगों को बीमार करने के लिए खड़ा है। यहां तक कि जन वितरण प्रणाली के तहत बिकने वाले चावल में भी मिलावट पाई गयी है। लोगों के मर जाने के बाद सैंपल लेना ऐसा है जैसे सांप निकल जाने पर लकीर पीटना। मिलावट के दोषियों को सजा देने के अलावा एक और काम करना चाहिए, वह यह कि कुल जानकारियां एकत्रित करनी चाहिए जैसे फूड-पॉइजनिंग के मामलों में अस्पतालों में कितना पैसा खर्च होता है, जो लोग बीमार पड़े उन्होंने कहां से खाने का सामान लिया, खाने में मिलावट कानून को लागू करने के लिये न सिर्फ ईमानदार प्रयास की जरूरत है बल्कि इसके लिए मिशनरी जज्बा भी होना चाहिए। केवल सोचने-विचारने, कानून बना देने, बड़े-बड़े बयान दे देने से यह काम नहीं सधेगा। युद्ध स्तर पर कानून को अमल में लाए बिना परिणाम नहीं मिलेंगे।

-लेखक सीबीआई के पूर्व निदेशक हैं।

घरेलू औषधियाँ

-मुन्ना कुमार शर्मा

जुकाम

१.- एक कप दूध में १ चम्मच हल्दी डालकर गर्म करें और फिर जरा सी शक्कर डालकर पिला दें। कैसा भी जुकाम हो शर्तिया लाभ होगा।

२.- लौंग ३ नग लेकर १०० ग्राम पानी में पकाएँ। जब आधा पानी रह जाए तब उतार लें और जरा-सा नमक डालकर पिला दें, जुकाम ठीक हो जाएगा।

खांसी

१.- २० ग्राम घी में १० ग्राम गुड़ मिलाकर खिलाने से सूखी खाँसी ठीक हो जाती है।

२.- गर्म दूध ४०० ग्राम में १०० ग्राम गरमागरम जलेबी डालकर खिलाने से सूखी खाँसी जड़ से नष्ट हो जाती है।

३.- दिन में ३-४ बार गुदा पर सरसों तेल चुपड़ने से हर प्रकार की खांसी दूर होती है।

मोटापा

१.- नींबू का रस २५ ग्राम लेकर २५० ग्राम पानी में मिलाएँ, फिर इसमें २० ग्राम शहद मिलाकर खूब गड्डमड्ड करके पिला दें। शरीर में चाहे कैसे भी चर्बी बढ़ गई हो, २-३ मास सेवन करने से चर्बी घट जाती है और शरीर सुडौल बन जाता है।

रक्तचाप

१.- सर्पगन्धा (असरौल बूटी) को कूट-पीस, कपड़छन करके रख लें। प्रतिदिन २-२ ग्राम दवा प्रातः सांय पानी से दें। अद्वितीय दवा है। सारा संसार इसका सिक्का मान चुका है।

२.- नंगे पैर फिरने वालों को ब्लडप्रैशर की शिकायत नहीं हो सकती। प्रतिदिन पांच-सात किलोमीटर घूमना हृदय एवं रक्तचाप के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

होंठ फटना

१.- नाभि में घी, आदि कोई चिकना पदार्थ लगाएँ, होठों का फटना और दर्द तुरन्त दूर होगा।

कान दर्द

१.- कान-दर्द हो, कान में पीप हो, कम सुनाई देता हो तो गेंदे के पत्तों का रस निकालकर २-३ बूँद कानों में डालें। दर्द में तुरन्त आराम व बहरेपन का सर्वश्रेष्ठ उपचार है।

अम्लपित्त

१.- बड़ी या छोटी हरड़ का चूर्ण ६ ग्राम शहद अथवा गुड़ ६ ग्राम में मिलाकर खिलाएँ, ऊपर से पानी पिलाएँ। इसके केवल तीन दिन के प्रयोग से ही अम्लपित्त रोग का नाश हो जाता है।

२.- शहद १२ ग्राम और नींबू रस ६ ग्राम मिलाकर चटाने से अम्लपित्त शान्त हो जाता है।

कब्ज

१.- त्रिफला, कालीहरड़, सनाय, गुलाब के फूल, मुनक्का (बीज निकाला हुआ), बादाम की गिरी, काला, दाना, बनफ्शा-सभी वस्तुएँ २५-२५ ग्राम लेकर कूटकर मिला लें। रात्रि में सोते समय ६ ग्राम दवा गर्म दूध के साथ फाँक लें। प्रातः दस्त खुलकर आ जाएगा। कुछ दिन तक निरन्तर सेवन करने से कब्ज रोग नष्ट हो जाएगा।

२.- प्रतिदिन १५-२० मुनक्के दूध में उबालकर खाएँ, फिर उसी दूध को पी लें। कब्ज को दूर करने का अद्भुत योग है।

३.- त्रिफला ५० ग्राम, गिरी बादाम ५० ग्राम, सौंफ ५० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, मिश्री ३० ग्राम लें। पहले त्रिफला, सौंफ, और सौंठ को बारीक कूटकर छान लें, तत्पश्चात् इसमें बादाम की गिरीऔर मिश्री मिलाकर कूट लें। रात्रि में सोते समय ६ ग्राम दवा दूध के साथ लें। कब्ज को दूर करने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ योग है। यह नुस्खा न तो आँतों में खुश्की पैदा करता है। और न कमजोरी लाता है, अपितु कब्ज दूर कर दिमाग को शक्ति प्रदान करता है।

एग्जिमा

१.- २५० ग्राम सरसों का तेल लोहे की कड़ाही में चढ़ाकर उसके नीचे अग्नि जलाएँ, जब तेल खूब उबलने लगे तब इसमें ५० ग्राम नीम की कोंपल डाल दें। कोंपलो को काली पड़ते ही कड़ाही को तुरन्त नीचे उतार लें अन्यथा तेल में आग लगकर तेल जल जाएगा। ठण्डा होने पर तेल को छानकर बोतल में भर लें। दिन में ३-४ बार एग्जिमा पर लगाएँ, कुछ ही दिन में एग्जिमा नष्ट हो जायेगा। एक वर्ष तक लगाते हरें तो फिर कभी रोग नहीं होगा। इससे सस्ता अन्य नुस्खा मिलना कठिन है। प्रयोग कीजिए और ऋषि-मुनियों के गुँण गाइए।

मधुमेह

१.- मेथी ६ ग्राम लेकर और दरकुचा करके (थोड़ा कूटकर) सायंकाल पानी भिगों दें। प्रात: इसे खूब घोटें और कपड़े में छानकर बिना मीठा मिलाये पिला दें। दो मास सेवन कराएँ। मर्ज बिल्कुल समाप्त हो जाता है।

२.- हल्दी बारीक पीसी हुई तीन ग्राम को १२ ग्राम में शहद में मिलाकर चाटने से प्रमेह और विशेष रूप में मधुमेह ठीक हो जाता है। दो-तीन मास सेवन करें।

निद्रानाश

१.- जरा-सा जायफल घी में घिसकर आँख की पलकों पर लगा दें, फौरन नींद आ जाएगी।

२.- तुलसी के ४०-५० पत्ते तकिये के नीचे रखकर सो जाएँ, निद्रा आ जाएगी।

३.- खाने का सोडा आधा ग्राम को जल के साथ सेवन करने से १५-२० मिनट में ही नींद आ जाती है।

दाँत दर्द

१.- दूध में घी मिलकार पिलाओ। दाँत दर्द तुरन्त दूर हो जायेगा।

२.- फिटकरी व लौंग सम्भाग पीसकर दाँतों पर मलें। दाढ़-दाँत दर्द के लिए रामबाण है।

परमपिता परमात्मा की अमर वाणी "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" द्वारा अपने गृह एवं पूजास्थल को आलोकित करें। अपने मित्र परिवारों को भेंट दें। "जनज्ञान मासिक" आपके परिवार को वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता के प्रेरक भावों और संस्कारों की ओर प्रेरित कर उसे स्वर्गोपम बनाने में सहायक सिद्ध होगा। वार्षिक शुल्क ११०/-रुपए है।

❋❋ ❋❋ ❋❋ ❋❋

प्रत्येक पावन पर्व एवं शुभ अवसर पर सहयोग का हाथ बढ़ाएं तथा अपनी पवित्र आय से अधिक से अधिक सहयोग राशि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

वेदप्रकाश सिंह	पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि	राकेश रानी
(अमरीका में संस्थान के प्रतिनिधि)	संरक्षक	अध्यक्ष
संपादक 'सौरभ' न्यूयार्क	दयानन्द संस्थान	दयानन्दसंस्थान
८०-१५, ४१ AVENU APARTMENT २४१	सहयोग मंडल	एवं सम्पादक "जनज्ञान"
NEWYORK ELMHURT	नई दिल्ली	नई दिल्ली

सहयोग राशि "दयानन्द संस्थान" नई दिल्ली-५ के नाम प्रेषित कीजिए :

लूट मची, खुशहाली छायी

एक धनी सेठ के सात बेटे थे। छः का विवाह हो चुका था। सातवीं बहू आयी, वह सत्संगी माँ बाप की बेटी थी। बचपन से ही सत्संग में जाने से सत्संग के सुसंस्कार उसमें गहरे उतरे हुए थे। छोटी बहू ने देखा कि घर का सारा काम तो नौकर चाकर करते हैं, जेठानियाँ केवल खाना बनाती हैं उसमें भी खटपट होती रहती है। बहू को सुसंस्कार मिले थे कि अपना काम स्वयं करना चाहिए और प्रेम से मिलजुलकर रहना चाहिए। अपना काम स्वयं करने से स्वास्थ्य बढ़िया रहता है।

उसने युक्ति खोज निकाली और सुबह जल्दी स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर पहले हीरसोई में जा बैठी। जेठानियों ने टोका लेकिन फिर उसने बड़े प्रेम से रसोई बनायी और सबको प्रेम से भोजन कराया। सभी बड़े तृप्त व प्रसन्न हुए।

दिन में सास छोटी बहू के पास जाकर बोली "बहू! तू सबसे छोटी है, तू रसोई क्यों बनाती है? तेरी छः जेठानियाँ हैं।"

बहूः "माँजी! कोई भूखा अतिथि घर आ जाय तो उसको आप भोजन क्यों कराते हो?"

"बहू! शास्त्रों में लिखा है कि अतिथि भगवान का स्वरूप होता है। भोजन कराने वाले को बड़ा पुण्य मिलता है।"

"माँजी! अतिथि को भोजन कराने से पुण्य होता है तो क्या घरवालों को भोजन कराने से पाप होता है? अतिथि में भगवान का स्वरूप हैतो घर के सभी लोग भी तो भगवान का स्वरूप हैं क्योंकि भगवान का निवास तो जीवमात्र में है। और माँजी! अन्न आपका, बर्तन आपके, सब चीजें आपकी हैं, मैं जरा-सी मेहनत करके सबमें भगवद्भाव रखके रसोई बनाकर खिलाने की थोड़ी-सी सेवा कर लूँ तो मुझे पुण्य होगा कि नहीं होगा? सब प्रेम से भोजन करके तृप्त होंगे, प्रसन्न होंगे तो कितना लाभ होगा! इसलिए माँजी! आप रसोई मुझे बनाने दो। कुछ मेहनत करूँगी तो स्वास्थ्य भी बढ़िया रहेगा।" सास ने सोचा कि "बहू बाता तो ठीक कहती है। हम इसको सबसे छोटी समझते हैं पर इसकी बुद्धि सबसे अच्छी है।"

दूसरे दिन सास बहुत जल्दी स्नान करके रसोई बनाने बैठ गयी। बहुओं ने देखा तो बोलीं: "माँजी"! आप परिश्रम क्यों करती हो?"

सास बोली: "तुम्हारी उम्र से मेरी उम्र ज्यादा है। मैं जल्दी मर जाऊँगी। मैं अभी पुण्य नहीं करूंगी तो फिर कब करूँगी?"

बहुएँ बोलीं: "माँजी! इसमें पुण्य क्या है? यह तो घर का काम है।"

सास बोलीं: "घर का काम करने से पाप होता है क्या? जब भूखे व्यक्तियों को, साधुओं को भोजन कराने से पुण्य होता है तो क्या घरवालों को भोजन कराने से पाप होता है? सभी में ईश्वर का वास है।"

सास की बातें सुनकर सब बहुओं को लगा कि 'इस बात का तो हमने कभी ख्याल ही नहीं किया। यह युक्ति बहुत बढ़िया है!' अब जो बहू पहले जग जाय वही रसोई बनाने बैठ जाय। पहले जो भाव था कि 'तू रसोई बना....' तो छः बारी बँधी थीं लेकिन अब 'मैं बनाऊँ, मैं बनाऊँ...' यह भाव हुआ तो आठ बारी बँध गयीं। दो और बढ़ गये सास और छोटी बहू। काम करने में 'तू कर, तू कर...'इससे काम बढ़ जाता है और आदमी कम हो जाते हैं पर 'मै करूँ, मैं करूँ...' इससे काम हलका हो जाता है और आदमी बढ़ जाते हैं।

छोटी बहू उत्साही थी, सोचा कि 'अब तो रोटी बनाने में चौथे दिन बारी आती है, और क्या किया जाय?' घर में गेहूँ पीसने शुरू कर दिये। मशीन की चक्की का आटा गरम-गरम बोरी में भर देने से जल जाता है, उसकी रोटी स्वादिष्ट नहीं होती लेकिन हाथ से पीसा गया आटा ठंडा और अधिक पौष्टिक होता है तथा उसकी रोटी भी स्वादिष्ट होती है। छोटी बहू ने गेहूँ पीसकर उसकी

रोटी बनायी तो सब कहने लगे कि 'आज तो रोटी का जायका बड़ा विलक्षण है!' सास बोली: "बहू! तू क्यों गेहूँ पीसती है? अपने पास पैसों की कमी नहीं है।" "माँजी! हाथ से गेहूँ पीसने से व्यायाम हो जाता है और बीमारी नहीं आती। दूसरा, रसोई बनाने से भी ज्यादा पुण्य गेहूँ पीसने का है।"

सास और जेठानियों ने जब सुना तो लगा कि बहू ठीक कहती है। उन्होंने अपने-अपने पतियों से कहा: घर में चक्की ले आओ, हम सब गेहूँ पीसेंगी।' रोजाना सभी जेठानियाँ चक्की में दो-ढाई सेर गेहूँ पीसने लगीं।

अब छोटी बहू ने देखा कि घर में जूठे बर्तन माँजने के लिए नौकरानी आती है। अपने जूठे बर्तन हमें स्वयं साफ करने चाहिएं क्योंकि सबमें ईश्वर है तो कोई हमारा जूठा क्यों साफ करे!

अगले दिन उसने सब बर्तन माँज दिये। सास बोली: "बहू! विचार तो कर, बर्तन माँजने से तेरा गहना घिस जायेगा, कपड़े खराब हो जायेंगे...।"

"माँजी! काम जितना छोटा, उतना ही उसका माहातम्य ज्यादा। पांडवों के यज्ञ में भगवान श्रीकृष्ण ने जूठी पत्तलें उठाने का काम किया था।"

दूसरे दिन सास बर्तन माँजने बैठ गयी। यह देख सब बहुओं ने बर्तन माँजने शुरू कर दिये।

घर में झाड़ू लगाने नौकर आता था। अब छोटी बहू ने सुबह जल्दी उठकर झाड़ू लगा दी। सास ने पूछा: "बहू! झाड़ू तूने लगायी है?"

"माँजी! 'रामायण' में आता है कि वन में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि रहते थे लेकिन भगवान उनकी कुटिया में न जाकर पहले शबरी रोज की कुटिया में गये। क्योंकि शबरीदोज रात में झाड़ू लगाती थी, का रास्ता साफ करती थी कि कहीं आते जाते ऋषि-मुनियों के पैरों में कंकड़ न चुभ जायें।"

सास ने देखा कि यह छोटी बहू तो सबको लूट लेगी क्योंकि यह सबका पुण्य अकेले ही ले लेती है। अब सास और सब बहुओं ने मिलके झाड़ू लगानी शुरु कर दी।

जिस घर में आपस में प्रेम होता है वहाँ लक्ष्मी बढ़ती है और जहाँ कलह होता है वहाँ निर्धनता आती है। सेठ का तो धन दिनोंदिन बढ़ने लगा। उसने घर की सब स्त्रियों के लिए गहने और कपड़े बनवा दिये। अब छोटी बहू ससुर से मिले गहने लेकर बड़ी जेठानी के पास गयी और बोली: "आपके बच्चे हैं, उनका विवाह करोगी तो गहने बनवाने पड़ेगे। मेरे तो अभी कोई बच्चा है नहीं। इसलिए इन गहनों को आप रख लीजिये।"

गहने जेठानी को देकर बहू ने कुछ पैसे और कपड़े नौकरों में बाँट दिये। सास ने देखा तो बोली: "बहू! यह तुम क्या करती हो? तेरे ससुर ने सबको गहने बनवाकर दिये हैं और तूने वे जेठानी को दे दिये और पैसे, कपड़े नौकरों में बाँट दिये!"

" माँजी! मैं अकेले इतना संग्रह करके क्या करूँगी? अपनी वस्तु किसी जरूरतमंद के काम आये तो आत्मिक संतोष मिलता है और दान करने का तो अमिट पुण्य होता ही है!"

सास को बहू की बात लग गयी। वह सेठ के पास जाकर बोली: "मैं नौकरों में धोती-साड़ी बाँटूँगी और आस-पास में जो गरीब परिवार रहते हैं उनके बच्चों की फीस में स्वयं भरूँगीं अपने पास कितना धन है, किसी के काम आये तो अच्छा है। न जाने कब मौत आ जाय और सब यहीं पड़ा रह जाय! जितना अपने हाथ से पुण्यकर्म हो जाय अच्छा है।"

सेठ बहुत प्रसन्न हुआ कि पहले नौकरों को कुछ देते थे तो लड़ पड़ती थी पर अब कहती है कि 'मैं खुद दूँगी।' सास दूसरों को वस्तुएँ देने लगी तो यह देखके दूसरी बहुएँ भी देने लगीं। नौकर भी खुश होके मन लगाके काम करने लगे और आस-पड़ोस में भी खुशहाली छा गयी। 'गीता' में आता है: **यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥** 'श्रेष्ठ मनुष्य जो-जो आचरण करता है, दूसरे मनुष्य वैसा-वैसा ही करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, दूसरे मनुष्य उसीके अनुसार आचरण करते हैं।' छोटी बहू ने जो आचरण किया उससे उसके घर का तो सुधार हुआ ही, साथ में पड़ोस पर भी अच्छा असर पड़ा, उनके घर भी सुधर गये। इस तरह बहू को सत्संग से मिली सूझबूझ ने उसके घर के साथ अनेक घरों को खुशहाल कर दिया!

।।ओ३म्।।

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह:एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" तथा अन्य वैदिक साहित्य अब तक ढाई लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने **गौ पालन और गौ-रक्षण** में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, वेदमन्दिर (इब्राहीमपुर) केशवनगर, दिल्ली-३६ में लगभग १५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा के अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। जो भी सहयोगी जन चारा-भूसा प्रदान करेंगे उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा। अत: आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है। यदि आप राजधानी से दूरस्थ स्थान के निवासी हैं तो गौओं हेतु अपने योगदान की राशि "दयानन्द संस्थान" के नाम ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को 'जनज्ञान' मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान
२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ल-५ फोन: ९८१०२५७२५४

समाचार-दर्शन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेल "आर्योपदेशिका सुदेश आर्या सम्मानित

प्रजाचक्षु गुरू विरजानन्द जी एवं स्वामी दयानन्द जी सरस्वती मधुर मिलन के १५० वर्ष पूरे होने पर दिनांक ६,७,८ नवम्बर को मथुरा नगरी में "अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन" आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन भारत गणराज्य की महामहिम राष्ट्रपति-"श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल" ने किया। विशिष्ट अतिथि-उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल "श्री बी.एन. जोशी" थे। दोनों ही महान् हस्तियों ने मुक्त कंठ से गद-गद होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा किये गये उपकारों, समाज-सुधार के कार्यों एवं आर्यसमाज की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर योगगुरु रामदेव द्वारा दिया गया उद्बोधन जनता ने बहुत सराहा। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के संयोजक समिति की ओर से, "वेदव्यास डी.ए.वी. विद्यालय विकासपुरी, नई दिल्ली एवं आर्यसमाज की "आर्योपदेशिका-श्रीमती सुदेश आर्या" को, उनकी कर्मठता, उत्कृष्ट समाज-सेवा, वैदिक धर्म की रक्षा तथा मूल्यपरक वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए "वैदिक संगीत प्रभाकर" उपाधि से भव्य समारोह में प्रशस्ति पत्र, शाल एवं स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य व्यक्तियों में आचार्य बलदेव जी महाराज, महाशय धर्मपाल, डॉ सोमदेव शास्त्री, डा॰ धर्मप्रकाश आर्य, श्री हरिशचन्द शास्त्री, आचार्य स्वदेश जी, वेगराज जी आर्य आदि विद्वान, आर्यनेता उपस्थित थे। मथुरा में यमुना तटपर बही वेद की गंगा । दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित चारों वेदों का हिन्दी भाष्य व अन्य वैदिक साहित्य को जनता ने खूब सराहा। और बड़ी संख्या में परिवारों में पहुंचा वैदिक साहित्य।

मुस्लिम युवती द्वारा वैदिक धर्म ग्रहण।

कोटा: आर्यसमाज रेलवे कालोनी कोटा-राज. के तत्वावधान में एक मुस्लिम युवती सुश्री हाजागिरा पुत्री श्री मोहम्मद आयु २५ वर्ष जि. हसन (कर्नाटक) ने स्वेच्छा से अपने परिवार की सहमति से वैदिक धर्म स्वीकार किया। पूर्ण वैदिक विधि अनुसार शुद्धि संस्कार करके उसका नाम आशाआर्या रखा गया। के उसका विवाह एक हिन्दू युवक संतोष पुत्र श्री एस. टी. छन्ना आयु २६ वर्ष कर्नाटक से पूर्ण वैदिक विधि अनुसार परिवार की सहमति से किया गया। विवाह आर्य समाज रेलवे कालोनी के पुरोहित एवम् मंत्री श्रीकरण सिंह आर्य ने सम्पन्न कराया। वर वधू को आशीर्वाद देने क लिये वधू के पिता श्री मोहम्मद बहन एवम् बहनोई एवम् आर्यसमाज रेलवे कालोनी के संरक्षक श्री शिवलाल जी सैनी, उपप्रधान श्री रामजीलाल शर्मा, श्रीमती कमला देवी, श्रीकरणसिंह आर्य, रामनारायण जी एवम् अन्य आर्य जन उपस्थित थे।

वैदिक धर्मार्थ दवाखाना का शुभारम्भ

रोजड़: वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन में एक धर्मार्थ दवाखाना का गुजरात प्रांतीय आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी अग्रवाल द्वारा दीप प्रागट्य कर शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट के संस्थापक प्रधान श्री धनजी भाई वेलाणी, डॉ रमेश आर्य, वानप्रस्थी साधक आश्रम के ट्रस्टी गणतथा अहमदाबाद से पधारे महानुभावों के साथ-साथ योग प्रशिक्षण शिविर में भाग ले रहे शिविरार्थी महानुभावों के साथ भी उपस्थित थे। वानप्रस्थ साधक आश्रम के प्रबंधक न्यासी पू. आचार्य श्री ज्ञानेश्वर आर्य ने कहा कि देश विदेश से आने वाले महानुभाव यहां आने से पूर्व अनेक बार पूछते थे कि वानप्रस्थ आश्रम में

आकर के यदि बीमार पड़ गये तो कोई चिकित्सक तथा चिकित्सा की व्यवस्था होगी कि नहीं, अब तक तो मुझे इसका उत्तर देते नहीं बनता था। डॉ रमेश आर्य का परीक्षण करने के बाद यह निर्णय हुआ कि अब दवाखाना खोल सकते हैं। श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने कहा कि वानप्रस्थ साधक आश्रम के इस पवित्र प्रांगण में योग व वैदिक ज्ञान की गंगा सतत बहती रही है अब इसके साथ चिकित्सा सेवा का त्रिवेणी संगम भी देखने को मिलेगा। स्वामी विवेकानन्द जी ने उद्‌बोधन देते हुए इस परोपकारी कार्य के आरम्भ करने हेतु सबको धन्यवाद व आशीर्वाद दिया। समग्र कार्यक्रम का संचालन अहमदाबाद के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यनारायण जी जुईवाला द्वारा किया गया।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

रोजड़: पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में ८ दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें देश के १०-१२ प्रान्तों से पधारे लगभग ३०० (पुरुष-महिला) शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में यम-नियम, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक-वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर-समर्पण, स्व-स्वामी सम्बन्ध (ममत्व) को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर मार्गदर्शन तथा शंका-समाधान किया गया तथा योगदर्शन के सूत्रों व मुण्डकोपनिषद् के कुछ अंशों का अध्यापन तथा व्यक्तिगत उपासना, व्यायाम-आस(सामूहिक), क्रियात्मक-योग-प्रशिक्षण, वेदप्रवचन, ज्ञान-कर्म-उपासना, योग में विघ्न, विवेक-वैराग्य के श्लोकों व संध्या और यज्ञ के मन्त्रों का उच्चारण व अर्थ, आत्मनिरीक्षण आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, स्वामीविवेकानन्द परिव्राजक, ब्र. प्रशान्त जी दर्शनाचार्य, ब्र. दिनेशकुमार, ब्र. अरुणकुमार आर्यवीर, ब्र. ईश्वरानन्द जी, श्री चन्द्रेश जी आर्य आदि विद्वानों ने अनेक विषयों से सम्बन्धित कक्षाएं लीं।

पटेल जयंती समारोह

नई दिल्ली, सरदार वल्लभभाई पटेल की १३४वीं जन्म जयंतीपर देशवासियों ने स्मरण किया। दिल्ली के देसराज परिसर' में आयोजित समारोह में वक्ताओं ने कहा कि परिदृश्य में उभर रही चुनौतियों से निपटने के लिए सरदार पटेल जैसे फौलादी संकल्प की जरूरत है। नागरिक परिषद् दिल्ली, सरदार वल्लभाई पटेल स्मारक ट्रस्ट, चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट और आश्रय के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित यह समारोह मध्यरात्रि तक चला। राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता अरुणजेतली ने कहा कि सरदार का कृतित्व कीर्ति का मोहताज नहीं। राष्ट्रीय एकजुटता को निरन्तर मजबूती देना उनके प्रति उपयुक्त श्रद्धांजलि होगी। पत्रकार वेदप्रताप वैदिक ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा, सरदार न होते तो जैसा देश हमें मिला है, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे। नेहरू के शासन को स्थिरता उन्हीं के कारण मिली। दक्षिण एशिया को एक महादेश बनाने का खाका प्रस्तुत करते हुए डा० वैदिक ने कहा कि विश्व में स्थिरता लाने के लिए यह प्रयास जरूरी है। इसके लिए भारत को पहल करनी होगी। श्री वीरेश प्रताप चौधरी ने बताया कि मोरारजी देसाई ने सरदार वल्लभभाई पटेल ट्रस्ट की स्थापना सरदार के कृतित्व को प्रकाश में लाने के लिए की थी। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन इस आयोजन की विशेषता थी, जो सोम ठाकुर की हिन्दी वन्दना से आरम्भ हुआ। वरिष्ठ कवि, पूर्व सांसद् बेकल उत्साही ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। सफल संचालन से कवि सम्मेलन को बुलंदी पर पहुंचाया डा० गोविन्द व्यास ने। गुरु राक्सेना ने सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित हास्य-व्यंग्य की गम्भीर रचना पढ़ी। नूतन कपूर का सुमधुर स्वर वातावरण में गूंजा। डा० कीर्ति काले का नारी मन की व्यथा व्यक्त करने वाला गीत ध्यान से सुना गया। शैलजा दुबे प्रथम बार कवि सम्मेलन के मंच पर आईं। गजेन्द्र सोलंकी ने गुजरात और राजस्थान की धरती को नमन करते हुए रचना पढ़ी। विनीत चौहान वीर रस की कविताओं से छा गए। लालकवि बैरागी खूब जमे और लालकिले के कवि सम्मेलनों की याद ताजा कर दी।

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी। इस समय व्यय लगभग तीन लाख रुपए होगा। एक कुटिया १५ × १२ फुट की, पीछे शौचालय और स्नानागर ५ × ७ फुट, रसोई ७ × ७ फुट की, आगे बरामदा १२ × ७ फुट। प्रत्येक कुटिया अपने आप में पूर्ण इकाई है। वेदमंदिर में यज्ञशाला, सत्संग भवन, कार्यालय आदि के निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि १००/-, ५००/-, १०००/- रुपये अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके धनराशि ''दयानन्द संस्थान'' के नाम भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

२. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

३. परमात्मा की अमरवाणी ''चारों वेदों का हिन्दीभाष्य'' मूल्य २०००/-रु. अभी १५००/-रु. में प्राप्त करें। अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में वेदभाष्य पहुंचायें। डाक से मंगाने पर १८०/-रुपये अधिक लगेंगे।

४. बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३६०० रु. अभी २५०० में। डाक से मंगाने पर २००/-रु अधिक लगेंगे।

५. विगत चवालीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक ''जनज्ञान'' के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क ११०/- रुपये है। पन्द्रह सौ रुपये में जीवन भर जनज्ञान भेजा जायेगा, साथ ही अभी दो सौ रुपये का वैदिक साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

६. प्रतिमास ''जनज्ञान'' की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ ८०/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा ''जनज्ञान'' मासिक में विज्ञापन देकर हमारे ''राष्ट्र जागृति अभियान'' में सहयोग प्रदान करें।

७. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची ''जनज्ञान मासिक'' में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

अध्यक्ष--दयानन्द संस्थान

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	2000 रु.
2.	सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	100 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	100 रु.
5.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	15 रु.
6.	धरती का स्वर्ग	15 रु.
7.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	60 रु.
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	15 रु.
9.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	15 रु.
10.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
11.	वैदिक सम्पत्ति	200 रु.
12.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	15 रु.
13.	योग और ब्रह्मचर्य	15 रु.
14.	गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह)	20 रु.
15.	Inside the Congress	60 रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
17.	History of the assassins	60 रु.
18.	Concept of God	60 रु.
19.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
20.	Light of Truth	250 रु.
21.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	15 रु.
22.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	60 रु.
23.	संक्षिप्त महाभारत	80 रु.
24.	संक्षिप्त रामायण	20 रु.
25.	ऋग्वेद शतकम	10 रु.
26.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
27.	सत्संग पद्धति	10 रु.
28.	वैदिक सान्ध्य गीत	15 रु.
29.	A Short Life Story of Swami Dayanand	30 रु.
30.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पन्नी लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	4 रु.
31.	बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार	300 रु.
32.	ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में)	150 रु.
33.	अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि	200 रु.
34.	अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि	100 रु.
35.	मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर	10.00 रु.
36.	वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय	5.00 रु.
37.	भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	30.00 रु.
38.	बाल सत्यार्थ प्रकाश	60.00 रु.
39.	मां गायत्री	2.00 रु.
40.	स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	2.00 रु.
41.	विश्व को वेद का संदेश	3.00 रु.
42.	विश्व को आर्यसमाज का संदेश	3.00 रु.
43.	Great Gayatri	2.00 रु.

१०० रु. से अधिक धार्मिक साहित्य पर १५ प्रतिशत ३०० रु. से अधिक लेने पर २० प्रतिशत तथा ५०० रु. से अधिक लेने पर २५ प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	3.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षु:	2.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? -वेदभिक्षु:	2.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं-सावरकर	2.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? -राकेश रानी	2.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ -जहीर नियाजी	2.00 रु.
7.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ	2.00 रु.
8.	इस्लाम-एक परिचय	2.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षु:	2.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11.	बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	2.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	2.00 रु.
14.	बाइबल कसौटी पर	4.00 रु.
15.	Bible in the Balence	3.00 रु.
16.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	2.00 रु.
17.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	2.00 रु.
18.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	2.00 रु.
19.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	2.00 रु.
20.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की १००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और ५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक-दयानन्द संस्थान

२२८६-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-५

पूज्या माँ पंडिता राकेश रानी के अमृत महोत्सव (75वां जन्म दिवस) के उपलक्ष्य में तीन अनमोल रत्नों की भेंट

मूल्य– मात्र 50 रू.

मूल्य– मात्र 40 रू.

मूल्य– मात्र 10 रू.

धर्म, अध्यात्म, राजनीति, समाज, संस्कृति, दर्शन, राष्ट्र रक्षा, हिन्दुत्व, आर्य समाज आदि विषयों पर सुप्रसिद्ध आर्यनेत्री, दयानंद संस्थान की अध्यक्षा, आर्यजगत की पहली पत्रकार व 'जन ज्ञान' की प्रकाशक संपादिका, वैदिक–आर्ष साहित्य की सबसे बडी प्रकाशक की अपनी लेखनी से...

जनज्ञान (मासिक)
२२८६, आर्यसमाज मार्ग
करौलबाग, नई दिल्ली-५

मार्गशीर्ष-पौष
सम्वत्-२०६६
दिसम्बर, सन्-२००९

Delhi Postal No. DL (C)-01/1114/09-011
R.N. 10719/65
Posted at N.D. PSO on
Date 5&6 of December 2009

Serving SINCE 1921

फरन्टीयर ®

The ✓ Taste of Leadership

HANDMADE EGGLESS BISCUITS

बाँटिए खुशियाँ फरन्टीयर के संग

खुशियाँ आपकी, साथ फरन्टीयर का

काजू-पिस्ता बिस्कुट | अजवाइन कुकीज़ | चॉको-चिप कुकीज़ | मिक्स्ड बिस्कुट

फरन्टीयर के क्वालिटी प्रोडक्ट्स केवल फरन्टीयर शॉपिंग ज़ोन्स पर ही उपलब्ध है:-

पूर्वी दिल्ली : ◆कृष्णा नगर ◆लक्ष्मी नगर V3S Mall पश्चिमी दिल्ली ◆जनकपुरी ◆नारायना विहार ◆पश्चिम विहार (ज्वाला हेड़ी मार्किट) ◆पश्चिम विहार (A-6/1), ◆पंजाबी बाग एक्सटेंशन ◆शालीमार गार्डन ◆टैगोर गार्डन ◆विकास पुरी ◆वेस्ट पटेल नगर ◆द्वारका ◆रमेश नगर ◆ओल्ड राजेन्द्र नगर (शंकर रोड) उत्तरी दिल्ली ◆अशोक विहार ◆आजाद नगर ◆बिजवासन कैम्प ◆पीतमपुरा टावर-III ◆रोहिणी (Sector-7) ◆शालीमार बाग ◆रोहिणी: (Sector-6) ◆प्रशांत विहार ◆वजीरपुर दक्षिणी दिल्ली ◆मालवीय नगर ◆सरिता विहार ◆साउथ एक्स-II सेन्ट्रल दिल्ली ◆बरोल बाग ◆पहाड़ गंज ◆सदर बाजार हरियाणा : ◆बहादुरगढ़ ◆करनाल ◆फरीदाबाद : पार्श्वनाथ सिटी मॉल (Sector-12)

www.frontierbiscuit.com • 'FRONTIER' is a Registered Trademark of FRONTIER BISCUIT FACTORY PVT. LTD.